बाइबल के प्रश्न-उत्तर

लेखक
जे. सी. चोट

अनुवादक
फ्रांसिस डेविड

Published by

CHURCH OF CHRIST
Box 4398
New Delhi-110019

BIBLE
QUESTIONS AND ANSWERS

By

J.C. Choate

Hindi Translation By

Francis David

Published by

CHURCH OF CHRIST
Box 4398
New Delhi-110019
E-mail: vinay_david2002@yahoo.co.in
davidfrancis53@rediffmail.com

Published by
CHURCH OF CHRIST
Box 4398
New Delhi-110019
E-mail: vinay_david2002@yahoo.co.in
davidfrancis53@rediffmail.com

Printed at
Simran Print House, New Delhi.

परिचय

आप जो कहना चाहते हैं उस बात को कैसे कहना चाहिए? मैं जानता हूं कि आप अपनी बात को इस प्रकार से कहना चाहेंगे ताकि सुनने वाला या पढ़ने वाला आपकी बात को समझ सके। आप कुछ सत्य की बातों को इस तरीके से बताना चाहेंगे ताकि समझने वाला शौक से उन्हें समझ सके। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रश्नों को लेकर उनके उत्तर देना एक बहुत अच्छा और सरल तरीका है जिसके द्वारा हम दूसरों को समझा सकते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में मैंने कुछ ऐसे ही किया है। बाइबल के कुछ विषयों को लेकर तथा उनसे संबंधित प्रश्नों को लेकर मैंने प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके मन में भी कुछ इसी प्रकार के प्रश्न होंगे और इस अध्ययन के द्वारा उनका उत्तर आपको मिलेगा।

इस बात को ध्यान में रखिये कि बाइबल के प्रश्नों के उत्तर बाइबल से ही दिये गये हैं। याद रखिये, जब हम बाइबल से उत्तर देते हैं तब हमारी व्यक्तिगत राय व्यर्थ होती है। आज बहुत से लोग यह कहते हैं कि मेरा अपना विचार ऐसा है जबकि इसके विपरीत हमें यह कहना चाहिए कि बाइबल इस प्रकार से कहती है। हमें यह जानना चाहिये कि परमेश्वर का वचन बाइबल सत्य है और सत्य कभी भी अपना विरोध नहीं करता। सत्य आपको तमाम अनुचित शिक्षाओं से स्वतंत्र करेगा। मेरी आपसे बिनती है कि इस पुस्तक का अध्ययन बड़ी ईमानदारी से करिये। यदि आप सोचते हैं कि यह बातें सत्य पर आधारित हैं तब इन्हें सच्चे मन से मानिये। परमेश्वर आपको आशिष दे जबकि आप इस पुस्तक का अध्ययन करते हैं।

जे. सी. चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली–110019

भूमिका

प्रत्येक वो व्यक्ति जिससे हम बाइबल का अध्ययन करना चाहते हैं, अक्सर कुछ प्रश्नों को हमसे पूछता है। बाइबल अध्ययन करते समय प्रश्नों तथा उनके उत्तरों का महत्व इसलिये बढ़ जाता है क्योंकि इससे हमारे मनों के कई संदेह दूर हो जाते हैं। कई बार लोग बाइबल का अध्ययन नहीं करते तथा इसका परिणाम यह होता है कि वे झूठी शिक्षाओं द्वारा इधर–उधर घूमाए जाते हैं। (इफि. 4:14)।

इस पुस्तक के लेखक भाई चोट अब हमारे बीच में नहीं है परन्तु जिस प्रकार से उन्होंने बाइबल के प्रश्नों के उत्तरों को दिया है, वो बहुत ही प्रशंसनिय है। प्रभु के लिये उन्होंने अपने परिश्रम को जो दिया तथा अपना पूरा जीवन उसकी सेवा में लगाया उसके लिये हम परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं।

अपने पाठकों से मेरा निवेदन है कि जब आप इस पुस्तक को पढ़ते है तब इसे बाइबल की रोशनी में पढ़ें क्योंकि बाइबल के प्रकाश द्वारा ही आपके बहुत से संदेह दूर हो जाएंगे। यदि आप ऐसा करेंगे तथा इस पुस्तक का पूरा लाभ उठाना चाहते हैं तब इसे ध्यान से पढ़ें। आज अधिकतर लोगों के मनों में मसीह और उसकी शिक्षा के विषय में बहुत सारी अनुचित धारणाएं भरी हुई हैं। मित्रों इन अनुचित शिक्षाओं को अपने मनों से आप निकाल दें। मेरी आशा है कि जब आप इस पुस्तक को बाइबल के प्रकाश में पढ़ेंगे तब आपके कई प्रश्नों का उत्तर आपको मिल जायेगा।

फ्रांसिस डेविड

प्रचारक

मसीह की कलीसिया

अनुक्रम

	परिचय	5
	भूमिका	6
1	परमेश्वर	9
2	यीशु मसीह	14
3	पवित्र आत्मा	19
4	बाइबल	25
5	पाप	31
6	अधिकार	37
7	सुसमाचार	43
8	विश्वास	49
9	बपतिस्मा	54
10	कलीसिया	59
11	कलीसिया का संगठन	64
12	नाम	68
13	एकता	73
14	स्वर्ग का मार्ग	79
15	उपासना	84
16	आराधना का दिन	89

17	कलीसिया में संगीत	94
18	प्रार्थना	99
19	प्रभु-भोज	104
20	चन्दा देना	109
21	मसीही जीवन	114
22	विवाह	119
23	विश्वास से गिर जाना	124
24	झूठी शिक्षा	129
25	संसारिकता	134
26	इसके बाद	139

पाठ 1 | परमेश्वर

अपने इस पाठ के द्वारा हम परमेश्वर के विषय में कुछ प्रश्नों के उत्तरों को देखेंगे। इसके लिये हम बाइबल में से देखेंगे तथा हमारी आशा है कि आप इन बातों के विषय में गंभीरता से विचार करेंगे।

सबसे प्रथम, हम यह देखना चाहेंगे कि परमेश्वर कौन है? उसका स्वभाव क्या है? वह कहां से आया है? प्रभु यीशु ने हमें बताया है कि वह आत्मा है। वह कहता है कि ''परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें'' (यूहन्ना 4:24)। इसका अर्थ यह हुआ कि वह शारीरिक रूप से कोई मनुष्य नहीं है अथवा उसका कोई शारीरिक रूप नहीं है। यूहन्ना इस प्रकार से लिखता है, ''परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा, यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है।'' (1 यूहन्ना 4:24)। परमेश्वर के विषय में हम पढ़ते हैं कि वह आदि से है, अर्थात सृष्टि की रचना के आरम्भ से ही विद्यमान है। वह सृष्टि की रचना का एक अंग नहीं था, परन्तु वो वह है जिसने सारी वस्तुओं की रचना की है। बाइबल में हम पढ़ते हैं उत्पत्ति 1:1 ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।'' अर्थात न तो उसका कोई आरम्भ है और न ही अन्त है। वह आरम्भ से है और सदाकाल तक रहेगा। वह अनन्त है। ईश्वरीय है। वह शक्तिशाली है। सब कुछ जानता है, सब कुछ देखता है। भजन का लेखक दाऊद इस प्रकार कहता है ''हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक हमारे लिये धाम बना है। इससे पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है।'' (भजन 48:14)।

दूसरी बात हम यह देखते हैं, कि क्या संसार में एक से अधिक ईश्वर हैं? पवित्रशास्त्र हमें बार-बार यह बताता है कि केवल एक ही

परमेश्वर है, और वह विद्यमान है। प्रेरित पौलुस उसके विषय में इस प्रकार से कहता है...... "और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सबके ऊपर और सबके मध्य में, और सब, में है।" (इफिसियों 4:6)। जब परमेश्वर ने मूसा को दस आज्ञाएं दी थीं, तब उसने यह कहा था कि "मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया है। तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में व पृथ्वी पर व पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों और परपोतों को भी' पितरों का दण्ड दिया करता हूं, और जो मुझ से प्रेम रखते हैं और मेरी आज्ञाओं को मानते है।, उन हजारों पर करूणा किया करता हूं।" (निर्गमन 20:2, 6)। कई वर्षो पश्चात जब पौलुस अथेने शहर में गया तो वहां उसने लोगों से इस प्रकार से कहा, "हे अथेने के लोगों मैं देखता हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो। क्योंकि मैं फिरते हुए, तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई जिस पर लिखा था, कि **"अनजाने ईश्वर के लिये"** सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं। जिस परमेश्वर ने पृथ्वी ओर उस की सब वस्तुओं को बनाया है, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है। उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं, और उनके ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बांधा है कि वे परमेश्वर को ढूंढें, कदाचित उसे टटोलकर पा जाएं तो भी वह हम में किसी से दूर नहीं। क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है कि हम तो उसी के वंश भी हैं।' सो परमेश्वर

का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं, कि ईश्वरत्व, सोने या रूप या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हो।'' (प्रेरितों 17:22-29)। हां इस संसार में मनुष्यों द्वारा बनाये हुये बहुत से ईश्वर हैं। उनके कई रूप वा आकार है। अनेकों लोग प्रकृति तथा अन्य वस्तुओं की उपासना करते हैं। परन्तु यह ऐसी वस्तुएं हैं जो अपने समयनुसार समाप्त हो जायेंगी क्योंकि उनमें जीवन नहीं है। वे सुन नहीं सकती और न ही वे मनुष्य का उद्धार कर सकती हैं। इसलिये हमें ऐसी वस्तुओं की उपासना नहीं करनी चाहिये। केवल एक ही जीवता परमेश्वर है, वह सच्चा है तथा उसने हम सब को बनाया है। वह जीवता परमेश्वर हमें आशीषित करता है तथा हमारा उद्धार करता है। केवल उसी में हमारी आशा है।

तीसरी महत्वपूर्ण बात हम यह जानना चाहेंगे कि क्या परमेश्वर विद्यमान है? दो ऐसी बातें है जिन्हें देखकर हमें यह विश्वास होता है कि परमेश्वर वास्तव में विद्यमान है। सबसे प्रथम हम यह देखते हैं कि हमारे चारों ओर की सृष्टि कितनी अदभुत है तथा इसके लिये आप स्वयं अपने जीवन को भी देख सकते हैं। जरा सोचिये कि किस अदभुत और विचित्र तरह से हमारी रचना की गई है। प्रेरित पौलुस उन लोगों से बातचीत करते हुए जिन्होंने परमेश्वर में विश्वास नहीं किया था तथा उसका तिरस्कार किया था, कहता है: ''परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाये रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों से प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ्य, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में निरूत्तर हैं। (रोमियों 1:18:20)

दूसरी बात यह है कि परमेश्वर ने अपनी इच्छा को बाइबल के द्वारा हम पर प्रगट किया है। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक इस प्रकार से कहता है: ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करके, इन

दिनों के अंत में हम से पुत्र' के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया है और उसी के द्वारा उसने सृष्टि रची है।'' (इब्रानियों 1:1-2)। पौलूस फिर से लिखते हुए कहता है, ''और तुम्हें जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा, वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। (1 थिस्स 1:7-9)। हमें इस बात को जानना चाहिए कि प्रभु दो प्रकार के लोगों को दण्ड देने आ रहा है, एक तो वे हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते तथा दूसरे वे हैं जिन्होंने सुसमाचार को नहीं माना है। सबको यह जानना चाहिये कि परमेश्वर आरम्भ से ही विद्यमान है। यदि कोई परमेश्वर में विश्वास करता है, तब उसको परमेश्वर की इच्छा को जानने का प्रयत्न करना चाहिये, और ऐसा वह उसके वचन बाइबल को पढ़कर कर सकता है, इसके द्वारा उसको सुसमाचार के विषय में पता चलेगा तथा यह भी किस प्रकार से कोई सुसमाचार का पालन करके उद्धार पा सकता है। यदि कोई सुसमाचार को जानते हुये भी इसको नहीं मानता तब प्रभु उसको दण्डित करेगा। यदि वह परमेश्वर में विश्वास करता है, सुसमाचार के विषय में सीखता है तथा उसका पालन करता है तब प्रभु ने यह प्रतिज्ञा की है कि उसका उद्धार करेगा तथा उसके पास अनन्त जीवन की आशा होगी। (मरकुस 16:16)।

चौथी बात हम यह देखते है कि परमेश्वर की और क्या-क्या वास्तविकतायें हैं? सबसे पहले हम यह देखते हैं कि वह प्रेम है। यूहन्ना इसके विषय में लिखते हुए कहता है, ''जो कोई प्रेम नहीं रखता है, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। (1 यूहन्ना 4:8)। एक और स्थान पर यूहन्ना इस प्रकार से कहता है ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में

इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।'' (यूहन्ना 3:16-17)। अब जबकि परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है तथा उसने अपना प्रेम मनुष्य के प्रति दिखाया है, तब प्रश्न यह उठता है कि वह मनुष्य से किस प्रकार के प्रेम की आशा करता है? यीशु ने इस प्रकार से कहा था कि ''तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख'' (मत्ती 22:37)। परन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम करता है तब वह क्या करेगा? परमेश्वर का पुत्र यीशु कहता है, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे'' (यूहन्ना 14:15)।

इस पाठ को समाप्त करते हुए हम यह कहना चाहेंगे कि परमेश्वर विद्यमान है, केवल एक ईश्वर है, हमें उसमें विश्वास करना चाहिये, उसकी आज्ञा माननी चाहिये, उसकी सेवा करनी चाहिये, जब हम ऐसा करेंगे तब परमेश्वर हमारा उद्धार करेगा। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक इस प्रकार से कहता है, ''और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिये, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।'' यदि वास्तव में हमारा प्रेम उसके प्रति सच्चा है, और यदि हम उसमें विश्वास करते हैं, तो हम अपने पापों से पश्चाताप करेंगे, उसके पुत्र यीशु का अंगीकार करेंगे, तथा बपतिस्मा लेंगे, ताकि हमें हमारे पापों से क्षमा प्राप्त हो सके और हम प्रभु की कलीसिया अथवा मण्डली में मिलाये जायें। (प्रेरितों 17:30; रोमियों 10:10; प्रेरितों 2:38, 47)।

पाठ 2 | यीशु मसीह

बाइबल से जुड़े हुये अनेक प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं। अपने इस पाठ में हम यीशु से सम्बंधित कुछ प्रश्नों को देखेंगे।

सबसे प्रथम हम यह देखना चाहेंगे कि परमेश्वर का यीशु के साथ क्या सम्बंध है? क्या यीशु की सृष्टि परमेश्वर ने की है? वह किस प्रकार से परमेश्वर का पुत्र हो सकता है? पवित्रशास्त्र हमें यह बताता है कि यीशु आरम्भ से ही परमेश्वर के साथ था, तथा उसने स्वयं इस सृष्टि की रचना करने में भाग लिया था। हम पढ़ते हैं, "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की" (उत्पत्ति 1:1)। हमें यह भी जानना चाहिये कि परमेश्वर शब्द जो इब्रानी भाषा में इस्तेमाल हुआ है उसमें परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र तथा परमेश्वर पवित्र आत्मा शामिल हैं। इन तीनों का वर्णन हमें मत्ती 28:19, 20 पदों में तथा इफिसियों 4:4-6 में मिलता है तथा और भी अध्याय हैं जो इसके विषय में हमें बताते हैं। इनको ईश्वरत्व भी कहा गया है (प्रेरितों 17:29; रोमियों 1:20; कुलुस्सियों 2:9)। परन्तु इसका अर्थ क्या यह हुआ कि हम तीन अलग-अलग परमेश्वरों की बात कर रहे हैं? कदापि नहीं। ईश्वरत्व में तीन व्यक्तित्व हैं, परन्तु वे एक हैं।

परन्तु जब हम सृष्टि की रचना को देखते है यानि जब परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की थी, तब परमेश्वर ने कहा था: "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं ....।" (उत्पत्ति 1:26)। यहां हम एक विशेष बात यह देखते हैं कि परमेश्वर ने कहा था "हम बनाएं" कौन था परमेश्वर के साथ? जैसा कि पहले ही हमने देखा कि वे यीशु तथा पवित्र आत्मा थे। यीशु के विषय में हम देखते हैं तथा इस प्रकार से पढ़ते हैं "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं

हुई।" (यूहन्ना 1:1–3) प्रेरित पौलूस लिखते हुए उसके विषय में यह कहता है कि "वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।" (कुलुस्सियों 1:15–17)। यही सच्चाई हमें इब्रानियों 1:1–2 में भी मिलती है।

नहीं, प्रभु यीशु परमेश्वर द्वारा सृजा नहीं गया था। यदि वह सृजा जाता तो वह किसी भी साधारण मनुष्य की तरह होता, तथा एक साधारण मनुष्य होते हुए वह संसार के पापों के लिये नहीं मर सकता था, क्योंकि एक मनुष्य होते हुए स्वयं भी उसे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता होती। परन्तु हम यह देखना चाहेंगे कि किस प्रकार से यीशु परमेश्वर का पुत्र है? इस बात को हम भली–भांति जानते हैं कि परमेश्वर शारीरिक नहीं है तथा यीशु किसी शारीरिक सम्बंध से उत्पन्न नहीं हुआ था। बल्कि यीशु आरंभ से ही परमेश्वर के साथ था, परमेश्वर तथा पवित्र आत्मा की समानता में था इसलिये वह ईश्वरीय था। पौलुस ने इस बात को इस प्रकार से समझाया है: "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वंश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।" इस पद से तथा बाइबल में और अन्य अध्यायों से हम यह देखते हैं कि प्रभु यीशु आरम्भ से परमेश्वर के साथ था, परन्तु जब मनुष्य ने पाप किया तथा

उसे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता पड़ी तब प्रभु यीशु ही था जिसने अपने आप को दीन किया और वह इस पापमय संसार में आना चाहता था ताकि एक स्त्री के द्वारा जन्म लेकर, मनुष्य की समानता में होकर लोगों के बीच में रहे। मनुष्य की ही तरह उसकी परीक्षा हो सके और फिर इस संसार के पापों का भार लेकर वह क्रूस पर बलिदान हो सके। प्रभु यीशु के जन्म की कहानी में हम देखते हैं कि जब मरियम ने यह प्रश्न पूछा कि किस प्रकार से यह सम्भव होगा कि वह यीशु को जन्म देगी क्योंकि उसका सम्बंध किसी पुरुष से नहीं है, तब हम इस प्रकार से वचन में पढ़ते हैं: ''स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परम प्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।'' (लूका 1:3, 5)। जिस प्रकार से उसका जन्म हुआ था, इसीलिए उसको परमेश्वर का पुत्र कहा गया था।

दूसरी बात, हम यीशु के आने के विषय में देखते हैं। यीशु किस प्रकार से इस संसार में आया इसके विषय में हम आरम्भ से देखना चाहेंगे। जब मनुष्य ने पाप किया और पाप के परिणाम भी उस पर प्रकट कर दिये गये, तब परमेश्वर ने सर्प अर्थात शैतान से यह कहा:

''और मैं तेरे और उस स्त्री के बीच में और तेरे वंश और उसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।'' (उत्पत्ति 3:15)।

बाइबल के विद्वान भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि यह सबसे प्रथम बात थी जो यीशु के इस संसार में आने का संकेत करती थी। ऐसा होने पर शैतान यीशु की एड़ी को डसेगा अर्थात वह उसके कार्य में बाधा डालेगा, परन्तु यीशु उसके सिर को कुचल डालेगा। भविष्यवक्ताओं ने भी यीशु के आने के विषय में बहुत कुछ कहा था। वास्तव में उन्होंने उसके जनम के विषय में भविष्वाणी की थी कि उसका जनम कहां होगा, उसका कार्य, उसकी मृत्यु, उसका गाड़े जाना, उसका जी उठना तथा और भी कई बातों का वर्णन किया है। यदि आपके पास बाइबल है तो यशायाह के 53 अध्याय को पढ़िये।

यशायाह के सात अध्याय के 14वें पद में हम यीशु के जन्म के

विषय का वर्णन देखते हैं। यहां इस प्रकार से लिखा है, ‘‘इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानूएल रखेगी।’’ यह भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब कुंवारी मरियम ने मत्ती 1:20, 21 तथा लूका 1 और 2 के अनुसार अदभुत तरह से बैतलेहम में यीशु को जन्म दिया। क्योंकि उसका जन्म पवित्र आत्मा की सामर्थ से हुआ था, इसीलिए उसका कोई सांसारिक पिता नहीं था। यह एक और ऐसा प्रमाण है जिससे हमें पता चलता है कि वह मनुष्य से कई अधिक ऊंचे स्तर पर था, और यह इसलिए क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र था।

तीसरी बात हम यह जानना चाहेंगे, कि प्रभु यीशु को क्रूस पर क्यों मरना पड़ा? पौलुस के द्वारा हमें यह पता चलता है कि हम सब पापी हैं (रोमियों 3:23) तथा यह भी कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा (रोमियों 5:8)। दूसरे शब्दों में, जब मनुष्य अपने आप को बचाने में असहाय था, तब उसे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता थी। यीशु जो निष्पाप था (इब्रानियों 4:15), इस योग्य हुआ कि वह अपना लहु बहा सके ताकि हमें हमारे पापों से क्षमा मिल सके।’’ (1 कुरि. 15:3)। पौलूस ने कहा था, ‘‘क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।’’ (रोमियों 6:23)। पतरस ने इस प्रकार से लिखा था, ‘‘और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न ही उसके मुंह से छल की कोई बात निकली वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथों में सौंपता था। वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिए मर करके धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं, उसी के मार खाने से तुम चंगें हुए। क्योंकि तुम पहले भटकी हुई भेड़ों की नाई थे पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास फिर आ गए हो। (1 पतरस 2:22-25)। यूहन्ना हमें इस प्रकार से बताता है: ‘‘पर यदि जैसा वह

ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। (1 यूहन्ना 1:7)।

चौथी बात हम यह देखना चाहते हैं कि किस प्रकार से यह संभव हो सकता है कि किसी एक व्यक्ति की मृत्यु द्वारा कोई उद्धार पा सके। यह इसीलिए संभव हो सका क्योंकि मसीह एक साधारण मनुष्य नहीं था। वह परमेश्वर का पुत्र था, निष्पाप था, तथा क्रूस पर मरने के पश्चात वह गाड़ा गया तथा कब्र से जी उठा ताकि अपने पिता के पास वापस जाकर उसके दाहिने हाथ बैठे, क्योंकि वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का पभु है और मनुष्य का उद्धारकर्ता है। (1 कुरि. 15:1-4; प्रेरितों 2)।

पांचवीं बात यह है कि किस प्रकार से मनुष्य उद्धार पा सकता है या उसे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए। उसे यह विश्वास करना चाहिए कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, यीशु ने कहा था, "इसीलिये मैंने तुम से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे।" (यूहन्ना 8:24)। फिर उसे अपने पापों से पश्चाताप करना चाहिए अथवा तमाम बुराईयों से अपना मन फिराना चाहिए। यीशु ने कहा था या तो मन फिराओ या फिर नाश हो। (लूका 13:3) तब हमसे यह भी कहा गया है कि हम दूसरों के सामने यह अंगीकार करें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र हैं और प्रभु यीशु ने स्वयं कहा था "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा" (मत्ती 10:30)। फिर अन्त में उसे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है। यीशु ने कहा था, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:16)। जब कोई भी इन बातों को करता है तब प्रभु उसका उद्धार करके उसे अपनी कलीसिया में मिला देता है (प्रेरितों 2:47)। क्या आप यीशु में विश्वास करते हैं? क्या आप उसकी आज्ञा को मानेंगे? मेरी आशा है कि आप ऐसा करेंगे।

पाठ 3 | पवित्र आत्मा

बाइबल के इस पाठ में हम पवित्र आत्मा के विषय में देखेंगे। कुछ ऐसे प्रश्नों को हम देखना चाहेंगे जिनका संबंध पवित्र आत्मा से है। अनेक लोगों के मनों में इस विषय पर बहुत-सी गलत धारणाएं हैं। इस पाठ के द्वारा मैं यह प्रयत्न करूंगा कि पवित्र आत्मा के विषय में जो अनुचित धारणाएं हैं उन्हें दूर कर सकूं।

आइये अपनी बाइबल में से देखें कि पवित्र शास्त्र इस विषय पर क्या कहता है। सबसे पहिले हम यह जानना चाहेंगे कि पवित्र आत्मा को हम किस नज़रिये से देखते हैं अथवा इसके विषय में हमारे क्या विचार हैं?

पवित्र आत्मा को हमें साधारण रूप से नहीं लेना चाहिये। इसे हमें इस प्रकार से भी नहीं देखना चाहिये कि यह कोई प्रेत या विचित्र-सी आकृति है।

यह बात सत्य है कि अंग्रेजी की 'किंग जेम्स' अनुवादित बाइबल में इसे "होली घोष्ट" कहकर सम्बोधित किया गया है, और इसी से लोगों ने एक विचार बना लिया है कि वह कोई पिशाच या प्रेत है। इसे परमेश्वर तथा यीशु की समानता में दिखाया गया है, क्योंकि वह ईश्वरीय है और इसीलिये उसे पवित्र आत्मा कहा गया है। (इफि. 4:30; 1 तीमु. 4:8)।

हमें यह याद रखना चाहिए कि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है, जिसे अक्सर ईश्वरत्व में तीसरे व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। यीशु ने कहा था, "इसलिये तुम जाकर पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो (मत्ती 28:19)। हम इफिसियों 4:4-6 में भी पढ़ते हैं कि एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा है। क्योंकि इसका संबंध पिता परमेश्वर से तथा यीशु अर्थात

पुत्र से है, इसलिये इन्हें परमेश्वर के वचन में ईश्वरत्व बोला गया है। और उसका वर्णन हम प्रेरितों 17:29 रोमियों 1:20 तथा कुलुस्सियों 2:9 में पढ़ते हैं।''

दूसरी बात, हम यह जानना चाहते हैं कि पवित्र आत्मा परमेश्वर पिता तथा यीशु मसीह जो पुत्र है एक दूसरे के साथ मिलकर किस प्रकार से कार्य करते हैं? इस पूरे दृश्य को जानने के लिये कि किस प्रकार से परमेश्वर और यीशु मिलकर कार्य करते हैं, हमें वापस सृष्टि की रचना की ओर जाना पढ़ेगा, क्योंकि तब भी परमेश्वर, यीशु तथा पवित्र आत्मा एक साथ विद्यमान थे, यह तीनों अपने स्वभाव में अनन्त है। सृष्टि की रचना में पवित्र आत्मा भी शामिल था (उत्पत्ति 1:1, 2)। यहां इस प्रकार से लिखा है, ''और पृथ्वी बेडोल और सुनसान पड़ी थीं, और गहरे जल के ऊपर अंधियारा था, तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था (भजन संहिता 139:7) में लेखक कहता है, मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं? वा तेरे सामने से किधर भागूं? अन्त के दिनों में परमेश्वर के लोगों पर पवित्र आत्मा का भेजा जाना था और योएल भविष्यदूकता ने इस प्रकार से कहा था कि ''उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उंण्डेलूंगा, तुम्हारे बेटे-बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वपन देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूंगा। यह भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब प्रेरितों 2 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि पवित्र आत्मा प्रेरितों के ऊपर उण्डेला गया तथा वे जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया था उन्होंने पवित्र आत्मा का दान पाया। तीसरी बात हम यह देखना चाहते हैं कि जब यीशु का जन्म हुआ था तब पवित्र आत्मा ने किस प्रकार का कार्य किया था? इसको देखने के लिये हम पवित्र शास्त्र की ओर जाएंगे। पवित्र शास्त्र कहता है कि ''यीशु का जन्म इस प्रकार से हुआ कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी युसूफ के साथ हो गई, तो उनके इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। सो उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था उसे

चुपके से त्याग देने की मनसा की। जब वह इन बातों के विषय में सोच ही रहा था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वपन में दिखाई देकर कहने लगा; है युसूफ दाऊद की संतान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। (मत्ती 1:18-20)। लूका भी इस बात का वर्णन करते हुए इस प्रकार से कहता है, ‘‘हे मरियम, भयभीत न हो क्योंकि परमेश्वर के अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा; और परम प्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा। और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।’’ मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं। स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परम प्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा (लूका 1:30-35)। हम देखते हैं कि यह सब इस प्रकार से ही हुआ।

चौथी बात हम यह देखते हैं कि यीशु के जन्म के पश्चात पवित्र आत्मा ने किस प्रकार से कार्य किया? सबसे पहिले हम यीशु के बपतिस्में के विषय में देखते है। ‘‘उस समय यीशु गलील के यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है? यीशु ने उसको यह उत्तर दिया कि अब तो ऐसा ही होने दे क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, तब उसने उसकी बात मान ली। और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाई उतरते और अपने ऊपर आते देखा’’ (मत्ती 3:13-16)।’’

पांचवी बात हम यह देखना चाहेंगे, कि प्रभु यीशु ने पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा किससे की थी? प्रभु यीशु ने पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की

प्रतिज्ञा की थी। (मत्ती 3:11)। एक बार उसने इस प्रकार से कहा था, "मैं तुमसे सच करता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कोई-कोई ऐसे हैं, जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे।" सामर्थ का अर्थ यहां पवित्र आत्मा से है। यूहन्ना 15:26, 27 में यीशु ने अपने चेलों से प्रतिज्ञा करते हुए यह कहाथा, "परन्तु जब वह सहायक आएगा जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा। और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो। यीशु ने कहा था कि सहायक या पवित्र आत्मा उसके जाने के बाद उन पर आएगा। अर्थात् उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के पश्चात जब वह वापस अपने पिता के पास स्वर्ग में चला जाएगा (यूहन्ना 16:7-13)।"

छठवीं बात यह है कि प्रेरितों पर पवित्र आत्मा कब आया? स्वर्ग में जाने से पहिले प्रभु यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा था, "और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उस को तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो" (लूका 24:49)। उसने फिर से उनसे कहा, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे" (प्रेरितों 1:8)। अब हम जब प्रेरितों 2 अध्याय की ओर वापस जाते हैं तो हम देखते हैं योएल भविष्द्रक्ता की भविष्यवाणी पूरी होती है और किस प्रकार से यरूशलेम में प्रेरितों के ऊपर पवित्र आत्मा उण्डेला गया, अर्थात वे पूर्ण रूप से आत्मा से भर गए थे और वे सब बातें इस समय उन्हें याद आ रही थीं। जो यीशु ने स्वर्ग में जाने से पहिले उनसे कहीं थी। अब पवित्र आत्मा उनकी अगुवाई कर रहा था, वे अन्य भाषाएं बोल रहे थे तथा आश्चर्यक्रम करने के योग्य थे और अब वे लोगों को यह निश्चय दिला सकते थे कि उन्हें प्रचार करने के लिये परमेश्वर द्वारा भेजा गया है।

सातवीं बात हम यह देखते हैं कि क्या प्रेरितों के अतिरिक्त अन्य

लोगों को भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलता था? नहीं, क्योंकि पवित्र आत्मा के बपतिस्में की प्रतिज्ञा केवल प्रेरितों से की गई थी इसका अर्थ यह हुआ कि आज ऐसे लोग नहीं है जिन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला हो। कुछ चुने हुए लोगों पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे ताकि उन्हें अद्भुत कार्य करने की, पवित्र आत्मा की यह सामर्थ मिल सकें (प्रेरितों 6 तथा 8), परन्तु जिन पर हाथ रखे गये थे वे इस योग्य नहीं थे कि इस सामर्थ को अन्य लोगों को दे सकें, इसका अर्थ यह हुआ कि आज ऐसे लोग नहीं हैं जो प्रेरितों की तरह अद्भूत कार्य कर सकें और अन्य भाषाएं बोल सकें इत्यादि।

आठवीं बात यह है कि क्या, आज पवित्र आत्मा पाना संभव है? हां, वे सब जो सुसमाचार की आज्ञा का पालन करते हैं, अर्थात वे सब जो प्रभु में विश्वास करते हैं, अपने पापों से पश्चाताप करते हैं, यीशु को परमेश्वर का पुत्र जानकर उसका अंगीकार करते हैं तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेते हैं उन्हें पवित्रआत्मा का दान प्राप्त होता है। पतरस तथा प्रेरितों ने पिन्तेकुस्त के दिन उन लोगों से जिन्होंने विश्वास किया था यह कहा, "...मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों 2:39) परन्तु यह पवित्र आत्मा का दान अद्भुत कार्य करने के लिये नहीं था।

नवीं और आखिरी बात हम यह देखेंगे कि पवित्र आत्मा आज किस प्रकार से कार्य करता है? उसने पुराने व नये युगों में लोगों को चुना था ताकि वे परमेश्वर के वचन को लिख सकें, इसलिये हम देखते हैं कि आत्मा आज वचन के द्वारा कार्य करता है। जिस प्रकार से मैं पहिले भी कह चुका हूं, कि वे सब लोग जो प्रभु की आज्ञा मानते हैं, पवित्र आत्मा का दान प्राप्त करते हैं, परन्तु मैं फिर से दोहराना चाहूंगा, कि इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें आश्चर्यकर्म या अद्भुत कार्य करने की सामर्थ मिलती है। अद्भुत कार्य करने की शक्ति तब तक के लिये दी गई थी, जब तक कि लिखित रूप में वचन नहीं दिया गया था। अब जबकि हमारे पास सिद्ध वचन है हमें आज इस वचन को दृढ़ करने

के लिए अद्भुत कार्यों की आवश्यकता नहीं है और न ही इस बात की कि पवित्र आत्मा अद्भुत या चमत्कारी रूप से परमेश्वर के पास लाने में हमारी अगुवाई करे। आज पवित्र आत्मा यह सब कुछ अपने वचन के द्वारा करता है। यदि हम लिखे हुए वचन के अनुसार विश्वास नहीं करते तथा परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करते तो पवित्र आत्मा हमारी सहायता नहीं करेगा, क्योंकि वचन को अस्वीकार करना पवित्र आत्मा को अस्वीकार करना है।

पाठ 4 | बाइबल

सबसे पहिले हम यह देखना चाहेंगे कि बाइबल शब्द का अर्थ क्या है? यह शब्द युनानी भाषा के शब्द 'बिबलोस' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'एक पुस्तक'। वास्तव में यह पुस्तकों की एक पुस्तक है। बाइबल में 66 पुस्तकें हैं, 31 पुस्तकें पुराने नियम की हैं तथा 27 पुस्तकें नये नियम की है।

दूसरी बात यह है कि क्या आप आज पुराने व नये नियम में जो भिन्नता है, उसके अर्थ को समझ सकते हैं? नियम या व्यवस्था का अर्थ है एक वाचा या इच्छा। बहुत समय पहिले परमेश्वर ने अपने लोगों को एक व्यवस्था या अपनी इच्छा दी थी। अन्त में उसने नये नियम के रूप में अपनी व्यवस्था या इच्छा लोगों को दी। इससे पहिले की व्यवस्था पुरानी हो गई थी। इसीलिये हम इसे पुराना नियम तथा नया नियम कहते हैं। पूरी बाइबल परमेश्वर का वचन है परन्तु आज पुराना नियम हम पर लागू नहीं है क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों को नया नियम दिया है। उदाहरण के रूप में हम इस प्रकार से देखते हैं:

सरकार जब कोई नियम बनाती है, और जब तक वह लागू है, लोगों को उसे मानना पड़ेगा। लेकिन मान लीजिये सरकार इस पुराने नियम को हटाकर समाप्त करना चाहती है तथा इसके स्थान पर एक नया व उत्तम नियम दे देती है तब इसका अर्थ यह हुआ कि अब हमें उस पुराने नियम को मानने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम उस नियम के अब आधीन नहीं हैं, परन्तु अब आवश्यकता यह है कि हम सरकार द्वारा दिये गये नये नियम को मानें। पुराने तथा नये नियम के अन्तर को समझना भी बड़ा सरल है। इब्रानियों का लेखक इस प्रकार से समझाता है, "पर वह उन पर दोष लगाकर कहता है, कि प्रभु कहता है, देखो, वे दिन आते हैं, कि मैं इस्राएल के घराने के साथ, और यहूदा के घराने के साथ, नई वाचा बांधूगा। यह उस वाचा के

समान होगी जो मैंने उनके बापदादों के साथ उस समय बांधी थी, जब मैं इन का हाथ पकड़कर उन्हें मिसर देश से निकाल लाया, क्योंकि वे मेरी वाचा पर स्थिर न रहे, और मैंने उनकी सुधि न ली, प्रभु यही कहता है। फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने के साथ बांधूगा वह यह है कि मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा, और उसे उन के हृदय पर लिखूंगा और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा और वे मेरे लोग ठहरेंगे। और हर एक अपने देशवाले को और अपने भाई को यह शिक्षा न देगा, कि तु प्रभु को पहिचान क्योंकि छोटे से बड़े तक सब तुझे पहिचान लेगें। क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावन्त हूंगा, और उनके पापों को फिर स्मरण न करूंगा। नई वाचा की स्थापना से उसने प्रथम वाचा को पुरानी ठहरा दिया, और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है।'' (इब्रानियों 8:8-13)।

तीसरी बात यह है कि नये नियम की वाचा कब बांधी गई थी? इब्रानियों का लेखक लिखते हुए यह कहता है, ''और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें। क्योंकि जहां वाचा बांधी गई है वहां वाचा बांधने वाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बांधने वाला जीवित रहता है तब तक वाचा काम की नहीं होती। (इब्रानियों 9:15-17)। फिर से वह कहता है ''देख मैं आ गया हूं, ताकि तेरी इच्छा पूरी करूं'', निदान, वह पहिले को उठा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे। उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।'' (इब्रानियों 10:9-10)।

इन सब बातों से यह अर्थ निकलता है कि जब यीशु क्रूस पर मारा गया, तब उसने पुरानी व्यवस्था को हटा दिया तथा वह नई व्यवस्था को लाया। इसलिये आज हम नई व्यवस्था या नियम के आधीन है

तथा इसका अर्थ यह हुआ कि हमें परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये इस नियम को मानना है।

चौथी बात हम यह देखते हैं कि, बाइबल को किसने लिखा? क्या यह एक व्यक्ति या अधिक व्यक्तियों द्वारा लिखी गई थी? लगभग चालीस व्यक्तियों ने इसे लिखने में भाग लिया था। कई सौ वर्ष इसे लिखने में लगे, तथा ये सब लोग भिन्न भन्न वर्गों व स्थानों से आये थे तथा अलग-अलग देशों के निवासी थे। तौभी, इन सबनें एक ही बात या एक ही कहानी को लिखा। किस प्रकार से दो अंजान व्यक्ति एक ही कहानी को एक साथ सहमत होकर लिख सकेंगे।

पांचवी बात हम यह देखना चाहेंगे कि बाइबल को साधारण व्यक्तियों ने लिखा था, परन्तु विशेष बात यह है कि वे सब पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किये गये थे। दूसरे शब्दों में हम इस प्रकार कह सकते हैं कि पवित्र आत्मा ने उन्हें उभारा तथा उनकी अगुवाई की थी ताकि उन बातों को वे लिख सकें। पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा जो प्रेरीतों से की गई थी उसके विषय में हम यह पढ़ते हैं, ‘‘परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा। (यूहन्ना 16:13)। पतरस ने इस प्रकार से लिखा: ‘‘पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।’’ (2 पतरस 1:20-21)। फिर पौलुस इस प्रकार से कहता है, ‘‘हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए (2 तीमु 3:16-17)।

छठवीं बात हम यह देखना चाहते हैं, कि जो भी हम बाइबल में पढ़ते हैं क्या वह मनुष्य के लिये आज परमेश्वर का वचन है? यह

बात सत्य है। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक इस प्रकार से कहता है, "पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यदक्ताओं द्वारा बातें करके, इन दिनों के अन्त में हमसे पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है। (इब्रानियों 1:1-2)। इस बात को जारी रखते हुए वह कहता है: "इस कारण चाहिए कि हम उन बातों पर जो हमने सुनी है, और भी मन लगाएं ऐसा न हो कि बहक कर उन से दूर चले जाएं। क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक ठीक बदला मिला। तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चित रहकर क्यों कर बच सकते हैं? जिसकी चर्चा पहिले प्रभु के द्वारा हुई, और सुनने वालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, और अद्‌भुत कामों और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के बरदानों के बांटने के द्वारा इस की गवाही देता रहा। (इब्रानियों 2:1-4)। परन्तु इस सबका अर्थ क्या है? इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने सदा से मनुष्य से बात की है। आरंभ में परमेश्वर ने मनुष्य से सीधे बातचीत की। इसके पश्चात उसने भविष्यदूक्ताओं के द्वारा बात की। तथा अन्त में हम यह देखते हैं कि उसने अपने पुत्र के द्वारा मनुष्य से बात की, और वह है प्रभु यीशु मसीह जिसके विषय में नये नियम के पन्नों पर लिखा हुआ है। यह वचन अद्‌भुत कार्यों के द्वारा दृण हुआ है। हम पढ़ते हैं, "क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ और गूदे गूदे को, अलग करके, वार वार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है। (इब्रानियों 4:12)। यीशु मसीह के विषय में इस प्रकार से कहा गया है, "यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु यह इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है; और विश्वास

करके उसके नाम से जीवन पाओ। (यूहन्ना 20:30-31)।

सांतवी बात हम यह देखते हैं कि परमेश्वर का वचन हमारे लिये क्या कर सकता है जो मनुष्य का वचन नहीं कर सकता? सबसे प्रथम स्थान पर हम यह देखते हैं कि जो परमेश्वर कहता है और जो मनुष्य कहता है उसमें एक बहुत बड़ा अन्तर है। यीशु ने कहा था कि, ''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है। (यूहन्ना 17:17)। फिर, उसने इस प्रकार से कहा, ''और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।'' (यूहन्ना 8:32)।

आठवें स्थान पर हम यह देखेंगे कि किस प्रकार से परमेश्वर का वचन हमें स्वतंत्र करता है? हम इस वचन को सुनेंगे, इस पर विश्वास करेंगे तथा इसको मानेंगे, तब यह हमारा उद्धार करेगा। पौलूस लिखते हुए कहता है, ''सो विश्वास सुनने से, और सुनना, मसीह के वचन से होता है। (रोमियों 10:17)। याकूब लिखते हुए कहता है कि हमें वचन पर चलने वाला होना चाहिये। (याकूब 1:2)। यीशु ने साफ़ शब्दों में इस प्रकार से कहा था, ''धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे। (प्रकाशित 22:14)।

नवीं बात यह है कि परमेश्वर की आज्ञाएं क्या हैं? अपने चेलों से यीशु ने यह कहा था, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा (मरकुस 16:15, 16)। फिर जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक की ओर जाते है, तो हमें एक के बाद एक ऐसी घटना के विषय में पता चलता है जहां पर सुसमाचार का प्रचार किया गया अर्थात यह खुशी की खबर दी गई कि यीशु हमारे पापों के लिये मारा गया, गाड़ा गया तथा मृत्कों में से जी उठा, और जिन्होंने इसे सुना, उन्होंने परमेश्वर तथा यीशु में विश्वास किया, अपने पापों से पश्चाताप किया, तथा इस बात का अंगीकार किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, तथा उन सब ने बपतिस्मा लिया अर्थात अपने पापों की क्षमा के लिये वे पानी की

कब्र में गाड़े गये। (प्रेरितों 2:38; प्रेरितों 8:35-38)। अब जिन्होंने भी इस प्रकार से परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया था वे सब कलीसिया में मिलाये गये (प्रेरितों 2:47)। केवल वे ही लोग नहीं बल्कि जो भी लोग इस प्रकार से आज परमेश्वर की आज्ञा को मानेंगे उनका भी उद्धार होगा।

दसवें स्थान पर हम यह देखेंगे कि बाइबल में और कौन-सी ऐसी बातें हैं जिनके विषय में यह हमें सिखाती हैं? यह हमें प्रभु की कलीसिया, उसकी आराधना अथवा उपासना, मसीही जीवन किस प्रकार से व्यतीत किया जाये, स्वर्ग, नर्क, अनन्त जीवन तथा और भी अन्य बातें जिनहें मनुष्य को जानने की आवश्यकता है तथा उद्धार के विषय में हमें सिखाती है। (2 पतरस 1:3)।

ग्यारहवीं बात हम यह जानना चाहेंगे कि बाइबल कब तक विद्यमान रहेगी? यीशु ने कहा था कि उसका वचन सदाकाल तक स्थिर रहेगा (मत्ती 24:35)। वह हमें यह भी बताता है कि हमारा न्याय भी एक दिन इसी के द्वारा होगा (यूहन्ना 12:48)।

क्या आप परमेश्वर में विश्वास करते हैं? क्या आप यह विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है? क्या आप उसके वचन में विश्वास करते हैं? क्या आप प्रभु की आज्ञा को मानेंगे ताकि आप का उद्धार हो सके? मेरी प्रार्थना है कि आप ऐसा करेंगे।

पाठ 5 | पाप

इस पाठ में हम पाप के विषय में कुछ प्रश्नों तथा उनके उत्तरों को देखेंगे।

सबसे पहिले हम यह जानना चाहेंगे कि पाप है क्या? यह एक बहुत ही विशेष और महत्त्वपूर्ण प्रश्न है और वास्तव में यदि हम पाप के विषय में देखने जा रहे हैं तो हमारे लिये यह जानना आवश्यक है कि पाप क्या है। इसके विषय में हमें अधिक सुनने को नहीं मिलता परन्तु जो लोग इसके विषय में जानते हैं उन्हें पता है कि पाप एक बुराई, दुष्टता तथा सब प्रकार की अभक्ति है और यह तमाम अच्छाईयों के विरूद्ध है। यूहन्ना पाप की परिभाषा इस प्रकार से देता है "जो कोई पाप करता है वह व्यवस्था का विरोध करता है और पाप तो व्यवस्था का विरोध है।" (1 यूहन्ना 3:4)। अन्य शब्दों में पाप की परिभाषा यह भी है कि निशाने से चूक जाना, परमेश्वर का नियम विद्यमान है, परन्तु जब कोई इसे मानने से चूक जाता है या इसके अनुसार नहीं चलता अर्थात जब नियम को तोड़ता है तो वह पाप करता है।

दूसरी बात हम यह देखते हैं कि शैतान से पाप का क्या संबंध है? यूहन्ना फिर लिखते हुए कहता है, "जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरंभ से ही पाप करता आया है" परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ, कि शैतानों के कामों को नाश करे। (2 यूहन्ना 3:8)। इसी बात में एक और बात जोड़ते हुये वह कहता है, "सब प्रकार का अधर्म तो पाप है, परन्तु ऐसा पाप भी है, जिस का फल मृत्यु है।" (1 यूहन्ना 5:17)। पौलूस भी कहता है, "....और जो कुछ विश्वास से नहीं है, वह पाप है।" (रोमियों 14:23)। तब याकूब भी कहता है, "इसलिये जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है।" (याकूब 4:17)।

तीसरे स्थान पर हम यह देखते हैं कि पाप किसने किया है? कौन

दोषी है? छोटे बच्चे पापी नहीं है, अगरचि, कि बहुतेरे धार्मिक लोग ऐसा कहते हैं कि छोटे बच्चे पापी है। वास्तव में अधिकतर धार्मिक संसार इस बात में विश्वास करता है कि बच्चे इस संसार में पाप के साथ जन्म लेते है। वे सिखाते हैं कि छोटे बच्चे आदम के पाप के साथ जन्म लेते हैं। वास्तव में बाइबल ऐसा नहीं सिखाती, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपने ही पापों के लिये जिम्मेदार है। परमेश्वर के जन ने बहुत पहिले इस प्रकार से कहा था, ''जैसा पिता का प्राण, वैसा ही पुत्र का भी प्राण है, दोनों मेरे ही है। इसलिये जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा'' (यहेजकेल 18:4)।

यीशु मसीह ने बच्चों के विषय में यह कहा था, कि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। (मत्ती 18:1-3)। परन्तु यदि छोटे बच्चे पाप करने के दोषी नहीं है तो फिर कौन है? तमाम समझदार लोग, अर्थात वे जिन्हें भले-बुरे का ज्ञान है, उनकी इतनी आयु है कि वे जान सकते हैं कि क्या उचित है और क्या अनुचित। इस प्रकार के लोगों के विषय में पौलुस ने कहा था कि ''इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।'' (रोमियों 3:23)। यीशु ने कहा था कि जो पाप करते हैं वे पाप के दास हैं। हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है।'' (यूहन्ना 8:34)। पौलूस ने इस प्रकार से कहा था कि ''जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतंत्र थे'' (रोमियों 6:20)। इस सबसे अर्थ यह निकलता है कि जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करता है अथवा उन बातों को करता है जो अनुचित हैं तब वह एक पापी बन जाता है, यानि वह पाप में अपना जीवन व्यतीत करता है और तब वह पाप का दास बन जाता है और उसे परमेश्वर का शत्रु माना जाता है क्योंकि पाप के कारण वह परमेश्वर से अलग है।

चौथी बात, यह है कि बाइबल में किस प्रकार के पापों का वर्णन हुआ है? पौलूस इन्हें शरीर के काम कहते हुए लिखता है, ''शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात व्यभीचार, गंदे काम, लुचपना, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म। डाह, मतवालापन,

लीलाक्रीड़ा और इन के ऐसे और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होगे।'' (गलतियों 5:19:21)। एक और स्थान पर पौलूस उन लोगों के विषय में कहता है, ''क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरूषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देने वाले, न अंधेर करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।'' (1 कुरि. 6:1-10)। शायद यह बड़ा अजीब सा लगे, परन्तु हमारे समय में ऐसे लोग भी है जो इन बातों में बड़ी महिमा करते हैं। हत्यारे लोग जो मासूम लोगों की जान लेते हैं, इसमें अपनी बड़ी शान समझते हैं। वे अपने दुष्टता के कामों को बहुत बड़ा मानते हैं। पुरूषगामी लोग भी खुलेआम अपने कार्यों को करते हैं तथा इसमें उन्हें कोई बुराई नहीं दिखाई देती। अनेकों ऐसे अभीनेता व अभीनेत्रियां हैं जिनके जीवन व चरित्र बड़े गलत होते हैं। अनेकों ऐसे भी होते हैं जो बिना शादी किये हुए एक साथ रहते हैं। गर्भपात करवाना एक मामूली सी बात समझा जाता है तथा इसे बुराई के दृष्टिकोण से नहीं देखा जाता और शराब पीना और नशीले पदार्थों का सेवन करना, जुआ खेलना तथा रिश्वत खोरी बहुत ही प्रचालित है। इन बातों को बड़े ही साधारण रूप से देखा जाता है, लेकिन मेरे मित्रों, बाइबल कहती है कि ये सब बातें तथा इनकी जैसी और भी हज़ारों बुरी तथा अनुचित हैं। इन सब बातों में पाप है, ये बातें पाप से ग्रस्त हैं और अच्छी नहीं है इसलिये इन सब बातों का हमें तिरस्कार करना चाहिये। यदि मनुष्य इन्हें उचित ठहराता है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि ये बातें उचित हैं।

पाचवें स्थान पर हम यह देखेंगे कि पाप के परिणाम क्या है? जो परमेश्वर के नियमों को तोड़ते हैं, उन्हें इसका एक बहुत बड़ा दाम चुकाना पड़ेगा। उदाहरणार्थ, जो अनुचित यौन संबंध रखते हैं वे ऐसी बिमारी के शिकार हो सकते हैं जिससे की उन्हें अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ सकता है। उदाहरण के लिये हम एड्स या एच आई वी के

विषय में क्या सोचते हैं? पौलूस कहता है, ''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।'' (रोमियों 6:23)। शायद इस संसार में हम पाप के परिणाम से बच जायें परन्तु न्याय के दिन हमें परमेश्वर का सामना करना पड़ेगा। वहां नहीं बच सकेंगे। हम रोमियों एक अध्याय की ओर जाते हैं, तो हम पढ़ते हैं कुछ ऐसे लोगों के विषय में जो इतने बिगड़ चुके थे कि परमेश्वर ने भी उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया था। इन लोगों के विषय में पौलूस लिखते हुये कहता है, ''परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उन के मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरूतर है। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उन का निर्बुद्धि मन अंधेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों और चौपायों, और रेंगने वाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला। इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदल कर झूठ बना डाला और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन। इसलिये परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया, यहां तक कि उनकी स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उससे जो स्वभाव के विरूद्ध है, बदल डाला। वैसे ही पुरूष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरुषों ने पुरूषों के साथ निर्लज्ज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया। और जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, इसलिये परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मेपन पर छोड़ दिया,

कि वे अनुचित काम करें। सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता और लोभ और बैरभाव, से भर गए, और डाह, और हत्या, और झगड़े और छल, और इर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, बदनाम करने वाले परमेश्वर के देखने में घृणित औरों का अनादर करने वाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी-बुरी बातों के बनाने वाले माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दय हो गये हैं। वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं, कि ऐसे ऐसे काम करने वाले मृत्यु के दण्ड के योग्य है, तोभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं, वरन करने वालों से भी प्रसन्न होते हैं।'' (रोमियों 1:28-32)। कैसा लगता है आपको यह सब पढ़कर? काश, परमेश्वर हमारी सहायता करे ताकि इन सब बातों से हम अपने को बचाकर रखें। यह सब तो शरीर के गलत कार्य है, परन्तु सब धार्मिक रूप से किये हुए पापों के विषय में हम क्या सोचते हैं? उन शिक्षाओं के विषय में जो धार्मिक रूप से परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध सिखाई जाती है? इस प्रकार का पाप भी मनुष्य का नाश का कारण होगा। (मत्ती 7:21-23, रोमियों 16:17,18; 2 यूहन्ना 1)।

छठवीं बात यह है कि परमेश्वर ने मनुष्य के लिये ऐसा क्या किया है जिससे कि वे अपने पापों से छुटकारा पा सकें? सबसे पहिले हम यह देखते हैं कि जब परमेश्वर ने मनुष्य को पाप में देखा, कि वो खोया हुआ है, आशाहीन है, तब उसने अपने पुत्र को इस संसार में भेजा ताकि वह क्रूस पर मारा जाये और उसकी मृत्यु के द्वारा उसका पापों से उद्धार हो सके। (यूहन्ना 3:16-17)। हमें यह बताया गया है कि यीशु ने अपना लोहू बहाया ताकि मनुष्य को पापों से क्षमा मिल सके। (मत्ती 26:28)। दूसरे स्थान पर हम यह देखते हैं कि अगरचि परमेश्वर ने उद्धार का मार्ग बताया है तथा अपने अनुग्रह वा दया के द्वारा उसने क्रूस पर अपने पुत्र को मरने के लिये दिया था परन्तु इसका अर्थ कदापि यह नहीं हैं कि मनुष्य को कुछ नहीं करना और उसका उद्धार ऐसे ही हो जायेगा। दूसरे शब्दों में, मनुष्य यदि उद्धार पाना चाहता है तो उसे परमेश्वर में विश्वास करना चाहिये, और यह विश्वास करना चाहिये

कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। (इब्रानियों 11:6, यूहन्ना 14:1)। अपने पापों से पश्चाताप करना चाहिये (लूका 13:3)। यह अंगीकार करना चाहिये कि वह परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 10:32)। तथा अन्त में उसे बपतिस्मा लेना चाहिए, अपने पापों की क्षमा के लिये पानी में गाड़े जाकर (प्रेरितों 2:38)। जब भी कोई पापी ऐसा करता है, परमेश्वर उसको क्षमा करता है, उसका उद्धार करता है, तथा अपने परिवार का उसे एक सदस्य बना लेता है, जो उसकी कलीसिया है। (प्रेरतों 2:47)। यदि मसीही व्यक्ति प्रभु के प्रति विश्वास योग्य बना रहेगा, ज्योति में चलेगा, जैसे वह ज्योति में है, तब वह एक दूसरे से सहभागिता रखेगा तथा उसके पुत्र यीशु का लहु उसको सब पापों से धोता रहेगा (1 यूहन्ना 1:7)। और जब वह अन्त तक विश्वास योग्य बना रहेगा तब स्वर्ग उसका एक अनन्त रहने का स्थान होगा। (प्रकाशित 2:10)।

पाप में जीवन बिताने की बजाय क्या यह एक अच्छी बात नहीं लगती? कितनी ही दुखपूर्ण बात है कि पाप में रहकर पाप के परिणामों को भुगतना, पापी रहते हुए मर जाना, और अन्त में सदा का अनन्त काल का दण्ड भोगना? यदि आप चाहते हैं कि आप के साथ ऐसा न हो तो आज ही प्रभु के पास आने का निर्णय लें।

पाठ 6 | अधिकार

बाइबल के इस पाठ में हमारा विषय होगा, यीशु का अधिकार या धार्मिक रूप से हमारा अधिकार। सबसे पहिले हम यह जानना चाहते हैं कि अधिकार का अर्थ क्या है? किसी भी कार्य को कार्य रूप देने के लिये आपके पास सामर्थ, शक्ति होनी चाहिये ताकि आप बोल सकें, अगुवाई कर सकें, और अपनी आज्ञा को अधिकार के साथ दे सकें। अर्थात इसके लिये आपके पास शक्ति होनी चाहिये।

दूसरी बात हम यह देखते हैं कि धार्मिक रूप से सारा अधिकार व शक्ति किसके पास है? यह अधिकार तथा सामर्थ यीशु के पास है। हम पढ़ते हैं – यीशु ने उनके पास आकर कहा, ''कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अंत तक सदैव तुम्हारे संग हूं।'' (मत्ती 28:19-20)। यीशु के समय में लोग उसकी शिक्षाओं से चकित हो जाते थे। मरकुस 1:22 में लिखा है ''लोग उसके उपदेश से चकित हुए, क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों की नाई नहीं, परन्तु अधिकारी की नाई उपदेश देता था।'' यीशु के विषय में कहा जाता था कि ''किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं की'' (यूहन्ना 7:46)। प्रभु यीशु के विषय में पतरस ने कहा था, ''वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी, और सामर्थी उसके आधीन किए गए हैं।'' (1 पतरस 3:22)।

प्रभु यीशु के विषय में बोलते हुए प्रेरित कहता है, ''जिसमें हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है। वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या

अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई है। और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है, वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे। (कुलुस्सियों 1:14-19)। फिलिप्पी में जो मसीही रहते थे, उन्हें लिखते हुए पौलूस कहता है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटने टेकें और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है। (फिलिप्पियों 2:5-11)।

अब, यहां इस बात को हम इस तरह से देखते हैं। यीशु अपनी इच्छा को प्रकट करने के लिये परमेश्वर की ओर से आया। वह अधिकार के साथ बोलता था और उसने यह भी कहा था कि उसके पास स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार है। यीशु इसलिये मारा गया ताकि मनुष्य का उद्धार हो सके तथा अपनी मृत्यु के पश्चात वह अपने पिता के पास वापस चला गया तथा परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठा और सब अधिकार स्वर्गदूत तथा सामर्थ उसके आधीन किये गये। "और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। और वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा, कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।" उसका नाम सब नामों में श्रेष्ठ है, ताकि हर एक घुटना चाहे वह स्वर्ग

में हो या पृथ्वी पर उसके सामने झुके और हर एक जीभ यह अंगीकार करे कि यीशु ही प्रभु है।

तीसरे स्थान पर हम देखते हैं कि यीशु के पास जो सामर्थ और अधिकार है, उसके विषय में और क्या कहा गया है? यह एक ऐसी बात है जिसके बारे में पहले से ही भविष्यवाणी की गई थी? पतरस तथा अन्य प्रेरितों ने जब सुसमाचार का प्रचार यरूशलेम में किया तो हम आगे इस प्रकार से पढ़ते हैं। "इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिस से प्रभु के सम्मुख विश्रांति के दिन आएं। और वह उस मसीह यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिये पहिले ही से ठहराया गया है। अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह सब बातों का सुधार न कर लें जिस कि चर्चा परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है, जो जगत की उत्पत्ति से होते आएं हैं। जैसा कि मूसा ने कहा था, प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ-सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुमसे कहे, उसकी सुनना। परन्तु प्रत्येक मनुष्य जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुने, लोगों में से नाश किया जाएगा और सामुएल से लेकर उसके बाद वालों तक जितने भविष्यद्वक्ताओं ने बात कहीं उन सबने इन दिनों का संदेश दिया है। तुम भविष्यद्वक्ताओं की संतान और वाचा के भागी हो, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बाप-दादों से बांधी, जब उसने इब्राहिम से कहा, कि तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएंगे। परमेश्वर ने अपने सेवक को उठाकर पहिले तुम्हारे पास भेजा, कि तुम में से हर एक को उसकी बुराईयों से फेरकर आशीष दे। (प्रेरितों 3:19-26)। इस बात पर ध्यान दीजिए, वह कहता है; कि परमेश्वर मूसा के जैसा भविष्यद्वक्ता उठाएगा और सबको उसकी बात सुननी चाहिये जो वो उनसे कहेगा। इस बात को जारी रखते हुए वह कहता है जो उसकी बात सुनने से इंकार करेंगे, वे नाश होंगे, अर्थात उनका पापों से उद्धार नहीं होगा।"

चौथी बात, परमेश्वर अपने वचन को हमें किस प्रकार से देता है या, हम तक किस प्रकार से पहुंचाता है? मत्ती 17:5 में परमेश्वर ने

जो अपने पुत्र के विषय में कहा वो हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''वह बोल ही रहा था, कि देखो, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखों, उस बादल में से यह शब्द, निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं, इसकी सुनो'' इब्रानियों का लेखक कहता है, ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्द्वक्ताओं के द्वारा बातें करके इन दिनों के अंत में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया है और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है।'' (इब्रानियों 1:1-2)। इसलिये जो कुछ भी प्रभु ने हमसे करने के लिये कहा है, उसमें हमें, विश्वास करना चाहिये और उसका पालन करना चाहिये। यीशु ने आज्ञा माननी सीखी थी और इसके विषय में हम इस प्रकार से पढ़ते हैं। ''और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया'' (इब्रानियों 5:8-9)। इसलिये यीशु कहता है कि हमें उसके वचन में न कुछ बढ़ाना है और न ही उसमें से कुछ घटाना है। (प्रकाशितवाक्य 22:18-19)।

पांचवें स्थान पर हम यह देखेंगे कि यीशु के अधिकार के प्रति हम अपना आदर किस प्रकार से दिखा सकते हैं? हमें उसमें विश्वास करना चाहिये (यूहन्ना 14:1)। यदि हम उसमें विश्वास करने से इंकार करेंगे तो हम अपने पापों में खोये रहेंगे। (यूहन्ना 8:24)। हमें अपने पापों से मन फिराना चाहिये। क्यों हमें मन फिराना चाहिये? क्योंकि प्रभु यीशु चाहता है कि हम ऐसा करें, और तमाम बुरी बातों से अपना मन फिरायें। यीशु ने कहा था, ''यदि मन नहीं फिराओंगे तो तुम सब भी इसी रीति ने नाश होगे'' (लूका 13:3)। पतरस ने कहा, कि ''परमेश्वर धीरज धरता है और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिलें'' (2 पतरस 3:9)।'' फिर यीशु यह चाहता है कि हम मनुष्यों के सामने उसका अंगीकार करें। वह इस प्रकार से कहता है, ''जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। पर जो कोई मनुष्यों

के सामने मेरा इंकार करेगा उससे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इंकार करूंगा। (मत्ती 10:32-33)।'' और अंत में वह हम से कहता है, कि हम बपतिस्मा लें। उसने कहा, ''जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:16)।

छटवीं बात हम यह देखना चाहेंगे, कि क्यों हमें इन आज्ञाओं को मानना है? इन्हें हमें इसलिये मानना है क्योंकि, प्रभु यीशु मनुष्य का उद्धारकर्ता है और उसने ही हमें ऐसा करने को कहा है, क्योंकि यह अज्ञाएं उद्धार के लिये आवश्यक है।

सातवीं बात यह है कि यदि हम प्रभु की आज्ञा मानने से इंकार कर दें तो हमारे साथ क्या होगा? यदि हम ऐसा करते हैं तो वह हमारा उद्धार नहीं करेगा तथा उसके पास इतनी सामर्थ है कि वह हमारा इंकार भी कर सकता है। यीशु ने कहा था कि, ''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहराये वाला तो एक है; अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा'' (यूहन्ना 12:48)।''

आठवीं बात यह है कि यदि हम उसकी शिक्षाओं को मानें तो वह क्या करेगा ? वह हमारा उद्धार करेगा तथा हमें अपनी कलीसिया में मिलाएगा। (प्रेरितों 2:37, 2:47)।

नवें स्थान पर यह देखेंगे कि मूसा तथा व्यवस्था क्या है? याद रखें यह कहा गया था, कि मूसा की तरह एक भविष्यदूक्ता ठहराया जायेगा और सब उसकी बात सुनेंगे और जो उसकी नहीं सुनेंगे वे नाश होंगे। (प्रेरितों 3:22, 23)। आज हम मूसा की व्यवस्था के आधीन नहीं है, बल्कि प्रभु यीशु के सिद्ध नियम के आधीन हैं। (याकूब 1:25)।

दसवीं बात यह है कि उन धार्मिक अगुवों के विषय में क्या कहा जा सकता है जो अपने अधिकार से अपनी कलीसियाओं तथा शिक्षाओं का प्रचार करते हैं? वे झूठे शिक्षक हैं तथा परमेश्वर की दृष्टि में श्रापित हैं, और जो उनके पीछे चलते हैं वे अनन्त जीवन की आशीष से वंचित हो जाएंगे। यीशु ने स्वयं यह कहा था कि ''जो मुझ से, हे प्रभु, हे

प्रभु कहता है उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भें के काम नहीं किये? तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करने वालों, मेरे पास से चले जाओ'' (मत्ती 7:21-23)।

यीशु ने चेतावनी देकर कहा था कि बहुत से झूठे भविष्यदूक्ता तथा शिक्षक उठ खड़े होंगे। (मत्ती 24:11)। यूहन्ना बिनती करते हुए कहता है, ''हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं, क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यदूक्ता जगत में निकल खड़े हुये हैं'' (1 यूहन्ना 4:1)।

ग्याहरवां तथा अंतिम प्रश्न यह है कि सारा अधिकार किसका है? केवल प्रभु यीशु का। इसलिये यह आवश्यक है कि हम अपने आप को उसे सौंप दें तथा यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं, तो पूर्ण रूप से उसको जानें तथा उसका पालन करें। यदि हम ऐसा नहीं करते तो हम अपने पापों में खोयें रहेंगे।

मेरी यह प्रार्थना है कि आप यीशु को अपना प्रभु तथा उद्धारकर्ता स्वीकार करेंगे तथा उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे। यदि इन बातों के विषय में आप और अधिक जानना चाहते हैं तो हमें बताइये।

पाठ 7 | सुसमाचार

इस पाठ में हम सुसमाचार से सम्बंधित कुछ प्रश्नों के उत्तरों को देखेंगे।

सबसे प्रथम हम यह देखेंगे कि सुसमाचार का अर्थ क्या है? सुसमाचार सारे संसार में ले जाना कितना आवश्यक है, इसके विषय में प्रेरित पौलुस इस प्रकार से कहता है, "क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा। फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया वे उसका नाम क्यों कर लें? और जिस की नहीं सुनी उस पर क्यों कर विश्वास करें? और प्रचारक बिना क्योंकर सुनें? और यदि भेजे न जाएं, तो क्योंकर प्रचार करें? जैसा लिखा है, कि उनके पांव क्या ही सोहावने हैं; जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं।" (रोमियों 10:13-15)।

दूसरी बात यह है कि सुसमाचार का आधार क्या है? इस प्रश्न का उत्तर प्रेरित पौलुस देता है। कुरिन्थियों में कलीसिया को लिखते हुए वह कहता है: "हे भाईयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो। इसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैंने सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया। और गाड़ा गया, और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा" (1 कुरि. 15:1-4) इस बात पर ध्यान दीजिये कि वह उनसे कहता है कि उसने उन्हें वो सुसमाचार सुनाया जिसे उन्होंने माना भी है और उसे मानने के द्वारा उनका उद्धार भी हुआ है और यदि उन्होंने इसे माना नहीं होता तो उनका विश्वास करना व्यर्थ होता। आगे एक और ध्यान देने वाली

बात यह है कि वह उनसे कहता है कि उसने उन्हें प्रचार करके यह बताया था कि किस प्रकार से प्रभु यीशु मारा गया, उनके पापों के लिये गाड़ा गया तथा कब्र से जी उठा। इसलिये सुसमाचार अर्थात यीशु का मारा जाना, गाड़ा जाना तथा कब्र से जी उठना एक शुभ समाचार या खुशी की खबर है। शुभ समाचार हमारे लिये यह है कि यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा हमारा उद्धार संभव कर दिया है ताकि हम भी एक दिन जी उठेंगे और प्रभु के साथ अनन्तकाल तक स्वर्ग में रहेंगे।

तीसरे स्थान पर हम यह देखना चाहेंगे कि कोई अपने जीवन में सुसमाचार को किस प्रकार से अपना सकता है, ताकि इसके द्वारा उसका उद्धार हो सके? पौलुस की बात को हम फिर से देखते हैं, उसने कहा था कि उसने उन्हें सुसमाचार प्रचार किया था, तथा उन्होंने इसे ग्रहण भी किया था और इसके द्वारा उनका उद्धार हुआ था। परन्तु सुसमाचार मानने में क्या-क्या बातें शामिल हैं? मरकुस के 16:15-16 को देखिये और यहां यीशु ही अपने शब्दों में हमें यह समझाएगा। स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस जाने से पहिले उसने कहा था: "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:15, 16)। यीशु मसीह स्वयं यह चाहता था तथा उसने यह कहा भी था कि सुसमाचार का प्रचार अर्थात उसकी मृत्यु, गाड़े जाना तथा जी उठने का प्रचार किया जाये। और जो लोग इसके बारे में सुनेंगे उनको उद्धार पाने के लिये कुछ शर्तों को मानना पड़ेगा।

चौथी बात हम यह देखेंगे कि शर्तों का क्या अर्थ हैं? इसका अर्थ यह है कि प्रभु की कुछ इच्छायें हैं जिन्हें वह चाहता है कि हम उन्हें मानें। इसलिये उद्धार पाने के लिये इन शर्तों को मानना आवश्यक है।

पांचवीं बात यह है कि क्या बाइबल यह नहीं सिखाती कि हमारा उद्धार अनुग्रह के द्वारा हुआ है? इफिसियों 2:8,9 तथा तीतुस 3:5 के अनुसार हमें यह बताया गया है कि हमारा उद्धार परमेश्वर की दया तथा अनुग्रह से हुआ है तथा हमारे अपने धार्मिक कार्यों के द्वारा नहीं।

यह सत्य है कि हम स्वयं अपने आप को नहीं बचा सकते, और हम अपने धार्मिक कार्यों से भी अपना उद्धार नहीं कर सकते, परन्तु चाहे हम कुछ भी करें, कितनी भी आज्ञाओं को मानें, तब भी उद्धार हमारा परमेश्वर के अनुग्रह तथा दया से होगा। शर्तों को मानने का अर्थ यह नहीं है कि हम अपने उद्धार को कमा रहे हैं। यदि कोई उद्धार के लिये उसकी इच्छाओं को नहीं मानता तो उसका उद्धार अनुग्रह से नहीं होगा।

छठवीं बात यह देखना चाहेंगे कि पापों की क्षमा और उद्धार के लिये क्या क्या शर्तें होंगी? जिस प्रकार से हमने मरकुस 16:15, 16 में पढ़ा था कि सुसमाचार को केवल सुनना ही काफ़ी नहीं है बल्कि उस पर विश्वास भी करना आवश्यक है, और विश्वास करने का अर्थ यह है कि हमें यीशु की मृत्यु, गाड़े जाना तथा जी उठने पर विश्वास करना है और हमें परमेश्वर पर भी विश्वास करना है क्योंकि उसी ने यीशु को इस संसार में भेजा ताकि वह क्रूस की मृत्यु के द्वारा मनुष्य का उद्धार कर सके। पौलुस ने कहा था कि ''विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)। मरकुस 16:16, में यीशु ने कहा था कि विश्वास करना आवश्यक है। पौलुस ने रोमियों 10:10 में कहा कि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है। इब्रानियों का लेखक कहता है कि ''विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिये, कि वह है, और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है। (इब्रानियों 11:6)। फिर यीशु यह कहता है कि ''तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी रखो'' (यहून्ना 14:1)। उसने यह भी कहा था कि ''तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वहीं हूं, तो अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:24)।

सातवीं बात यह है कि क्या प्रभु के सुसमाचार की कुछ और भी शर्तें है जो उद्धार के लिये आवश्यक है? हां, ऐसी शर्तें है। एक और शर्त है पश्चाताप करना या अपने पापों से मन फिराना। परन्तु मन

फिराना क्या है? इसका अर्थ है अपने पापों वा अनुचित कार्यों से मन को हटाना। यदि कोई अनुचित तथा बुरी बातों से मन नहीं फिराता तो वह किस प्रकार से यह आशा कर सकता है कि प्रभु उसका उद्धार करे? दूसरे शब्दों में हम इसे इस प्रकार से कह सकते हैं कि यदि कोई झूठ बोलना छोड़कर सच बोलने लगता है तो इसे मन फिराना कहते है। यदि कोई चोरी करता है और जब वह चोरी करना छोड़कर परिश्रम करके कमाता है तो इसे मन परिवर्तन कहते हैं। यीशु ने कहा था कि ''यदि मन नहीं फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।'' (लूका 13:3)। पौलुस कहता है कि ''परमेश्वर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।'' (प्रेरितों 17:39)। पतरस ने भी इसी बात को 2 पतरस 3:9 में कहा है। पिन्तेकुस्त के दिन जब प्रेरितों ने सुसमाचार का प्रचार किया तब बहुत सारे लोगों ने विश्वास किया और इसके पश्चात ''उन्होंने पतरस वा शेष प्रेरितों से कहा कि हम क्या करें?'' हम पढ़ते है कि उनसे कहा गया मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लें; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।'' (प्रेरितों 2:38)।

आठवीं बात यह है कि मन फिराओ में क्या-क्या शर्तें शामिल है? हम पवित्र शास्त्र में पढ़ते हैं, और विशेषकर प्रेरितों के काम की पुस्तक में कि किस प्रकार से लोगों का मन परिवर्तन हुआ था, और उन लोगों ने प्रभु की आज्ञा मानकर यीशु में अपना विश्वास दिखाकर यह अंगीकार किया था कि वह परमेश्वर का पुत्र है। इथिओपिया के व्यक्ति ने फिलिप्पुस के प्रचार को सुना था तथा वह बपतिस्मा लेना चाहता था, फिलिप्पुस ने उससे कहा कि वह ऐसा कर सकता है यदि वह अपने पूरे मन से यीशु में विश्वास करता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। और जब उसने कहा कि हां मैं यीशु में विश्वास करता हूं तब फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। (प्रेरितों 8:36-38)। यीशु ने कहा था यदि हम मनुष्यों के सामने उसका अंगीकार करेंगे तो वह भी स्वर्गीय पिता के सामने हमारा अंगीकार करेगा। (मत्ती 10:32)।

नवीं बात हम यह देखना चाहते हैं कि क्या उद्धार के लिये और भी शर्तें हैं? हां, एक और शर्त है। और यह है बपतिस्मा लेना अर्थात जल में गाड़े जाना। (प्रेरितों 8; कुलु. 2:12)। हमने प्रेरितों 2:38 पहले ही पढ़ लिया है जहां लिखा है कि मन फिराकर और बपतिस्मा लेकर हमारे पाप क्षमा हो जाते है। यीशु ने कहा था, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।" (मरकुस 16:16)। बाइबल हमें यह भी बताती है कि बपतिस्मा हमें यीशु तथा उसकी कलीसिया में प्रवेश दिलाता है। (रोमियों 6:3, 4; 1 कुरि. 12:13)।

दसवीं बात यह है कि बपतिस्मा इतना आवश्यक क्यों है? वास्तव में प्रत्येक बात जो प्रभु ने उद्धार पाने के लिये कही है वो आवश्यक है। परन्तु इन शर्तों को मानकर जिनके द्वारा हमारे पाप क्षमा होते हैं, और विशेषकर बपतिस्मा लेकर हम प्रभु की मृत्यु, गाड़े जाने तथा मृत्यु से उसके जी उठने को दिखाते है। (रोमियों 6)। प्रभु यीशु मारा गया, गाड़ा गया तथा अपनी प्रतिज्ञा अनुसार कब्र से जी उठा। इसे नया जीवन कहा गया है। जब कोई प्रभु यीशु की आज्ञा को मानता है, तब वह अपने पापों के लिये मर जाता है, पानी की कब्र में गाड़ा जाता है तथा पानी की कब्र से बाहर आकर वह एक नये जीवन की चाल चलने लगता है। इसे नया जन्म कहा जाता है। (यूहन्ना 3:3-5) और यीशु में वह नई सृष्टि बन जाता है। (2 कुरि. 5:17)।

अब ग्यारहवीं बात हम यह देखते हैं कि किस प्रकार से कोई सुसमाचार को मान सकता है? हमने पहले ही इस बात को देख लिया है कि सुसमाचार की शर्तों को मानकर हम सुसमाचार का पालन कर सकते हैं। प्रेरित पौलुस ने कहा था कि प्रभु उनसे पलटा लेगा जो सुसमाचार को नहीं मानते। (2 थिस्स. 1:7-9)। पतरस कहता है "जबकि न्याय का आरंभ हम ही से होगा। तो उनका क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते?" (1 पतरस 4:17) पतरस के वाक्य से हमें इसका साफ उत्तर मिलता है।

बारहवीं बात यह है कि बाइबल में हम कितने सुसमाचारों के विषय में पढ़ते हैं? केवल एक और पौलुस कहता है कि उसने एक

सुसमाचार का प्रचार किया, और जो कोई दूसरे सुसमाचार का प्रचार करेगा वो स्त्रापित होगा। (गलतियों 1:6-9)।

अन्त में तेरहवीं बात हम यह देखते हैं कि सुसमाचार से हमें क्या-क्या प्रतिज्ञाएं मिलती हैं? हमें उद्धार तथा पवित्र आत्मा का दान मिलता है। (प्रेरितों 2:38)। हम प्रभु की कलीसिया या मण्डली में मिलाये जाते है तथा मसीह को पहिन लेते हैं। (प्रेरितों 2:47; गलतियों 3:26-27)। तथा इस सब का नीचोड़ यह है कि सारी आत्मिक आशिषें हमें यीशु मिलती है और हमारे पास अनन्त जीवन की आशा होती है। (इफिसियों 1:3; 1 कुरि. 13:13)।

आपने इस लेख में सुसमाचार के विषय में जाना और यह भी जाना कि सुसमाचार के द्वारा हम किस प्रकार से उद्धार पा सकते हैं। क्या आप इसमें विश्वास करके इसका पालन करेगें? यदि हां तो हमसे आज ही सम्पर्क कीजिये।

पाठ 8 | विश्वास

अपने इस पाठ में हम विश्वास के विषय में कुछ प्रश्नों को देखेंगे और इनके उत्तरों के लिये बाइबल की ओर जाएंगे। सबसे पहिले यह देखना चाहेंगे कि विश्वास क्या है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसे कई बार अनेकों लोगों द्वारा पूछा जाता है। यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर देना कई बार कठिन हो जाता है। इसकी सबसे अच्छी परिभाषा हम इब्रानियों 11:1 से दे सकते हैं। यहां लेखक इस प्रकार से कहता है, ''अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।'' दूसरे शब्दों में हम इस प्रकार से कह सकते हैं कि परमेश्वर में हम इसलिये विश्वास करते हैं क्योंकि उसके होने के बहुत से प्रमाण है। हमने उसे कभी देखा नहीं परन्तु हम पूरे भरोसे के साथ कह सकते हैं कि वह विद्यमान है। हमने प्रेरितों तथा यीशु को भी नहीं देखा लेकिन हमारा दृढ़ विश्वास है कि वे कई सौ वर्षों पहिले पृथ्वी पर रहे थे। हम यह क्यों विश्वास करते हैं? क्योंकि बाइबल हमें इसके विषय में बताती है। हम इसलिये भी विश्वास करते हैं क्योंकि सारे संसार पर उनका प्रभाव हैं। संसार में बहुत सारी वस्तुएं हैं जिन्हें हमने देखा नहीं है, परन्तु फिर भी हम यह विश्वास करते हैं कि यह वस्तुएं विद्यमान हैं। बहुत से ऐसे लोग हैं जिनके विषय में हमने सुना होगा, हो सकता है रेडियो पर सुना हो, और शायद टी.वी. पर देखा हो, परन्तु हमने उन्हें व्यक्तिगत रूप से देखा नहीं पर फिर भी हम यह विश्वास करते हैं कि वे विद्यमान हैं।

दूसरी बात यह है कि क्या इसका अर्थ यह हुआ कि विश्वास परमेश्वर के वचन को सुनने से आता है? यह बात सत्य है। प्रेरित पौलुस ने कहा था, ''सो विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।'' (रोमियों 10:17)। यह बात उचित है तथा सत्य है कि चाहे कोई वचन को सुन रहा हो या पढ़ रहा हो वह विश्वास करने की ओर

अग्रसर होता है।

तीसरी बात हम यह देखते हैं कि परमेश्वर का वचन किस प्रकार से बना हुआ है अर्थात इसमें क्यों और क्या शामिल है? यह हमारे पास सम्पूर्ण बाइबल के रूप में है, जिसमें कि पुराना और नया नियम शामिल है। परमेश्वर ने इसे लिखवाया तथा हमारे पास यह लिखित रूप में है। (इब्रानियों 1:1-2)। प्रेरित पौलुस कहता है कि, "हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने, और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।" (2 तीमु. 3:16-17)। इसलिये जब हम परमेश्वर के वचन को पढ़ते हैं तथा इसका अध्ययन करते हैं तब हमारे भीतर विश्वास उत्पन्न होता है और विश्वास करके हम उसको कार्यरूप देते हैं।

चौथे स्थान पर हम यह देखेगें कि क्या परमेश्वर ने किसी और तरह से अपने वचन को मनुष्यों पर प्रगट किया है या बाइबल के अतिरिक्त कोई और प्रकाशन हमें दिया है? नहीं ऐसा नहीं है, आज परमेश्वर लोगों से स्वर्गदूतों के द्वारा या प्रकाशनों के द्वारा तथा सपनों के द्वारा बातचीत नहीं करता और न ही मनुष्य से सीधे सामने आकर बात करता है। आज लोग बहुत से दावें करते हैं परन्तु परमेश्वर का वचन कहता है कि उसके वचन में हम न जोड़े और न उसमें से कुछ निकालें (प्रकाशित 22:18, 19)। पतरस यह भी कहता है कि जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, वह उसके ईश्वरीय सामर्थ ने हमें दिया है। (2 पतरस 1:3)। और प्रेरित पौलुस कहता है कि पवित्रशास्त्र हमें उपदेश देने समझाने और धर्म की शिक्षा देने में लाभदायक है। (2 तीमु. 3:16, 17)। याकूब कहता है कि यह स्वतंत्रता की सिद्धि व्यवस्था है। (याकूब 1:25)। पौलुस गलतिया नामक स्थान पर मसीहीयों से कहता है कि मैंने तुम्हें सुसमाचार सुनाया परन्तु यदि कोई और आकर दूसरी तरह का सुसमाचार सुनाता है तो वह परमेश्वर की ओर से स्त्रापित होगा; वह कहता है कि यदि कोई स्वर्गदूत भी दूसरा सुसमाचार देगा वो भी स्त्रापित होगा। अब जबकि यह बात सत्य है तो फिर क्यों कोई

यह दावा करता है कि उसे नया प्रकाशन मिला है? वास्तव में किसी को कोई और प्रकाशन नहीं मिला है। हमारे पास परमेश्वर का सिद्ध और सम्पूर्ण प्रकाशन है। यदि हम इस पर विश्वास करके इसकी शिक्षाओं को मानेंगे तब हमारा उद्धार होगा तथा हम अनन्त जीवन के योग्य होंगे।

पांचवी बात जो हम देखना चाहेंगे कि वो कितने विश्वास हैं जिनके पीछे हमें जाना है? पौलुस कहता है केवल एक विश्वास है। यदि हमारे पास एक बाइबल है तथा इसमें परमेश्वर का वचन है और हम सब इसमें विश्वास करते हैं तब इसका अर्थ यह हुआ कि हम एक ही बात में विश्वास करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि एक ही विश्वास है, परन्तु शायद कोई कहे कि ठीक है परन्तु हम सब इसे भिन्न-भिन्न रूप में देखते हैं तथा अन्त में अलग-अलग बातों में विश्वास करते है। क्या इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर ने हमें एक ऐसी पुस्तक दी है जिसे हम समझ नहीं सकते तथा इसके लिये हम उसे दोषी ठहराये और विभिन्न प्रकार की शिक्षाओं में विश्वास करें? इसमें कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर इसका जिम्मेदार नहीं है, क्योंकि यदि हम अलग-अलग बातों में विश्वास करते हैं तथा हमारी सोच यदि बाइबल के विपरीत है तो यह मनुष्य की अपनी ग़लती है। उससे यही पता चलता है कि कोई इस बात में विश्वास नहीं करता कि बाइबल क्या शिक्षा देती है।

छठवीं बात यह है कि क्या अन्त में इस बात से कोई फ़र्क पढ़ता है कि हम क्या विश्वास करते हैं? हमेशा एक बात हमें लोगों द्वारा सुनने को मिलती है कि इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आप क्या विश्वास करते हैं यदि आप ईमानदार हैं। हाँ, परन्तु याद रखिये कि हम ईमानदार होते हुए भी ग़लत हो सकते हैं। हम ईमानदारी के साथ यह भी विश्वास कर सकते हैं कि बिना यीशु में विश्वास किये हुए कि वह परमेश्वर का पुत्र है हमें उद्धार मिल सकता है। परन्तु क्या ऐसा सम्भव है? वास्तव में ऐसा नहीं है। वास्तविक्ता तो यह है कि आज हमारे चारों ओर कई तरह के विश्वास हैं, जिन में लोग विश्वास करते हैं वे ईमानदार हैं, परन्तु, फिर भी वे ग़लती पर हैं।

सातवीं बात यह है कि, क्या किसी का उद्धार केवल विश्वास से हो सकता है? बाइबल के अनुसार ऐसा संभव नहीं है। यह बात सत्य है कि विश्वास के विषय में बाइबल के कई पद बात करते हैं, जिनमें और बातों को शामिल नहीं किया गया है। कुछ लोग इससे यह निचोड़ निकालेंगे कि केवल विश्वास उद्धार करेगा। परन्तु जो लोग इस प्रकार का नीचोड़ निकालते हैं वे बाइबल का अच्छी तरह से अध्ययन नहीं करते और उन्होंने पहिले से ही यह धारणा बना रखी है कि केवल विश्वास कर लेने से उद्धार होता है। परन्तु यदि आप बारीकी से इसे देखें तब आप देखेंगे कि जिस विश्वास के विषय में वह कह रहा है वो है एक आज्ञा मानने वाला विश्वास। और भी कई बातें हैं जिन्हें परमेश्वर चाहता है कि उद्धार पाने के लिये हमें उन्हें मानना है। हम मन फिराव के विश्वास में देखते हैं, यीशु का अंगीकार करना पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना तथा अराधना करना, यह सब परमेश्वर की आज्ञाएं हैं। यदि आप वास्तव में परमेश्वर में विश्वास करते हैं तब आप उसे करेंगे जो वह आप से करने को कहता है। इब्रानियों का लेखक कहता है, "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों 11:6)। याकूब इसके विषय में कहता है, "हे मेरे भाइयों, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो उसे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है? यदि कोई भाई या बहिन नंगे उघाड़े हों, और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी हो। और तुम में से कोई उन से कहे, कुशल से जाओ, तुम ग़रम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिये आवश्यक हैं वह उन्हें न दे तो क्या लाभ? वैसे ही विश्वास भी यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है। वरन कोई कह सकता है कि तुझे विश्वास है, और मैं कर्म करता हूं, तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना तो दिखा; और मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊंगा। तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है: तू अच्छा करता है, दुष्टात्मा भी विश्वास रखते,

और थरथराते हैं पर हे निकम्में मनुष्य क्या तू यह भी नहीं जानता कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है?'' (याकूब 2:14-20)। इस सबसे यह निचोड़ निकलता है कि विश्वास हमें आज्ञा मानने की और ले जाता है। यदि किसी के पास इतना विश्वास नहीं है कि जो प्रभु उससे करने के लिये कह रहा है, और वह उसे नहीं करता तो इसका अर्थ यह हुआ कि उसका विश्वास मरा हुआ है।

आठवीं बात हमें यह देखनी है कि विश्वास हमें किस ओर ले जाता है? यह हमें दिखाता है कि हमारा विश्वास केवल एक परमेश्वर में होना चाहिए। विश्वास हमें यह दिखाता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। (यूहन्ना 14:1)। हमें अपने पापों से मन फिराना है (लूका 13:3), तथा विश्वास के द्वारा ही हम यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानकर उसका अंगीकार करते हैं (मत्ती 10:32)। और यही विश्वास हमें बपतिस्में की ओर ले जाता है। क्योंकि यीशु ने कहा था, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा'' (मरकुस 16:16) यीशु यह चाहता है कि यदि हम उसमें विश्वास करते है तो हमारा विश्वास ऐसा होना चाहिए कि हम उसकी आज्ञा को मान सकें।

प्रभु में हमारे विश्वास का परिणाम यह होगा कि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे तब वह हमारा उद्धार करेगा और हमें कलीसिया या मण्डली में मिलायेगा। उसकी सन्तान होने के नाते हम निरन्तर उसमें विश्वास करते हुए उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। यीशु ने कहा था यदि हम मृत्यु तक विश्वास योग्य बने रहेंगे तो वह हमें जीवन का मुकुट देगा। (प्रकाशित 2:10)।

पाठ 9 | बपतिस्मा

हम बाइबल के कुछ प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास कर रहे हैं। यह प्रश्न विभिन्न प्रकार के बाइबल से समबन्धित विषयों पर आधारित हैं। हमारी आशा है कि इन बातों का उचित उत्तर देने के हम योग्य होंगे। हमारी इच्छा सत्य को सिखाने की है तथा जो भी बातें हम आपको बताना चाहते हैं वे आपके लिये लाभकारी होगी और यदि आपके पास कोई प्रश्न है तो आप हमें भेज सकते हैं।

इस पाठ में जिस विषय का हम अध्ययन करेंगे वो है ''बपतिस्मा''। हम चाहते हैं कि इस विषय के बारे में आपसे इसलिये बात करें क्योंकि हमारे पिछले पाठों में हमने सुसमाचार के बारे में बात की थी। इस बात को अच्छी तरह से जानना आवश्यक है कि बपतिस्मा क्या हैं? और इसके द्वारा हमें पता चलेगा तथा हमें यह जानने में सहायता मिलेगी, कि बपतिस्में का उद्देश्य क्या है? बपतिस्मा शब्द युनानी भाषा के ''बैपटिज़ों'' से आया है तथा इसका अर्थ है, गाड़े जाना, डूबोना, तथा पूर्ण रूप से ढक जाना। आईये बाइबल की ओर जायें और देखें कि बाइबल इसके विषय में क्या कहती है?

प्रेरित पौलूस इस प्रकार से कहता है, ''और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे''। (कुलुस्सियों 2:12)

दूसरी बात हम यह देखते हैं कि क्या बपतिस्में का अर्थ सिर पर पानी छिड़कना या उंडेलना हो सकता है? या गाड़े जाने के अतिरिक्त यह कुछ और भी हो सकता है? ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि यदि हम युनानी भाषा के अनुसार देखें तथा बाइबल की शिक्षा तक सीमित रहें तो इसका अर्थ गाड़े जाना है। अब मनुष्य ने यह निश्चय कर लिया है कि बपतिस्मा पानी उंडेलकर तथा सिर पर पानी छिड़ककर भी दिया

जा सकता है, परन्तु प्रभु ने इसे उचित नहीं ठहराया है। जिनके सिर पर बचपन में पानी छिड़का गया था या बपतिस्मे के नाम पर पानी उंडेला गया था उन्हें यह समझना चाहिए कि उनका बपतिस्मा परमेश्वर के वचन अनुसार नहीं हुआ है। यदि हम मन से परमेश्वर की आज्ञा मानने जा रहे हैं तब हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हमें वहीं करना चाहिए जो परमेश्वर कहता है, और वो नहीं करना है जो मनुष्य सिखाता है। हमें परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए।

तीसरे स्थान पर हम यह देखते हैं, कि यदि कोई बपतिस्मा लेता है तो वह किस वस्तु में गाड़ा जाता है?। इसके लिये जब हम प्रेरितो के काम 8 अध्याय की ओर जाते हैं तो हमें वहां एक प्रचारक फिलिप्पुस के विषय में देखने को मिलता है जो इथिओपिया के एक व्यक्ति को यीशु का प्रचार कर रहा था। यहां हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है? फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है: उसने उत्तर दिया मै विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।'' (प्ररितों 8:36-39)। यहां हमने जो भी पढ़ा उसे देखकर हम बिना किसी सन्देह के कह सकते हैं कि बपतिस्मा जल में गाड़े जाना है। एक विशेष बात समझने की यहां यह है कि जब फिलिप्पुस ने उसे समझाया कि यदि वह प्रभु यीशु को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार करता है तो वह उसे बपतिस्मा देगा और जब उसने विश्वास करके अंगीकार किया तब वे दोनों जल में उतर पड़े। अब वे दोनों पानी के भीतर क्यों गए? यह इसलिये हुआ ताकि फिलिप्पुस उसे बपतिस्मा दे सके, क्योंकि बपतिस्मा गाड़े जाना है इसलिये उसने उसे वहां जल के भीतर गाड़ा अर्थात उसे बपतिस्मा दिया।

इस बात पर भी ध्यान दीजिये कि जब उसने खोजे को बपतिस्मा दिया तो उसके पश्चात वे दोनों जल में से ऊपर आये। परन्तु क्या यह जल वास्तव में जल ही था? भाषा से तो यहीं समझ में आता है कि यह वास्तव में जल ही था। भाषा से यह कतई नहीं भी लगता कि यह दूध या तेल था। इसलिये हमें यह समझना चाहिए कि यह केवल जल ही था, एक ऐसी वस्तु जिसके अंदर डूबा जा सके और बपतिस्मा लेने के पश्चात जो कि जल में गाड़े जाना है उसमें से बाहर आया जा सके। लेकिन शायद कोई यह जानना चाहता हो कि "यदि बपतिस्मा पानी में गाड़े जाना है तो फिर उस व्यक्ति का क्या होगा जो रेगिस्तान में है तथा प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेना चाहता है, और वहां मीलों तक पानी नहीं है?" यहां प्रेरितो 8 अध्याय में हमारे लिये बहुत अच्छा उदाहरण है जहां हमें कुछ इसी प्रकार की घटना का वर्णन मिलता है परन्तु यहां उस स्थान पर पानी उपलब्द्ध था तथा वह उसे वहां बपतिस्मा दे सका। परन्तु मैं यह पक्की तरह से कहना चाहूंगा कि जहां कहीं भी कोई व्यक्ति सच्चे मन से प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेना चाहता है तब वह पूरे प्रयत्न के साथ इसे करना चाहेगा, चाहे वह किसी रेगिस्तान में हो यहां कहीं भी हो, और चाहे आप विश्वास करें या न करें रेगिस्थान में भी कहीं न कहीं पानी उपलब्द्ध होगा। सच्चे मन से आज्ञा मानने वाला कभी बहाना नहीं बनायेगा। मेरे मित्र बहाने बनाने के बजाय हमें ऐसे तरीके खोजने चाहिये ताकि हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर सकें। परमेश्वर ने इस आज्ञा को दिया है तथा यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करें क्योंकि उसने यह आज्ञा दी है और यह उसकी दी हुई आज्ञा है तथा यदि हम उसकी आज्ञा को नहीं मानते तब हमें इसका उत्तर तो उसे देना पड़ेगा।

चौथी बात हम यह देखना चाहेंगे कि बाइबल के अनुसार आज कितने बपतिस्में हैं? हम यूहन्ना के बपतिस्में के विषय में पढ़तें हैं जोकि पानी में गाड़े जाना है। (मत्ती 3:13; यूहन्ना 3:23), पर हम प्रेरितों 19 अध्याय में पढ़तें है कि जिन्होंने यूहन्ना का बपतिस्मा लिया था उन्होंने पौलूस के समझाने पर यीशु का बपतिस्मा लिया था। हम दुखों के

बपतिस्में के विषय में भी पढ़ते हैं। (मत्ती 20:22), यीशु ने उस कटोरे को पीने की बात की थी जो दुखों से भरा हुआ था। फिर हम पढ़तें हैं कि इस्त्राएलियों ने बादल और संमुद्र में मूसा का बपतिस्मा लिया था। (1 कुरि.10:2)। और आगे चलते हुए हम पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के विषय में पढ़तें हैं तथा आग का बपतिस्मा जिसके विषय में यीशु ने बात की थी (मत्ती 3:11)। पवित्र आत्मा के बपतिस्में की प्रतिज्ञा प्रेरितों से की गई थी। उनसे कहा गया था कि वे पवित्र आत्मा से भर जाएंगे और पवित्र आत्मा उनकी अगुवाई करेगा तथा वे आश्चर्यक्रम करने के योग्य होंगे ताकि लोगों पर यह प्रमाणित हो सके कि वे परमेश्वर की ओर से भेजे गए हैं। आग का बपतिस्मा शैतान और दुष्ट लोगों के लिये हैं क्योंकि एक दिन उन्हें अनन्त दण्ड भोगना पड़ेगा जब वे आग की झील में डाले जाऐंगे। इसके पश्चात हमारे पास केवल एक बपतिस्मा है और वो है जल में गाड़े जाकर बपतिस्मा लेना। जो दूसरे बपतिस्में हमने देखे थे वे आये और चले गए परन्तु जल का बपतिस्मा अभी विद्यमान है जो लोग अपने पापों की क्षमा के लिये लेते हैं। और इसमें कोई सन्देह नहीं कि यीशु ने आग के बपतिस्में की बात की थी जो भविष्य में होगा जब दुष्ट लोग आग की झील में डाले जाऐंगे। परन्तु पौलूस ने 64 ई. सन में लिखा था कि केवल एक बपतिस्मा है (इफिसियों 4:5) तथा जब तक अन्त न आ जाए ये बपतिस्मा जारी रहेगा।

पांचवी बात हम यह देखते हैं कि इस बपतिस्में का उद्देश्य क्या है? यीशु ने कहा था, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा'' (मरकुस 16:16)। पतरस ने कहा था कि विश्वास करने वालों को अपना मन फिराना है तथा बपतिस्मा लेना है और ऐसा करने पर उनके पाप क्षमा होंगे। (प्रेरितों 2:38)।

वह यह बात भी कहता है, ''बपतिस्मा हमें बचाता है।'' (1 पतरस 3:21)। शाऊल से कहा गया था, ''उठ, बपतिस्मा ले और अपने पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)।

छटवें स्थान पर हम यह देखते हैं कि बपतिस्मा हमें किस प्रकार

से बचाता है या हमारा उद्धार करता है? वास्तव में केवल बपतिस्मा हमारा उद्धार नहीं करेगा। बपतिस्मा तब उद्धार करता है जब कोई व्यक्ति यीशु में विश्वास करता है, अपने पापों से मन फिराता है, यीशु का अंगीकार करता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है तथा फिर बपतिस्मा लेता है। (प्रेरितो 2 तथा 8 अध्याय) बपतिस्मा सुसमाचार की आज्ञा को मानने की प्रक्रिया का एक अंतिम कदम है।

सातवे स्थान पर हम यह देखते हैं कि बाइबल बपतिस्में के विषय में क्या कहती है? हम पढ़ते हैं कि जब कोई आज्ञा मानने की इस प्रक्रिया की अन्तिम आज्ञा को मानता है तब ऐसा करने से वह दिखाता है कि यीशु जिस प्रकार से मारा गया, गाड़ा गया तथा जी उठा उसी प्रकार से वो बपतिस्मा लेकर इस दृश्य को दिखाता है। (रोमियों 6:3,4)। अर्थात बपतिस्मा लेने के द्वारा हम अपने पापों के लिये मर जाते हैं, तथा पानी की कब्र में गाड़े जाते हैं। इसके द्वारा हमारे पाप धुल जाते हैं और हम यीशु के लहु के सम्पर्क में आ जाते हैं और फिर जीवन की एक नई चाल चलने के लिये तैयार हो जाते हैं। यह वो नया जीवन होता है जिसके विषय में यीशु ने कहा था'' (यूहन्ना 3:3,5)। प्रेरित पौलूस यह भी कहता है कि बपतिस्में के द्वारा हम यीशु को पहिन लेते हैं। (गलतियों 3:26,27)। तथा उसमें एक देह होकर हम उसकी कलीसिया के अंग बन जाते हैं। (1 कुरि. 12:13)।

क्या आपने प्रभु की आज्ञा को माना है? क्या आपने बाइबल के अनुसार बपतिस्मा लिया है? इस आज्ञा को परमेश्वर ने दिया है और हमें इसे मानना चाहिए।

पाठ 10 | कलीसिया

हमारा यह अध्ययन कलीसिया के विषय में होगा। इसके बारे में कुछ प्रश्नों को हम पूछेंगे तथा उन प्रश्नों के उत्तरों को भी देगें। हमारी आप से विनती है कि उन बातों को बड़ी गंभीरता से लें जिनका वर्णन हम इस पाठ में करेंगे।

सबसे प्रथम हम यह देखना चाहेंगे कि कलीसिया क्या है? क्या यह कोई इमारत है? या किसी प्रकार का क्लब है? बहुत कम लोग हैं जो यह जानते हैं कि चर्च या कलीसिया क्या है? बहुत से लोग कहते है कि हम चर्च जा रहे हैं अर्थात् उनका अर्थ किसी ईमारत से होता है। चर्च या कलीसिया शब्द यूनानी भाषा के शब्द ''एक्कलीसिया''से आया है जिसका अर्थ है ''बुलाए हुए लोग'' (रोमियों 1:1-7) वास्तव में इसका अर्थ है बुलाए हुए लोगों का एक झुण्ड'' यह इस बात को दिखाता है कि परमेश्वर के लोग संसार से उद्धार के लिये बुलाए हुए हैं। पाप भरे संसार से पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं, अंधकार से ज्योति में बुलाए गए हैं; शैतान के राज्य से यीशु के राज्य में बुलाए गए हैं। अपने पिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए यीशु ने कहा था अर्थात अपने चेलों के विषय में उसने यह शब्द कह थे, ''मैं ने तेरा वचन उन्हें पहुंचा दिया है, और संसार ने उन से बैर किया क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। मैं यह विनती नहीं करता, कि तू उन्हें जगत् से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रखे। जैसे मैं संसार का नहीं वैसे ही वे भी संसार के नहीं। सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17: 14-16) यीशु ने यहां जगत का शब्द का इस्तेमाल दो रूप में किया है। एक तो यह कि जगत जो कि बुराईयों से भरा हुआ है। और दूसरा यह कि यह वो स्थान है या पृथ्वी जिस पर हम सब रहते हैं। और इसीलिये उसने कहा था कि उसके लोग जो बुराई से भरे जगत

में रहते हैं अर्थात् पृथ्वी पर यानि प्रेरित पौलूस ने यीशु की कलीसिया के विषय में कहा था, ''उसी ने हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' (कुलुस्सियों 1:13)।

दूसरी बात हम यह देखते हैं कि कलीसिया को दो रूपों में वर्णित किया गया है। स्थानीय कलीसिया तथा विश्वव्यापी कलीसिया। सबसे पहले इसे विश्वव्यापी रूप में बोला गया है जब यीशु ने कहा था कि, ''मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा'' (मत्ती 16:18)। जब यीशु ने यह बात कही थी, तो वह इसे स्थानीय कलीसिया के रूप में नहीं बोल रहा था, उसका अर्थ था विश्वव्यापी कलीसिया से। दूसरा हम यह देखते हैं कि वह स्थानीय कलीसिया के विषय में बोल रहा था। पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया के विषय में कहा था। (1 कुरि. 1:1, 2); जैसे कि थिस्मलुनिका की कलीसिया (1 थिस्स 1:1)। जब कोई किसी स्थान पर रहते हुए उस स्थान पर सुसमाचार का पालन करके बपतिस्मा लेता है तो वह वहां स्थानीय कलीसिया का सदस्य बन जाता है तथा उस कलीसिया में अराधना करता है तथा कलीसिया के साथ कार्य करता है। तथा जहां कहीं भी वह जाता है वह उस स्थान पर मसीह की कलीसिया के साथ अराधना करता है। और यह इसलिये है क्योंकि वह उस कलीसिया का सदस्य है जो पूरे संसार में विद्यमान है।

तीसरी बात हम यह देखना चाहेंगे कि कौनसे और ऐसे रूप हैं जिनके द्वारा कलीसिया को दर्शाया गया है? यह बात तो है कि इसे इस तरह से बताया गया है कि यह उद्धार पाये हुए लोगों से बनी हुए हैं। पिन्तेकुस्त के दिन जब पतरस तथा प्रेरितों ने एक बड़ी भीड़ को सुसमाचार का प्रचार किया था, तब लगभग 3000 लोगों ने सुसमाचार का पालन किया था तथा उनका उद्धार हुआ था। (प्रेरितों 2:38-41)। फिर हम पढ़ते है ''और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था'' (प्रेरितों 2:47)। कलीसिया को मसीह की देह भी कहा जाता है या इसे मसीह की आत्मिक देह भी कहते हैं। प्रेरित पौलुस 1 कुरिन्थियों 12 अध्याय में शारीरिक देह तथा आत्मिक देह की आपस में तुलना करता है और फिर वह कलीसिया की बात करते

हुए कहता है "इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो और अलग-अलग उसके अंग हो।" (1 कुरि. 12:27)। फिर हम देखते हैं कि कलीसिया को परमेश्वर का परिवार भी बोला गया है। (1 तीमु. 3:15)। इसको परमेश्वर का राज्य भी कहा गया है तथा यीशु का राज्य भी।(यूहन्ना 3:3, इफिसियों 5:5)।

चौथी बात हम देखना चाहेंगे कि कलीसिया के पहचान के चिन्ह क्या है? पहली बात यह है कि यीशु ने कहा था "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।" (मत्ती 16:18) दूसरी बात यह है कि यीशु ने केवल एक कलीसिया को बनाया था। प्रश्न यही है कि उसने कितनी कलीसियाएं बनाई थी? केवल एक (इफिसियों 4:4)। तीसरी बात हम देखते हैं कि कलीसिया का आरम्भ यरूशलम में हुआ था। इस बात की भविष्यद्वाणी हुई थी कि इसका आरंभ यरूशलेम में होगा। (यशायाह 2:1-3; योएल 2:28; 29)। जब हम प्रेरितों 1:8 की ओर जाते हैं तो वहां हम देखते हैं कि यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि वे पृथ्वी के छोर तक उसके गवाह होंगे। प्रेरितों 2 अध्याय में हम देखते हैं कि प्रेरितों ने यरूशलेम में सुसमाचार प्रचार करना आरंभ किया और उस दिन लगभग तीन हज़ार लोगों ने प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लिया और यह यरूशलेम में कलीसिया की शुरूआत थी।

चौथी बात हम यह देखते हैं कि कलीसिया का आरंभ 33 ई. सन् में हुआ था। प्रेरितों 2 अध्याय की ओर जाकर हम देखते हैं कि प्रेरित लोग यरूशलेम में पिन्तेकुस्त के दिन सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं। प्रभु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के पचास दिनों के पश्चात् लगभग 33 ई. सन् में कलीसिया की स्थापना हुई थी।

पांचवी बात यह है कि यीशु अपनी कलीसिया की नींव है। पतरस के यीशु का अंगीकार करने के पश्चात् कि वह परमेश्वर का पुत्र है, प्रभु ने पतरस से कहा था "कि इस चट्टान या अंगीकार पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।" (मत्ती 16:16-18)। प्रेरित पौलुस ने कहा था, "क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है: कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता।" (1 कुरि. 3:11)। इसलिये कलीसिया

यीशु मसीह के उपर बनी है और इसी वास्तविकता पर इसकी नेंव पड़ी है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। यह बात आज भी उतनी सत्य है जितनी उन दिनों में सत्य थी। यदि कोई यीशु को झूठा ठहराये तो कलीसिया कभी भी स्थिर नहीं रह सकेगी परन्तु यीशु को कोई झूठा नहीं ठहरा सकता। यदि कोई भी धार्मिक संगठन मनुष्यों की शिक्षाओं पर आधारित है और मनुष्यों की शिक्षाओं पर चलता है तो वह मसीह की कलीसिया नहीं हो सकता तथा एक दिन वह समाप्त हो जाएगा।

छटवीं बात यह है कि यह कलीसिया प्रभु का नाम अपने उपर रखती है। हम रोमियों 16:16 में मसीह की कलीसियाओं के विषय में पढ़ते हैं। क्योंकि विभिन्न स्थानों पर मसीह की मण्डलियां विद्यमान थीं। कुरि. 12:27 में प्रेरित पौलुस यीशु की देह की बात करता है, जो कि मसीह की कलीसिया है। (कुलु. 1:18; इफि. 1:22, 23)। व्यक्तिगत रूप से भी कलीसिया के सदस्य प्रभु यीशु का नाम अपने उपर रखते थे क्योंकि वे मसीही कहलाते थे। (प्रेरितों 11:26; 1 पतरस 4:16)। परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि उद्धार यीशु के नाम में हैं। (प्रेरितों 4:12)। हम यह भी पढ़ते हैं कि हमें सब कुछ उसके नाम में करना चाहिए (कुलु. 3:17) कैसे कोई कलीसिया या यीशु का चेला यह दावा कर सकता है कि वह प्रभु से सम्बंध रखता है जबकि वह उसका नाम तक अपने उपर नहीं रखता?

सातवीं बात जो हम देखते हैं वो यह है कि यीशु कलीसिया का सिर है। प्रेरित पौलुस ने इसे इस प्रकार से कहा था, "क्योंकि पति-पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है। (इफिसियों 5:23) इसी बात को कुलुस्सियों 1:18 तथा इफिसियों 1:22, 23 में भी कहा गया है। आठवीं बात यह है कि यीशु देह या कलीसिया का उद्धारकर्त्ता है। (इफिसियों 5:23)। प्रेरितों के काम 2:47 में लिखा है कि प्रभु उद्धार पाये हुओं को कलीसिया में मिलाता है। कौन मिलाता है और किसने उनका उद्धार किया है? यीशु ने। यदि उनका उद्धार हुआ है तो वे कहां है? वे कलीसिया में हैं। परन्तु यदि वे कलीसिया में नहीं हैं तब इसका

अर्थ है उनका उद्धार नहीं हुआ हैं।

नवीं बात हम यह देखते हैं कि यीशु ने कलीसिया के लिये अपने प्राणों को दिया तथा अपने लहू से इसे खरीदा है। इफिसियों 5:25 में पौलुस कहता है कि यीशु ने कलीसिया के लिये अपने आपको दे दिया। एक स्थान पर उसने कलीसिया के ऐल्डरों को लिखते हुए कहा था, "इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो; जिस में पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है। (प्रेरितों 20:28) इसलिये कलीसिया बहुत महत्त्वपूर्ण है तथा यदि कोई उद्धार पाकर स्वर्ग में जाना चाहता है तो उसे इसका सदस्य होना चाहिए। कलीसिया उद्धार नहीं करती परन्तु यीशु उद्धार करता है और जो भी उद्धार पाता है प्रभु उसे अपनी कलीसिया में मिलाता है, इसलिये कलीसिया उद्धार पाये हुओं से मिलकर बनी है तथा प्रभु यीशु उद्धार पाये हुओं को स्वर्ग में स्थान देगा (यूहन्ना 14:1-3; इफिसियों 5:23-27)।

पाठ 11 | कलीसिया का संगठन

परमेश्वर के वचन से हम एक बहुत महत्त्वपूर्ण अध्ययन इस पाठ में करेंगे। हमारा पाठ होगा कलीसिया के संगठन के विषय में। जैसे कि अक्सर हम करते हैं वैसे ही हम इस पाठ में भी प्रश्नों का उत्तर देगें। बाइबल के अनुसार कलीसिया का संगठन क्या है? इस पर हम विशेष ध्यान देगें।

हर एक आफ़िस, बिज़नेस, स्कूल तथा सब स्थानों में एक संगठन होता है ताकि वहां का कार्य सुचारू रूप से चल सके। सबसे पहिले हम यह देखना चाहगें कि कलीसिया किस प्रकार से संगठित है? यीशु ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह अपनी कलीसिया को बनायेगा। (मत्ती 16:18; इफि. 4:4)। कलीसिया उन लोगों से मिलकर बनी है, जिन्होंने प्रभु की आज्ञा को माना है तथा यीशु ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिलाया है। (प्रेरितों 2)। एक और तरह से हम इसे कह सकते हैं कि कलीसिया इस पृथ्वी पर मसीह की आत्मिक देह हैं (इफि. 5:23-27)। यीशु कलीसिया का सिर है। (कुलु. 1:18) तथा पौलुस ने कहा था, ''क्योंकि पति-पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है। (इफि. 5:23) इसलिये परमेश्वर का वचन बिलकुल सफ़ाई से हमें यह बताता है कि कलीसिया को किसने बनाया तथा उसने कितनी कलीसियाएं बनाई और इसका सिर कौन है?

कलीसिया में पुरुषों का क्या कार्य है? तथा वे किस प्रकार से इसके संगठन को बनाते हैं? सबसे पहिले हम यह देखते हैं कि कलीसिया विश्वव्यापी है तथा सारे संसार में फैली हुई है। कलीसिया कई हजार मण्डलियों से मिलकर बनी हुई है। यह मण्डिलयां गांव, शहरों में फैली हुई है। विश्वव्यापी रूप में तथा स्थानीय रूप में यीशु कलीसिया का सिर है। कलीसिया के लोग जो अगुवाई करते हैं वे

स्थानीय रूप में कार्य करते हैं। कलीसिया का कोई हैड ऑफिस इस पृथ्वी पर नहीं है। कलीसिया का सिर या मुखिया स्वर्ग में हैं। यह स्थान कोई मनुष्य नहीं ले सकता। कलीसिया में बहुत सारे सदस्य होते हैं तथा इनमें पुरुष, स्त्रियां, तथा जवान लोग होते हैं। इसमें भिन्न-भिन्न आयु के लोग होते हैं। प्रत्येक मण्डली आत्मनिर्भर होती है तथा उसके ऊपर दूसरी अन्य मण्डलियां अधिकार नहीं चलाती परन्तु यह सब आपस में मिलकर कार्य करती हैं। स्थानीय मण्डलियों के अपने प्रचारक तथा बाइबल टीचर होते हैं। इसके अतिरिक्त प्रभु चाहता है कि प्रत्येक कलीसिया में अपने प्राचीन या ऐल्डर तथा डीकन हो और यह लोग योग्यता अनुसार चुने जाते हैं। यह योग्यताएं हमें बाइबल में मिलती हैं। कलीसिया के सारे लोग प्राचीनों या ऐल्डरों के अधीन होते हैं। तथा सारे ऐल्डर यीशु के आधीन होते हैं।

अब हम यह देखना चाहेंगे कि ऐल्डर लोगों की योग्यताएं बाइबल के अनुसार क्या होनी चाहिए? इससे पहिले कि हम यह देखें कि उनकी योगयताएं क्या हैं हमें यह देखना चाहिए कि बाइबल अनुसार एक से अधिक ऐल्डर स्थानीय मण्डली में होने चाहिए। यदि किसी मण्डली में केवल एक ही योग्य ऐल्डर है तो वहां ऐल्डर नियुक्त नहीं किये जा सकते। जब तक कि वहां दूसरा योग्य सदस्य न आ जाए। प्रभु ने इस तरह से इस बात को इसलिये ठहराया है ताकि कलीसिया में कोई तानाशाही न करे। परन्तु पौलुस ने ऐल्डरर्स की योग्यताओं के विषय में इस प्रकार से लिखा है, ''यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष या ऐल्डर होना चाहता है, तो वह भले काम की इच्छा करता है। सो चाहिए कि अध्यक्ष निर्दोष और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, पहुनाई करने वाला और सिखाने में निपुण हो। पियक्कड़, या मारपीट करने वाला न हो; वरन कोमल हो और न झगड़ालू, और न लोभी हो। अपने घर का अच्छा प्रबंध करता हो, और लड़के वालों (अपने बच्चों को) सारी गंभीरता से आधीन रखता हो। (जब कोई अपने घर ही का प्रबंध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली क्यों कर करेगा? फिर यह कि वह नया चेला

न हो, ऐसा न हो कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए। और बाहरवालों में भी उसका सुनाम हो ऐसा न हो कि निंदित होकर शैतान के फंदे में फंस जाएं। (1 तीमु. 1:1-7)। बाइबल में बिशप शब्द भी ऐलडर के लिये इस्तेमाल हुआ है। बिशप या ऐल्डर को चरवाहा भी कहते हैं। यह एक ही प्रकार का कार्य करने वालों के अलग-अलग नाम हैं।

प्रेरित पौलुस तीतुस को भी ऐलडर या बिशप की योग्यताओं के विषय में लिखता है, ‘‘क्योंकि अध्यक्ष (बिशप या ऐलडर) को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए; न हटी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करने वाला, और न नीच कमाई का लोभी, पर पहुनाई करने वाला, भलाई का चाहने वाला, संयमी, न्यायी पवित्र, और जितेन्द्रीय हो। और विश्वास योग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे; कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके, और विवादियों का मुंह भी बंद कर सके। (तीतुस 1:7-9)।

जैसा कि आपने देखा कि एक ऐलडर या विशप बनने के लिये सबसे पहिले उसमें सेवा भावना की इच्छा होनी चाहिए। क्योंकि जब उस व्यक्ति में यह सब योग्यताएं होंगी तभी वह कलीसिया की अगुवाई अच्छी तरह से कर सकेगा। उस व्यक्ति को नैतिक रूप से अच्छा होना चाहिए तथा अपने परिवार की अच्छी देखभाल करने वाला होना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रत्येक मसीही में यह योग्यताएं होनी चाहिए परन्तु प्रत्येक मसीही ऐलडर नहीं बन सकता। बाइबल हमें कहीं पर भी यह नहीं सिखाती कि कभी कोई स्त्री ऐलडर बनी हो।

बाइबल हमें डीकनों के विषय में भी बताती है जिन्हें सेवक भी कहा जाता है। इनकी योग्यताओं के विषय में हम बाइबल में पढ़ते हैं। डीकन लोग ऐल्डर लोगों की अगुवाई में काम करते हैं। एक मण्डली में दो या अधिक डीकन होते हैं। डीकनों के बारे में भी पौलुस लिखते हुए कहता है, ‘‘वैसे ही सेवकों को भी गंभीर होना चाहिए, दो रंगी, पियक्कड़ और नीच कमाई के लोभी न हो पर विश्वास के भेद को

शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें। और यह भी पहिले परखें जाएं, तब यदि निर्दोष निकलें, तब सेवक का काम करें। सेवक एक ही पत्नी के पति हों और अपने बच्चों और अपने घरों का अच्छा प्रबंध करना जानते हों। क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने लिये अच्छा पद और उस विश्वास में, जो मसीह यीशु पर है, बड़ा हियाव प्राप्त करते हैं। (1 तीमु. 3:8-13)।

फिर से हम देखते हैं प्रेरित पौलुस सेवकों के विषय में कहता है कि सेवकों का नैतिक जीवन अच्छा होना चाहिए तथा अपना अच्छा परिवार होना चाहिए। उन्हें पैसे का लोभी नहीं होना चाहिए।

कलीसिया में सबसे बड़ी जिम्मेवारी अध्यक्षों या प्राचीनों की है तथा उसके पश्चात् सेवकों या डीकनों की जिम्मेवारी है। उसके बाद प्रचारक, बाइबल टीचर यह सब मिलकर अपनी जिम्मेवारियों को निभाते हैं। परमेश्वर ने कलीसिया के संगठन को इस प्रकार से बनाया है कि कोई अपने को दूसरे से ऊंचा न दिखा सके और यह चाहें गांव में हो या शहर में या किसी भी देश में जहां कहीं भी मसीह की कलीसिया विद्यमान है। जब बाइबल अनुसार बिशप, ऐलडर तथा डीकन या सेवक चुने जाते हैं तब कोई भी घूस देकर या चापलूसी करके इसमें से किसी कार्य को नहीं ले सकता। हम सब मसीहियों को ऐलडरों की अगुवाई में कार्य करना चाहिए तथा ऐलडर यीशु मसीह की आधीनता में रहकर कार्य करते हैं।

इन बातों के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है परन्तु जो बातें अभी हमने देखी है इनके द्वारा हमें यह पता लग सकता है कि वास्तव में मसीह की कलीसिया का संगठन क्या है?

यदि आप एक मसीही नहीं है तथा मसीह की कलीसिया के सदस्य नहीं है तब आपको विश्वास करना चाहिए और अपने पापों से मन फिराना चाहिए, यीशु को परमेश्वर का पुत्र अंगीकार करना चाहिए तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो प्रभु आपका उद्धार करेगा तथा आपको अपनी कलीसिया में मिलायेगा। (प्रेरितों 2)।

पाठ 12 | नाम

हमारी आशा है कि आप समय निकाल कर इस पाठ में दी गई बातों को ध्यान पूर्वक पढ़ेंगे। हम आपको बताना चाहते हैं कि हम आपके साथ बाइबल की बातों का अध्ययन करना चाहते हैं। हमें अच्छा लगेगा यदि आप हमें लिखकर बतायें, कि आपको यह अध्ययन कैसा लग रहा है? यदि कोई प्रश्न इस पाठ से सम्बंधित पूछना चाहते हैं तो हमें अवश्य लिखिये। आज हमारे पाठ का जो विषय है वो है कि जो नाम हम धार्मिक रूप से अपने ऊपर रखते हैं, अर्थात यीशु के चेले होते हुए उसका क्या महत्व है?

सबसे पहिले हम यह देखना चाहेंगे कि नाम महत्वपूर्ण क्यों हैं? अधिकतर लोग कहते हैं कि नाम कोई महत्वपूर्ण नहीं है। नाम धार्मिक रूप से कुछ भी हो उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। धार्मिक रूप में कोई भी नाम हो सब उचित है।

इससे पहिले कि हम इसे धार्मिक रूप में देखें हम इसे अपने खुद के व्यक्तिगत जीवनों में देखेंगे। हम देखते हैं कि हमारा कोई न कोई नाम है। क्या जिस नाम से आप जाने जाते हैं वह आपके लिये महत्वपूर्ण है? आपके नाम के विषय में कोई बुरा बोले तो आपको अच्छा नहीं लगता। कोई आपके नाम को नीचा दिखाये तो यह भी आपको अच्छा नहीं लगता। इसलिये हम देखते हैं कि माता-पिता भी अच्छे से अच्छा नाम अपने बच्चों को देते हैं। जब हम ईमानदारी से चलते हैं तथा हमेशा सच्चाई बोलते हैं तब लोग हमारे नाम को आदर देते हैं। परन्तु यदि हम बेईमान हैं, तथा चोरी चलाकी करते हैं तब हमारे नाम पर एक धब्बा लग जाता है। बुद्धिमान व्यक्ति सुलेमान अच्छे नाम के महत्व को बताता है कि अच्छा नाम क्यों महत्त्वपूर्ण है? उसने कहा था कि "बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है।" (नीतिवचन 22:1)। और फिर वह सभोपदेशक 7:1 में कहता है, "अच्छा नाम अनमोल इत्र से और

मृत्यु का दिन जन्म के दिन से उत्तम है।'' अच्छा नाम तथा अच्छा व्यवहार अच्छे जीवन के लक्षण है। और यही बात बुरे नाम तथा बुरे चरित्र वाले व्यक्ति पर भी लागू होती है। जब किसी के नाम पर धब्बा लग जाता है, शायद किन्हीं बुरे कार्यों के कारण तब उसके मित्र तथा साथी अपने मन में उसके लिये आदर (सम्मान) खो देते हैं। किसी व्यक्ति के पास शायद बहुत सारा धन हो, परन्तु यदि उसके नाम पर धब्बा लगा है तो लोग उसकी इज़्ज़त नहीं करते। इसलिये हम यह कहना चाहेंगे कि नाम बहुत महत्त्वपूर्ण है। हमें प्रयत्न करना चाहिए कि हमारा नाम आदर के योग्य बना रहे।

परन्तु यदि यह बात हमारे शारीरिक नाम के विषय में सही है तब हमारे आत्मिक जीवनों के लिये भी यह कितनी महत्त्वपूर्ण होगी? यीशु के नाम के विषय में बात करते हुए प्रेरित पतरस ने कहा था, ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें। (प्रेरितों 4:12)। हम देखतें हैं कि उद्धार यीशु के नाम में है।

दूसरी बात हम यह देखते हैं कि क्यों उद्धार केवल यीशु के नाम में है? आइये देखें कि यह नाम इतना महत्त्वपूर्ण क्यों हैं? पौलुस इसके विषय में हमें बताता है, ''इस कारण परमेश्वर ने उसको (यीशु को) अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ट है कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेके। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।'' (फिलिप्पियों 2:9-11) फिर से वह कहता है, ''मैं इसी कारण उस, पिता के सामने घुटने टेकता हूं, जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर हर एक घराने का नाम रख जाता है। (इफ़िस्सियों 3:14-15)।

बाइबल के और भी बहुत से पद हैं जो प्रभु के नाम पर ज़ोर देते हैं कि यह नाम महत्त्वपूर्ण हैं। प्रेरित पौलुस ने कुलुस्सियों 3:17 में लिखते हुए कहा था, ''और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का

धन्यवाद करो। इब्रानियों का लेखक यीशु के विषय में कहता है, ''और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उसने उन से बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया'' (इब्रानियों 1:4)। पौलूस ने लिखा था'' तोभी परमेश्वर की पक्की नेव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है, कि प्रभु अपनों को पहिचानता है; और जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे।'' (2 तीमु. 2:19)। यीशु ने कहा था, ''यदि हम उसे मनुष्यों के सामने मान लेगें तब वह भी स्वर्ग में अपने पिता के सामने हमारा अंगीकार करेगा।'' (मत्ती 10:32)। इथिओपिया के व्यक्ति ने मन से प्रभु में विश्वास किया तथा बपतिस्मा लेकर प्रभु की आज्ञा को माना। (प्रेरितों 8:37)। याकूब कहता है कि क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा नहीं करते जिसके तुम कहलाये जाते हो। (याकूब 2:7)। यूहन्ना कहता है उसके नाम के द्वारा हमारे पाप क्षमा होते हैं। (यूहन्ना 2:12)।

अब इस सबसे हमें, क्या पता चलता है? यह हमें बताता है कि प्रभु का नाम कितना महान है और उद्धार केवल उसी के नाम में है। और उद्धार पाने के लिये उस नाम का अंगीकार करना बहुत आवश्यक है इसलिये जो हम करते हैं उसके नाम में करें ताकि इसके द्वारा उसके नाम का आदर हो।

तीसरी बात यह है कि उसका नाम हम कैसे पहिनते हैं? जब हम परमेश्वर में विश्वास करते हैं उसके पुत्र यीशु में विश्वास करके उसके नाम का अंगीकार करते हैं, अपने पापों से मन फिराते हैं तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेते हैं तब प्रभु हमारा उद्धार करता है तथा अपनी कलीसिया में हमें मिलाता है। (मरकुस 16:15, 16; मत्ती 10:32; प्रेरितों 2:38,47)। यीशु तथा उसकी कलीसिया की तुलना एक पति-पत्नी से की गई है। यीशु दुल्हा है तथा कलीसिया उसकी दुल्हन के समान है। जब किसी पुरुष की शादी होती है तो उसकी पत्नी अपने पति का नाम अपने उपर रखती है। इसी प्रकार से यीशु की दुल्हन अर्थात् कलीसिया यीशु का नाम अपने ऊपर रखती है। इसका अर्थ यह हुआ कि मसीह की कलीसिया के सदस्य यीशु का नाम अपने ऊपर

रखते हैं या उसका नाम पहिनते हैं। इफिसियों 5:23-27; रोमियों 7:1-4; प्रकाशित 19:7; प्रकाशित 21 तथा 22:17)।

चौथे स्थान पर हम देखेंगे कि कलीसिया का नाम क्या होना चाहिए? क्योंकि यीशु ने इसे बनाने की प्रतिज्ञा की थी, उसने इसे बनाया अर्थात वह इसका संस्थापक है। इसके लिये उसने अपनी जान दी, वह इसका उद्धारकर्ता है और यह उसका नाम अपने ऊपर रखती है। और इसे मसीह की कलीसिया, मसीह की देह तथा मसीह का राज्य कहकर बुलाया जाता है। इस सबका अर्थ है प्रभु की अपनी कलीसिया या मण्डली अर्थात उसके अपने लोग, तथा किस प्रकार उनका सम्बंध यीशु से है। कलीसिया को परमेश्वर का परिवार भी कहा गया है, परमेश्वर का राज्य तथा परमेश्वर की कलीसिया यानि जिसका सम्बंध मसीह से है उसका पिता परमेश्वर के साथ भी सम्बंध है।

जब हम रोमियों 16:16 की ओर जाते हैं हम देखते हैं कि प्रेरित पौलुस लोगों से कहता है कि, ''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार'' यीशु की कलीसिया, यदि यह उसकी नहीं है, तब यह किसकी है? यदि हम प्रभु यीशु का नाम अपने उपर नहीं रखते तब किसका नाम हम अपने उपर रखेंगे? प्रभु यीशु से अच्छा और कौन-सा नाम हो सकता है जिसे हम अपने उपर रखें? क्या किसी मनुष्य का नाम यीशु के बराबर हो सकता है जिसके द्वारा हम जाने जायें?

आप और मैं, जानते हैं कि जब किसी की शादी होती है तो पत्नी अपने पति का नाम अपने उपर रखती है। इसका अर्थ यह हुआ कि पत्नी का सम्बंध अपने पति से है। जब वह अपने पति का नाम अपने उपर रखती है तो इसके द्वारा वह उसका आदर करती है। नाम का बहुत महत्व है। जब हम घर या कार खरीदते हैं तो उसको अपने नाम पर खरीदते है यह दिखाने के लिये कि हम उसके मालिक है। और यही बात इस सम्बंध पर भी लागू होती है। जब हम उसका नाम अपने ऊपर रखते हैं तब यह दिखाते हैं कि हमारा सम्बंध उससे है अर्थात इसके द्वारा हम उसका आदर करते हैं क्योंकि उसका नाम सब नामों में श्रेष्ट है।

पांचवीं बात यह है कि व्यक्तिगत रूप से यीशु के अनुयायी होते हुए हम किस नाम से जाने जाते हैं? जब हम बाइबल में से देखते हैं तो हमें पता चलता है कि चेले अन्ताकिया में सबसे पहिले मसीही कहलाये थे। (प्रेरितों 11:26)। तब पतरस ने उनसे कहा, ''पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे।'' (1 पतरस 4:16)

परन्तु किस प्रकार का मसीही? शायद आप पूछें कौन-सा वाला मसीह? कैथोलिक या प्रोटैस्टन्ट?। परन्तु मित्रों मसीहीयों में किस्में नहीं होती। मसीही यानि केवल मसीही। और यही प्रभु हमसे चाहता है। उसका नाम पहिनकर ही हम एक मसीही होते हैं तथा ऐसा करने के द्वारा हम उसका आदर करते हैं।

आप किस नाम से जाने जाते हैं? क्या आप मसीह की कलीसिया के सदस्य हैं? यदि नहीं तो इसके विषय में गंभीरता से विचार कीजिये।

पाठ 13 | एकता

सवालों और उनके जवाबों की हमारी यह बाइबल शृंखला चल रही है और अपने इस पाठ में आज हम एकता के विषय में देखेंगे तथा यह भी देखेंगे कि यीशु के साथ हमारा एकता में रहना या चलना इसका क्या अर्थ है?

सबसे पहिले तो हम यह देखना चाहेंगे कि एकता शब्द का अर्थ क्या हैं? इसका अर्थ है एक होना, पूर्ण होना तथा सम्पूर्ण होना। अर्थात् यह विभाजन तथा गड़बड़ी के बिल्कुल विपरित हैं।

दूसरी बात हमें यह देखनी चाहिए कि बाइबल के अनुसार एकता में होने का क्या अर्थ है? हम जानते हैं कि परमेश्वर, यीशु तथा पवित्र आत्मा एक हैं। (मत्ती 28:19-20)। ईश्वरत्व में तीन व्यक्ति हैं, परन्तु यह तीनों एक हैं। अर्थात वे एकता में होकर केवल एक हैं। जब यीशु पिता से अपने चेलों के लिये प्रार्थना कर रहा था, उसने इस प्रकार से कहा था, ''जैसा तू हे पिता मुझमें है, और मैं तुझ में हूं वैसे ही वे भी हम में हो, इसलिये कि जगत प्रतीति करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।'' (यूहन्ना 17:21)। तब बाइबल में हमें सिखाती है, जैसा कि हमने यूहन्ना -17:21 में देखा है कि प्रभु के लोगों को अर्थात मसीहीयों को एक होना चाहिए। तथा परमेश्वर के परिवार यानि कलीसिया में एकता होनी चाहिए। परमेश्वर तथा कलीसिया के विषय में बात करते हुए पौलुस कहता है, ''सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सबका एक ही

परमेश्वर और पिता है, जो सबके उपर और सब के मध्य में, और सब में हैं।" (इफि. 4:1-6)।

तीसरे स्थान पर हम देखते हैं कि जब कलीसिया के विषय में बात होती है तब एकता के बारे में बाइबल क्या कहती है? हां, इसके विषय में हम बहुत कुछ देखते हैं। अपने इस अध्ययन में हम इन सारी बातों को नहीं देख पाएंगे, परन्तु हम कुछ खास बातों को देखेंगे। हम देखते हैं कि यीशु ने अपनी कलीसिया को बनाने का वायदा किया था यानि, अपनी एक कलीसिया। हम पढ़ते हैं कि जब पतरस तथा प्रेरितों ने यह अंगीकार किया कि, यीशु परमेश्वर का पुत्र है, "और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसियां बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:18)। वास्तव में वह यह कह रहा था कि इस अंगीकार पर जो उसने यीशु के विषय में किया था कि वह परमेश्वर का पुत्र है, तथा एक चट्टान है (2 कुरि. 3:11), वह अपनी कलीसिया बनाएगा, कलीसियाएं नहीं बल्कि अपनी एक कलीसिया। इसलिये उसने केवल एक कलीसिया को बनाया। परमेश्वर के वचन में हम कहीं भी नहीं पढ़ते कि उसने दो या उससे अधिक कलीसियाएं बनाई हों। आज मसीह की कलीसियाएं अनेकों स्थानों पर विद्यमान हैं तथा संसार के कई स्थानों पर यह कलीसिया पाई जाती है। एक समय था जब कुरिन्थ नामक स्थान पर एक कलीसिया में विभाजन की बात हो रही थी परन्तु यह प्रभु की आज्ञा के विरोध में हो रहा था (1 कुरि. 1)।

कई और ऐसी बातें हैं जो हमें कलीसिया की एकता के विषय में बताती है। बाइबल हमें बताती है कि कलीसिया की केवल एक ही नींव है और वह है प्रभु यीशु मसीह। (1 कुरि. 3:11), यीशु कलीसिया का सिर है। (कुलु. 1:18); यीशु इस कलीसिया का उद्धारकर्ता है। (इफि. 5:23)। उद्धार केवल यीशु के नाम में है (प्रेरितों 4:12) कलीसिया में प्रवेश करने का केवल एक ही तरीका है और वह है बपतिस्मा लेना। (रोमियों 6:3,4; गलतियों 3:26-27),

केवल यीशु ही स्वर्ग में जाने का मार्ग है। (यूहन्ना 14:6)।

चौथी बात यह है कि क्या एकता लाने के लिये आप कुछ बता सकते हैं? उदाहरण के लिये हम देखते हैं कि यीशु ने कहा था कि मैं दाखलता हूं और तुम डालियां हो। अर्थात एक दाखलता परन्तु बहुत सारी डालियां। यहा देखते हैं कि वचन में यीशु ने यह कहा था, ''सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है। जो डाली मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले। तुम तो उस वचन के कारण जो मैंने तुम से कहा है शुद्ध हो। तुम मुझमें बने रहो, और मैं तुम में; जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूं तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता है और सूख जाता है और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती है। यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगों और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। (यूहन्ना 15:1-8)। यहां वह किसके विषय में बात कर रहा हैं? दाखलता प्रभु यीशु है तथा डालियां मसीही लोग हैं। कितनी दाखलता हैं? केवल एक। और यह बात ध्यान देने योग्य है कि डालियां दाखलता के साथ जुड़ी रहे तथा उन्हें फल लाने की आवश्यकता है। इसी प्रकार से मसीही लोग भी यीशु में बने रहकर उसका कार्य कर के अपने आपको अनन्त जीवन या उद्धार के योग्य बनाते हैं।

दूसरा उदाहरण एकता के विषय में हमें यूहन्ना 10 अध्याय में मिलता है। यहां यीशु भेड़शाला की बात कर रहा है। एकता में आने के लिये तथा भेड़शाला में प्रवेश करने के लिये केवल एक मार्ग या द्वार है और वह है प्रभु यीशु मसीह जो कि एक अच्छा चरवाहा है।

जो भेड़ों का झुण्ड है वो है कलीसिया। एक द्वार का अर्थ है कि कलीसिया में प्रवेश का केवल एक मार्ग, अर्थात प्रभु यीशु मसीह और उसकी आज्ञाएं, और जो भेड़ें हैं वो है सारे मसीही लोग या यीशु के अनुयायी।

तीसरा उदाहरण हमें 1 कुरि. 12 अध्याय में मिलता है जहां प्रेरित पौलुस कलीसिया की तुलना एक देह से करता है। पौलुस कहता है, "क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है, और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह है। उसी प्रकार मसीह भी है। क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सबको एक ही आत्मा पिलाया गया। इसलिये कि देह में एक ही अंग नहीं परन्तु बहुत से हैं। यदि पांव कहे कि मैं हाथ नहीं, इसलिये देह का नहीं तो क्या वह इस कारण देह का नहीं? और यदि कान कहे; कि मैं आंख नहीं इसलिये देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं है। यदि सारी देह आंख ही होती तो सुनना कहां होता? यदि सारी देह कान ही होती, तो सूंघना कहां होता? परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक-एक करके देह में रखा है। यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहां होती? परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है, आंख हाथ से नहीं कह सकती, कि मुझे तेरा प्रयोजन नहीं और न सिर पांवों से कह सकता है कि मुझे तुम्हारा प्रयोजन नहीं। परन्तु देह के वे अंग जो औरों से निर्बल देख पड़ते हैं, बहुत ही आवश्यक है। और देह के जिन अंगों को हम आदर के योग्य नहीं समझते हैं उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं; और हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत शोभायमान हो जाते है। फिर भी हमारे शोभायमान अंगों को इसका प्रयोजन नहीं, परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है, कि जिस अंग को घटी थी उसी को और भी बहुत आदर हो। ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें। इसलिये यदि एक अंग दुख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुख पाते हैं; और यदि एक

अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं। इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो और अलग-अलग उसके अंग हो। (1 कुरि. 12:12-27)। अब वह यहां क्या कहने का प्रयत्न कर रहा है? वह यह कह रहा है, कि मनुष्य के शरीर में बहुत से अंग हैं और यह अंग एक दूसरे का विरोध नहीं करते,बल्कि यह सब एक साथ मिलकर कार्य करते हैं और एकता में होकर अपना कार्य करते है तथा जो मुखिया है अर्थात हमारा दिमाग़ उसके निर्देश पर सब करते हैं। यहां वह दिखाता है कि कलीसिया के सब सदस्यों को मिलकर एकता में होकर परमेश्वर के लिये कार्य करना चाहिए।

चौथा उदाहरण हमारे सामने यीशु की उस प्रार्थना के बारे में है जो उसने एकता के विषय में की थी। यीशु, परमेश्वर से अपने चेलों के लिये प्रार्थना करता है और प्रार्थना में उसने इस प्रकार से कहा था, "मैं उनके लिये बिनती करता हूं, संसार के लिये बिनती नहीं करता हूं परन्तु उन्हीं के लिये जिन्हें तूने मुझे दिया है क्योंकि वे तेरे हैं। और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है; और जो तेरा है वह मेरा है और इन से मेरी महिमा प्रगट हुई है। मैं आगे को जगत में न रहूंगा, परन्तु वे जगत में रहेंगे और मैं तेरे पास आता हूं, हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तूने मुझे दिया है, उनकी रक्षा कर कि वे हमारी नाई एक हो। जब मैं उन के साथ था तो मैंने तेरे उस नाम से, जो तूने मुझे दिया है, उनकी रक्षा की, मैं ने उनकी चौकसी की और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से कोई नाश न हुआ, इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो। परन्तु अब मैं तेरे पास आता हूं, और ये बातें जगत में कहता हूं कि वे मेरा आनन्द अपने में पूरा पाएं। मैंने तेरा वचन उन्हें पहुंचा दिया है और संसार ने उनसे बैर किया; क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। मैं यह बिनती नहीं करता, कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख। जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है"। (यूहन्ना 17:9-17) अब यहां यीशु किसके लिये प्रार्थना कर रहा है? अपने लोगों के लिए क्योंकि

वह चाहता है कि उसके लोग उसकी कलीसिया अर्थात मण्डली में एकता में होकर रहें।

पांचवीं बात हम देखते हैं कि उस धार्मिक फूट का क्या होगा जो सारे संसार में फैली हुई हैं? मसीही भाइयों को प्रेरित पौलुस लिखते हुए कहता है, क्योंकि वहां लोग कलीसिया में विभाजन कर रहे थे, "हे भाइयों, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक मन और एक ही मत होकर मिले रहो।" (1कुरि. 1:10)। पौलुस ने कहा था कि "उन लोगों को ताड़ लिया करो जो तुम्हारे बीच में फूट डालते हैं? और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं।" (रोमियों 16:17-18)।

छटवीं बात यह है कि आज सारे संसार में हज़ारों साम्प्रदायिक कलीसियाएं विद्यमान हैं तथा क्या वे यह नहीं सिखाते कि सबको अधिकार है कि वे क्या विश्वास करें तथा क्या वे सब कलीसियाओं के लिये परमेश्वर का धन्यवाद नहीं करते? यह बात सही है, परन्तु बात यह है कि यह सब लोग अपनी बात तो बोलते हैं परन्तु बाइबल के अनुसार उन बातों को नहीं बोलते जो यीशु ने सिखाई थीं यानि यीशु ने प्रार्थना की थी कि उसके लोग एक हों तथा आपस में बंटे हुए न हों। मित्रों क्या आज मसीहीयत बटी हुई नहीं है?

पाठ 14 | स्वर्ग का मार्ग

अपने इस पाठ में हम स्वर्ग के मार्ग के विषय में देखेंगे। अनेकों लोग इस विषय में अपना काफ़ी शोक दिखाते हैं तथा स्वर्ग के मार्ग के विषय में जानना चाहते हैं। हम देखेंगे कि बाइबल इसके विषय में क्या कहती है?

सबसे पहिले हम यह देखते हैं कि परमेश्वर का वचन स्वर्ग के मार्ग के बारे क्या कहता है? इस प्रश्न का उत्तर हम इस बात को मध्यनज़र रखते हुए देंगे कि बाइबल इसके बारे में क्या कहती है तथा मनुष्य का विचार क्या है? आज धार्मिक संसार में अनेकों लोगों का विचार यह है कि स्वर्ग में जाने के बहुत से मार्ग हैं। वे कहते हैं कि विभिन्न धर्मों के लोग विभिन्न मार्गों पर चल रहे हैं परन्तु वे सब एक ही स्थान पर जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। विभिन्न साम्प्रदायिक कलीसियाओं के लोग भी ऐसा ही कहते हैं परन्तु सब यह तो कहते हैं कि वे यीशु के द्वारा स्वर्ग में जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। विशेष बात यह है कि इन सब लोगों के लिये पहुंचने का ठिकाना अधिक महत्व रखता है। अर्थात् हम यह कह सकते हैं कि धार्मिक रूप से लोग कई तरीके की बातें करते हैं। चाहे कुछ भी हो अधिकतर लोग यही चाहते हैं कि वे स्वर्ग में जाएं।

दूसरी बात हम यह देखते हैं कि बाइबल इसके विषय में क्या कहती है? आईये यीशु के उन शब्दों को देखें जो उसने इसके विषय में कहे थे, उसने कहा था, "मार्ग और सच्चाई और जीवन में ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना 14:6)। इस बात पर ध्यान दीजिये कि उसने कहा था वह मार्ग है। वह कितने मार्गों की बात कर रहा है? केवल एक। कितने प्रभु मसीह हैं? केवल एक। और उसने कहा था कि वह स्वर्ग में जाने का मार्ग है। यह भाषा बिल्कुल स्पष्ट है, परन्तु फिर भी क्यों लोग इसे समझते नहीं हैं?

तीसरी बात यह है, क्या वह यह कह रहा है कि कोई किसी दिशा में भी जायें वे उसके द्वारा ही प्रवेश कर रहे हैं? मैं कहता हूं कि यह कैसे हो सकता है, जबकि परमेश्वर का वचन कहता है, ‘‘देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहे।’’ (भजन 133:1)। एक और प्रश्न दिमाग में आता है, ‘‘कि यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हो तो क्या वे एक संग चल सकेंगे’’? (आमोस 3:3)। परमेश्वर नहीं चाहता कि भाईयों के बीच झगड़ा हो अर्थात् वह चाहता है कि वे आपस में मिलकर रहे। (नीतिवचन6:16-18)। यीशु ने प्रार्थना की थी कि उसमें विश्वास करने वाले एक हों। (यूहन्ना 17:20-23)। तथा पौलुस ने कहा था, ‘‘हे भाईयों मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु हैं उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो।’’ (1कुरि; 1:10)। इस सबको देखते हुए क्या हम कह सकते हैं कि स्वर्ग में जाने के बहुत से मार्ग है? या केवल एक मार्ग है?

चौथे स्थान पर हम देखते हैं कि पौलुस ने परमेश्वर तथा यीशु के विषय में क्या कहा, था? इफिसियों 4:1-6 में वह कहता है, ‘‘सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है; एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के उपर, और सब के मध्य में और सब में है। अब इन सब में आप देखते हैं कि वह केवल एक ही बात करता है। वह दो या इससे अधिक की बात नहीं करता। अर्थात् एक का अर्थ है एक। मनुष्य के अनुसार बहुत से विश्वास हैं; बहुत से परमेश्वर हैं, प्रभु हैं, बपतिस्में हैं तथा बहुत सी कलीसियाएं हैं।

परन्तु बाइबल अनुसार यह कितने हैं? केवल एक। इसलिये स्वर्ग

में जाने का मार्ग भी केवल एक है। बाइबल यह भी कहती है कि मनुष्य के लिये एक बार मरना तथा उसके बाद एक न्याय का सामना करना निश्चित है।

पांचवी बात यह है, कि क्यों प्रभु स्वर्ग के बहुत सारे मार्ग मनुष्य को देगा? बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने अपना एकलोता पुत्र दिया ताकि वह क्रूस पर मारा जाये और पापी लोग अपने पापों से मुक्ति पा सकें। (यूहन्ना 3:16)। यीशु अपनी इच्छा से क्रूस की मृत्यु का सामना करना चाहता था ताकि मनुष्य का उद्धार हो सके और इसके लिये उसने अपना लहू भी बहाया। (रोमियों 5:8; इफि. 1:7)। क्यों परमेश्वर अपने एकलोते पुत्र को क्रूस पर मरने के लिये सारे संसार के लिये देगा यदि उद्धार पाने के अलग-अलग मार्ग हैं? क्या वह किसी को किसी और तरीके से उद्धार देगा तथा दूसरे को किसी और तरह से? क्या परमेश्वर मनुष्य को अपनी इच्छा अनुसार मार्ग चुनने को देगा? यह बात बड़ी विचित्र सी लगती हैं?

छटवीं बात हम यह देखते हैं कि यीशु ने इस बात पर ज़ोर क्यों दिया कि स्वर्ग में जाने का केवल एक मांग है? जैसा कि हमने देखा कि उसने सारे लोगों को उनके पापों से बचाने के लिये अपने प्राणों को दिया, इस बात को मध्यनज़र रखते हुए हम देखते हैं कि यीशु चाहता है कि उद्धार पाने के लिये उसके द्वारा दी गई शर्तों को माना जाए। परन्तु क्या यह माना जाए कि हमारा उद्धार केवल अनुग्रह तथा हमारे कार्यों द्वारा हैं? मेरे मित्र हम कुछ भी ऐसा नहीं कर सकते कि हम अपने उद्धार को कमा सकें। परन्तु प्रत्येक मनुष्य को प्रभु ने एक ही आज्ञा दी है कि उसे उद्धार पाने के लिये क्या करना है? यीशु ने कहा था, "जो विश्वास करें और बपतिस्मा लें उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:16)। वह यह भी कहता है कि उद्धार के लिये अपने पापों से मन फिराना तथा यीशु का अंगीकार करना आवश्यक है। (लूका 13:3; मत्ती 10:32)। जितने लोग जो उद्धार पाना चाहते हैं उन्हें यीशु की इन आज्ञाओं का पालन करना पड़ेगा। उद्धार देने के लिये प्रभु का सबके

लिये एक ही तरीका है। जब वह किसी का उद्धार करता है तो उसे अपनी कलीसिया में मिलाता है (प्रेरितों 2:47)। वह कभी भी अलग-अलग कलीसियाओं में लोगों को नहीं मिलाता। यीशु की केवल एक कलीसिया है तथा उसने इसे बनाया था और इसके लिये अपने प्राणों को दिया था। इसी अपनी कलीसिया में वह उद्धार पायें हुओं को मिलाता है। (मत्ती 16:18; इफि; 5:25; प्रेरितों 20:28)। तथा वह चाहता है कि सब उसकी आज्ञा मानने वाले लोग उसका नाम अपने उपर रखें (प्रेरितों 4:12; प्रेरितों 11:26)। यह सब लोग एक ही तरीके से अराधना करते हैं। (यूहन्ना 4:24)। और सब प्रभु के एक ही मार्ग पर चलते हैं। (मत्ती 7:13, 14)। केवल एक ही मार्ग है और वह है प्रभु यीशु का मार्ग।

सातवीं बात हम देखते हैं कि यीशु उनके विषय में क्या कहता है जो दूसरे मार्ग पर चलकर उद्धार पाना चाहते हैं? यीशु ने कलीसिया की तुलना एक भेड़शाला से की है, और इस भेड़शाला का वह चरवाहा है तथा इसके सदस्य उसकी भेड़ें हैं और उस भेड़शाला में प्रवेश का केवल एक द्वार है। यीशु ने इसके विषय में इस प्रकार से कहा था, ''मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु और किसी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है।'' (यूहन्ना 10:1) इसका अर्थ यह हुआ कि जो स्वर्ग में किसी और तरह से जाना चाहते हैं वे नहीं जा सकते। अब बाइबल उनके विषय में क्या कहती है जो किसी ओर मार्ग से स्वर्ग में जाना चाहते हैं? हम जानते हैं कि परमेश्वर का वचन इसके विरोध में है।

आखिरी तथा आठवीं बात यह है कि कोई यह क्यों कहेगा कि स्वर्ग में जाने के बहुत से मार्ग है? यदि वह ऐसा सोचता है तो वह यह नहीं जानता कि यीशु ने इसके विषय में क्या कहा है? उदाहरण के लिये वह ऐसी बात तब करेगा जब कि वह मसीह की कलीसिया का सदस्य नहीं है अथवा वह प्रभु यीशु का नाम अपने ऊपर नहीं रखता। ऐसे व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि वह प्रभु की इच्छा को मानेगा या मनुष्यों की शिक्षाओं को मानेगा? मनुष्य की शिक्षा को

मानने वाला यह प्रमाणित नहीं कर पायेगा कि यह बाइबल अनुसार है। बाइबल की शिक्षा के सामने उनकी शिक्षा खड़ी नहीं रह पायेगी।

मेरे मित्र हम आज किस मार्ग पर है? हमने देखा कि स्वर्ग में जाने का केवल एक मार्ग है। आप शायद सोचें कि हम लोगों की सोच बड़ी संकीर्ण है परन्तु सच्चाई यह है कि यीशु मार्ग और सच्चाई और जीवन है। (यूहन्ना 14:6)।

क्या आप उस एक मार्ग पर चल रहे हैं? मेरी आपसे बिनती है कि यदि आप ने इस मार्ग को नहीं जाना है तो इसे जानिए, यीशु में विश्वास कीजिए तथा उसकी आज्ञाओं को मानिये। प्रभु आपको अपनी कलीसिया में मिलायेगा तथा आपका उद्धार करेगा।

पाठ 15 | उपासना

अपने पाठों की इस श्रृंखला में हम कुछ प्रश्नों को पूछ रहे हैं तथा बाइबल से उनका उत्तर दे रहे हैं। इस पाठ में हमारा प्रश्न होगा अराधना के विषय में।

सबसे पहिले यह कि अराधना क्या है? इसका साधारण सा उत्तर है, महिमा करना, स्तुति करना, तथा महान परमेश्वर के प्रति हमारा आदर और भक्ति।

दूसरी बात यह है कि उपासना किसकी की जानी चाहिए? यह बात सही है कि मनुष्य को कभी मनुष्य की अराधना नहीं करनी चाहिए। शायद कई स्थानों पर आज ऐसा भी होता होगा। और न ही हमें प्राकृति की उपासना करनी है जैसे चांद, सूरज, वृक्ष, पशु-पक्षी, नदियां इतयादि। परमेश्वर यह भी नहीं चाहता कि हम बुत परस्ती करें। बहूत समय पहले परमेश्वर ने अपने लोगों से कहा था, ''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकश में वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं। (निर्गमन 20:3-5)

प्रेरित पौलुस ने अथेने नामक स्थान पर लोगों से कहा था कि वे मनुष्यों द्वारा बनाई गई वस्तुओं के सामने झुक रहे हैं और उसने उनसे कहा था कि उनकी उपासना एक अनजाने ईश्वर के लिये है। (प्रेरितों 17:23)

यीशु ने उपासना के विषय में कहा था, कि ''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।'' (यूहन्ना 4:24)। इस बात पर ध्यान दीजिये कि एक परमेश्वर है जिसकी उपासना होनी चाहिए, तथा उसकी उपासना आत्मा

और सच्चाई से होनी चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि यह सच्चाई तथा उसके वचन के अनुसार होनी चाहिए।

तीसरे स्थान पर हम यह देखते हैं कि किसे परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए? परमेश्वर चाहता है कि सब लोग उसकी उपासना करें परन्तु वास्तव में सारे लोग ऐसा नहीं करते। सब उसकी उपासना इसलिये नहीं करते क्योंकि वे उससे संबंध नहीं रखते। जब हम वचन की ओर जाते हैं तब हम देखते हैं कि, जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को माना है अर्थात जो मसीही बन गये हैं उन्हें परमेश्वर की इच्छानुसार उसकी उपासना करनी चाहिए। और यह वे उपासक हैं जिन्हें प्रभु चाहता है कि वे यूहन्ना 4:23-24 के अनुसार उपासना करें।

चौथी बात यह है कि क्या बाइबल विभिन्न प्रकार की उपासनाओं के विषय में बात करती है? पुराने नियम में लोग पशुओं का बलिदान करके उसकी उपासना करते थे, वे सबत के दिन को मनाते थे। एक समय था जब परमेश्वर अपने लोगों से चाहता था कि वे उसके लिये पवित्र स्थान बनायें जहां उसकी उपासना होनी थी तथा वहां याजक तथा महायाजक लोगों की अराधना में अगुवाई करेंगे। परमेश्वर ने कहा था वह उनसे वहां मिलेगा। बाद में हम देखते हैं कि लोगों ने परमेश्वर के लिये मन्दिर बनाया जहां उपासना होनी थी जिस प्रकार से पवित्र स्थान में होनी थी, परन्तु यह एक स्थायी मन्दिर यरूशलेम में बनाया गया था। जब यीशु मसीह आया तब उसने उपासना का वो तरीका बताया जो नये नियम के अनुसार होगा। मसीह के नये नियम अनुसार परमेश्वर हाथ के बनाये हुए मन्दिरों में नहीं रहता। पौलुस ने इस प्रकार से कहा था, " जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है। क्योंकि वह तो आप ही सबको जीवन और स्वास और सब कुछ देता है।" (प्रेरितों 17:24-25)। परमेश्वर के लोग अब जहां कहीं, भी हों उसकी उपासना कर सकते हैं तथा उसने वायदा किया है कि वह उनके बीच में उपस्थित होगा। (यूहन्ना 4:24; मत्ती 18:10)।

पांचवी बात है कि कौन से वो तरीके हैं जिनके द्वारा परमेश्वर की उपासना की जाती है? जैसा कि मैंने पहिले कहा था कि कुछ लोग हाथ से बनाई हुई वस्तुओं की उपासना करते हैं जैसे प्राकृति की कुछ वस्तुए। इसे ऐसी उपासना कह सकते हैं जो अनजाने में की जाती है। (प्रेरितों 17:23)। ऐसी उपासना परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं है। एक और प्रकार की उपासना जिसके विषय में प्रभु ने कहा है वो है व्यर्थ उपासना, मत्ती के 15:9 में यीशु ने कहा है: "और व्यर्थ में मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोंपदेश करके सिखाते हैं।"

व्यर्थ उपासना का अर्थ है जो खाली तथा खोखली है, जो कि एक समय नष्ट करने वाली उपासना है। इसे इसलिये भी व्यर्थ कहा जाता क्योंकि यह मनुष्यों की विधियों के अनुसार है या उन शिक्षाओं के अनुसार है जिन्हें मनुष्यों ने बनाया है। परमेश्वर ने किसी भी मनुष्य को यह अधिकार नहीं दिया है कि वह मनुष्य के लिए उपासना का तरीका बनाये।

छटवीं बात हम यह देखेंगे कि परमेश्वर उपासना में अपने लोगों से क्या चाहता है? उपासना में हम जो भी करते हैं वो परमेश्वर की आज्ञा है। जब हम इन बातों को उसकी इच्छा अनुसार करते हैं तथा इमानदारी से करते हैं तब वह हमारी उपासना को स्वीकार करेगा। अब हम उपासना के उन अंगों को देखेंगे जो उपासना में इस्तेमाल किये जाते हैं। सबसे पहिले जब हम उपासना के लिये एकत्रित होते हैं तो हम उसके वचन का अध्ययन करते हैं और अपने वचन के द्वारा वह हमसे बातें करता है क्योंकि वह चाहता है कि हम उसकी इच्छा को जाने। यीशु ने कहा था कि हमें पवित्रशास्त्र में ढूंढना चाहिए। (यूहन्ना 5:39) प्रेरित पौलुस ने कहा था, "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित न होने पाए और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।" (2 तीमु. 2:15)। दूसरी बात यह है कि जब हम उपासना के लिये जमा होते हैं तब हम प्रार्थना करते हैं। प्रेरितों 2:42 में हम पढ़ते हैं, पहली शताब्दी के मसीहीयों के विषय में, "और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।" (प्रेरितों

2:42)। पौलुस कहता है, "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो।" (2 थिस्स, 5:17)। फिर हम देखते हैं कि वह कहता है, "किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाए।" (फिलिप्पियों 4:6)।

तीसरी बात जो हम उपासना में करते हैं, हम परमेश्वर की स्तुति में गीतों को गाते हैं। हम जानते हैं कि संसार में दो प्रकार के संगीत हैं, एक हैं कंठ संगीत और दूसरा है बाजों की आवाज़। अधिकतर लोग अपनी अराधना में दोनों प्रकार का संगीत इस्तेमाल करते हैं। परन्तु परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी स्तुति अपने गले की आवाज़ों से करें अर्थात् वह हमसे कंठ संगीत चाहता है। परन्तु बाजों के बारे में क्या है? परमेश्वर नहीं चाहता कि हम अपनी उपासना में बाजों का इस्तेमाल करें। वह चाहता है कि हम अपने होठों का फल उसे दें। (इब्रानियों 13:15)। प्रेरित पौलुस ने कहा था, "और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो।" (इफिसियों 5:19)। इस बात को ध्यान में रखिये कि संगीत मन में बजाना है, बाजों पर नहीं। फिर से पौलुस कहता है, "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ; और चिताओं, और अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।" (कुलुस्सियों 3:16)।

चौथी बात हम उपासना में जो करते हैं वो है प्रभु भोज में भाग लेना। यीशु की देह को याद करना तथा उसके लहु को याद करना। देह को याद करने के लिये हम रोटी में भाग लेते हैं तथा लहु को याद करने के लिये हम अंगूर के रस में से पीते हैं। (1 कुरि. 11:23-29)।

जब पौलुस कुछ मसीहयों से त्रोआस में मिला, तब हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, "सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इक्ट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें की और आधी रात तक बातें करता रहा।" (प्रेरितों 20:7)।

पांचवी बात जो हम उपासना में करते हैं वो है अपने चंदे को देना।

प्रभु चाहता है कि जब हम सप्ताह के पहिले दिन जमा होते हैं तो अपनी आमदनी अनुसार चंदा दें। प्रेरित पौलुस मसीहीयों को लिखता है, ''सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करें, कि मेरे आने पर चंदा न करना पड़े।'' (1कुरि. 16:2)।

यह मसीही उपासना के साधारण अंग है। परन्तु फिर भी परमेश्वर चाहता है हम उसकी सेवा वैसे ही करें जैसा वह चाहता है। उसकी आज्ञा में जोड़ना या इसमें से घटाना प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन होगा तथा हम प्रभु की उपासना उसकी इच्छा अनुसार नहीं कर पाएंगे।

सातवीं बात यह है कि हमें प्रभु की उपासना कब करनी है? इसके लिये हमें आज्ञा दी गई हैं तथा उदाहरण भी दिया गया है कि इसे हमें सप्ताह के पहिले दिन यानि रविवार को करना है। (प्रेरितों 20:7; 1 कुरि. 16:2)। हम वचन का अध्ययन करने के लिए, प्रार्थना के लिये, गीत गाने के लिये कभी भी इक्ट्ठे हो सकते हैं परन्तु सप्ताह का पहिला दिन प्रभु ने ठहराया है ताकि हम उस दिन प्रभु भोज ले सकें तथा अपने चंदों को दे सकें।

आठवीं बात हम यह देखेंगे कि हमें उपासना के लिये कहां जमा होना है? प्रभु ने हमें यह नहीं बताया है कि हमें अराधना के लिये कहां एकत्रित होना चाहिए। हम किसी घर में उपासना कर सकते हैं; किसी हॉल में या किसी पेड़ के नीचे चर्च बिल्डिंग में, या कहीं भी जहां स्थान उपलब्ध हो। यीशु ने कहा था जहां दो या उससे अधिक लोग मेरे नाम से एकत्रित होंगे मैं उनके बीच में उपस्थित हूंगा। (मत्ती 18: 20)। कुछ लोग सोचते हैं कि केवल चर्च की इमारत में ही उपासना हो सकती है। वे शायद ऐसा सोचते हैं कि परमेश्वर वहां वास करता है। यह सत्य नहीं है। परमेश्वर ने हमें उपासना करने के लिये कहा है इसलिये किसी स्थान के बारे में न सोचकर हमें उपासना करने पर ध्यान देना चाहिए। उसने हमें उपासना करने का दिन भी बताया है। तथा उपासना कैसे करनी है, यह भी बताया है।

पाठ 16 | आराधना का दिन

प्रश्नों तथा उत्तरों की हमारी इसशृंखला में हम इस पाठ में अराधना के दिन के विषय में देखेंगे।

सबसे पहिले हम यह देखना चाहेंगे कि इस दिन प्रभु की आराधना करना क्यों आवश्यक है? किसी और दिन क्यों नहीं हम आराधना के लिये इक्ट्ठे होते? वास्तव में हम परमेश्वर की उपासना किसी भी समय और प्रतिदिन कर सकते हैं। प्रेरित पौलुस कहता है, ''और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करो।'' (कुलु. 3:17)। वास्तव में सप्ताह के दौरान हमारी जब बाइबल सभाएं होती हैं तब हम प्रार्थना करते हैं, परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं और कई बार किसी विशेष कार्य के लिये लोगों की सहायता भी करते हैं। परन्तु फिर भी परमेश्वर ने अपने वचन में इस बात को पक्के तरीके से बताया है कि आराधना का एक दिन है तथा इस दिन उसके लोग एकत्रित होकर एक साथ आराधना करते हैं। इसके अनेक कारण हैं, और हम इन्हें देखेंगे, परन्तु यदि आराधना करने का एक विशेष दिन न होता, तब हम इसे साधारण सी बात समझकर इस पर कोई खास ध्यान नहीं देते। यदि परमेश्वर उपासना का दिन नहीं देता तो मनुष्य अपनी इच्छा से कोई भी दिन आराधना का चुन लेता, अर्थात् लोग अलग-अलग प्रकार के दिन चुन लेते तथा एक बहुत बड़ी गड़बड़ी सी हो जाती, इसलिये परमेश्वर ने हमें उपासना का एक दिन दे दिया है। यदि हम परमेश्वर की इच्छा का आदर करते हैं तब हमें उसके द्वारा दिये गये आराधना के दिन को स्वीकार करना चाहिए।

दूसरी बात जो हमें देखनी है, वो यह है कि प्रभु ने आराधना का कौन सा दिन ठहराया है? हम बाईबल में उदाहरण देखते हैं कि मसीही

लोग सप्ताह के पहिले दिन आराधना के लिये जमा होते थे। यहां इस प्रकार से लिखा है, "सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इक्ट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें की और आधी रात तक बातें करता रहा।" (प्रेरितों 20:7)। कुरिन्थ में मसीहीयों को लिखते हुए पौलुस कहता है, "अब उस चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है, जैसी आज्ञा मैंने गलतिया की कलीसियाओं को दी, वैसा ही तुम भी करो। सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे कि, "मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े।" (1 कुरि. 16:1, 2)। इन दोनों पदों में हम देखते हैं कि सप्ताह के पहिले दिन का वर्णन है। शायद किसी और भी दिन ऐसा किया जा सकता था परन्तु ऐसा नहीं हुआ। इसलिये यह बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि प्रभु चाहता है कि उसके लोग सप्ताह के पहिले दिन आराधना के लिये एकत्रित हों।

तीसरे स्थान पर हम यह देखना चाहेंगे कि क्यों सप्ताह का पहिला दिन? जैसा कि हम सब जानते हैं, कि सप्ताह में सात दिन होते हैं। यदि मसीहीयों को सप्ताह के पहिले दिन आराधना के लिये जमा होना है, तब यह कौन सा दिन होगा? क्या यह शनिवार है? रविवार या सोमवार है? या कोई और दिन? हम जानते हैं कि दुनिया में सोमवार को पहिला दिन माना जाता है। परन्तु पुराने नियम में प्रभु के लोगों को सबत के दिन आराधना के लिये एकत्रित होना पड़ता था और, यह सप्ताह का सातवां दिन होता है अर्थात् शनिवार। इसका अर्थ यह हुआ है कि रविवार सप्ताह का पहिला दिन है तथा अधिकतर लोग इस बात से सहमत हैं।

चौथे स्थान पर हम देखते हैं कि सबत क्या है, क्या यह भी उपासना का दिन है? क्या हमें अभी सबत के दिन उपासना करनी चाहिए? आज संसार में थोड़े से ऐसे भी लोग हैं जो अभी भी सबत को मानते हैं तथा वे कहते हैं कि यही आराधना का दिन है। जो लोग सैवन्थ डे ऐडवैन्टिस्ट कलीसिया के सदस्य है वे ऐसा ही मानते हैं। कुछ थोड़े

से बैपटिस्ट तथा पैन्टीकॉस्टल लोग भी इसे मानते हैं। इसे ठीक ठहराने के लिये वे पुराने नियम तथा दस अज्ञाओं की बात करते हैं और अपनी शिक्षा को उचित ठहराने के लिये इसका प्रमाण देते हैं। परन्तु जब उनसे बात की जाती है कि पुराने नियम की और अन्य आज्ञाओं को क्यों नहीं मानते जैसे पशुओं का बलिदान इत्यादि? तब वे कहते हैं कि यह आज्ञा आज लागू नहीं है परन्तु यह भी कहते हैं कि दस आज्ञाएं अभी भी लागू हैं। वे कहते हैं कि पशुओं का बलिदान जैसी आज्ञा समाप्त हो चुकी है। इसका अर्थ तो यह हुआ कि जो अच्छा लगे उसे अपना लो और जो बुरा लगे उसे जाने दो। अर्थात् पुराने नियम की जो आज्ञा हमें पसंद है वो हम मानगें और जो पसन्द नहीं है उसे नहीं मानेंगे। वास्तव में बाइबल हमें बताती है कि पुराना नियम नया नियम दिये जाने के पश्चात् हटा दिया गया है। और नया नियम हमें यीशु द्वारा दिया गया है। यीशु ने हमें नया नियम दिया है तथा मसीही लोग आज उसके अनुसार चलते हैं।

पांचवी बात यह है कि हम बाईबल में कहां देखते हैं कि पुराने नियम के स्थान पर नया नियम या व्यवस्था दी गई है? यदि इब्रानियों की पुस्तक को देखें तो, वहां हम पढ़ते हैं: "फिर यह भी कहता है, कि देख, मैं आ गया हूं ताकि तेरी इच्छा पूरी करूं: निदान, वह पहिले को उठा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे। उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।" (इब्रानियों 12:9-10)। इब्रानियों 9:15-17 में वह कहता है कि यीशु मसीह नई वाचा का मध्यस्थ है तथा उसकी मृत्यु के द्वारा यह लागू हुई है। वह फिर से हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर अपने पुत्र के द्वारा हमसे बातें करता है। (इब्रा. 1:1,2)। परमेश्वर ने यीशु के विषय में कहा था, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं: इसकी सुनो।" (मत्ती 17:5)। अब बात यह है कि नया नियम हमसे किस दिन आराधना करने के लिये कहता है? किस दिन हमें आराधना के लिये इक्ट्ठे होना चाहिए? वो दिन है सप्ताह का पहिला दिन और बात यहीं समाप्त हो जाती है। इस पर बहस करने की कोई आवश्यकता

नहीं है।

छठवीं बात हम यह देखना चाहते हैं कि सप्ताह के पहिले दिन की ऐसी क्या विशेषता है? मसीहीयत में इस दिन का एक विशेष महत्व है। हम देखते हैं कि यीशु इस दिन मृतकों में से जी उठा था। यीशु की मृत्यु तथा गाड़े जाने के पश्चात् हम पढ़ते हैं, "सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पह फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई। और देखो एक बड़ा भुईडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाईं उज्जवल था। उसके भय से पहरूए कांप उठे, और मृतक समान हो गए। स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो: मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो। वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था। (मत्ती 28:1-6)। मरकुस 16:9 में हमें पढ़ते हैं, "सप्ताह के पहिले दिन भोर होते ही वह जी उठकर पहिले पहिल मरियम मगदलीनी को जिसमें से उसने सात दुष्टात्माएं निकाली थीं दिखाई दिया।" बाद में हम पढ़ते हैं कि यीशु सप्ताह के पहिले दिन चेलों को दिखाई दिया। (यूहन्ना 20:19)। हम फिर पढ़ते हैं कि यीशु सप्ताह के पहिले दिन अपने चेलों के सामने प्रगट हुआ तथा आठ दिन के बाद फिर उनके पास आया जैसे कि लिखा है, "आठ दिन के बाद उसके चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उनके साथ था, और द्वार बन्द थे, तब यीशु ने आकर और बीच में खड़ा होकर कहा, तुम्हें शांति मिले।" (यूहन्ना 20:16)। हम देखते हैं कि सप्ताह का पहिला दिन मसीहीयों के लिये कितना आवश्यक है। अन्त में हम प्रेरितों दो अध्याय में पढ़ते हैं, पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में प्रेरितों के उपर पवित्र आत्मा आया और तीन हज़ार लोगों ने बपतिस्मा लिया तथा उनका उद्धार हुआ तथा बाद में हम पढ़ते हैं कि वे कलीसिया में मिलाये गये। परन्तु पिन्तेकुस्त का दिन कब आता था? यह हमेशा फ़सह के पचासवें दिन आता था तथा यह सप्ताह का पहिला

दिन होता था। इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु ने अपनी कलीसिया को सप्ताह के पहिले दिन बनाया था। विशेष बात यह है कि यह सब परमेश्वर की योजना अनुसार हुआ था।

सातवीं तथा अन्तिम बात हम यह देखते हैं कि सप्ताह के पहिले दिन हमें क्या करना है? प्रभु के लोगों को सप्ताह के पहले दिन जमा होना है। (इब्रानियों 10:25), प्रभु के वचन का अध्ययन करना है, प्रार्थना करनी है, परमेश्वर की स्तुति में गीत गाना तथा प्रभु भोज में भाग लेने के लिये जमा होना है। (2 तीमु. 2:15; प्रेरितों 2:42; इफि. 5:19; प्रेरितों 20:7; 1 कुरि. 16:2)। प्रभु भोज में मसीही लोग यीशु की मृत्यु को याद करने के लिये इसमें भाग लेते हैं। मसीहीयों को इसमें तब तक भाग लेना है जब तक यीशु वापस न आ जाए। क्या आप वैसे आराधना करते हैं जैसे प्रभु चाहता है?

मेरे मित्र यदि आप आज यीशु की कलीसिया के सदस्य नहीं है, उसके परिवार के एक अंग नहीं है तो हम आपसे निवेदन करेंगे कि इसके विषय में विचार कीजिये। यदि आप यीशु में विश्वास करेंगे, अपने पापों से मन फिरायेंगे तथा यीशु के नाम का अंगीकार करके बपतिस्मा लेगें तब प्रभु आपका उद्धार करेगा तथा अपनी कलीसिया में आपको मिलायेगा। तब आप इस योग्य होंगे कि प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन प्रभु की आराधना कर सकें। इन बातों के विषय में विचार कीजिये और यदि आप प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेना चाहते हैं तो हमसे सम्पर्क कीजिये।

पाठ 17 | कलीसिया में संगीत

अपने पाठों में हम बाईबल के विभिन्न विषयों पर सवालों तथा उनके उत्तरों को देख रहे हैं। इस पाठ में हमारा प्रश्न होगा संगीत के विषय में यानि परमेश्वर अपनी आराधना में किस प्रकार का संगीत चाहता है?

सबसे पहिले हम देखते हैं कि परमेश्वर यह क्यों चाहता है कि हम उसकी उपासना में गीतों तथा भजनों को गायें? महान परमेश्वर यह क्यों चाहता है कि हम उसकी आराधना करें?

सबसे पहले हम यह देखना चाहते हैं कि परमेश्वर आराधना में क्यों चाहता है कि हम गीतों को गायें? परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उसकी स्तुति और आराधना करें। यीशु ने कहा था कि परमेश्वर सच्चे उपासक चाहता है, क्योंकि वचन में लिखा है कि, ''परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।'' (यूहन्ना 4:24)। एक तरीका जो उपासना करने का है वो है संगीत। अपने अध्ययन को जारी रखते हुए हम इस बात को जान पायेंगे कि परमेश्वर क्यों उपासना में संगीत चाहता है?

दूसरे स्थान पर हम यह देखते हैं कि संगीत क्या है? इसके संदर्भ में हम यह देखते हैं कि दो प्रकार के संगीत हैं। एक संगीत वो है जो मनुष्य के कंठ से निकलता है अर्थात हमारे गले की आवाज़ और दूसरी तरह का संगीत वो है जो मनुष्यों द्वारा बनाये गये यंत्र अर्थात बाजे-ढोल इत्यादि। एक संगीत वो है जो मन से निकलता है और दूसरा वो जो मनुष्यों द्वारा बनाये गये यंत्रों से निकलता है। परमेश्वर के वचन को पढ़ने से हमें यह पता चलता है कि प्रभु हमारे कंठ संगीत को चाहता है और उसकी इच्छा है कि हम अपने गले से उसकी स्तुति करें। पौलुस ने इस प्रकार से कहा था, ''और आपस में भजन और

स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।'' (इफि. 5:19) कुलुस्से नामक स्थान पर रह रहे मसीहियों को वह लिखता है, ''मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओं, और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।'' (कुलु. 3:16)। और फिर इसी बात को जारी रखते हुए वह कुरिन्थ में मसीहियों से कहता है, ''इसलिये यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। सो क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा, मैं आत्मा से गाऊंगा और बुद्धि से भी गाऊंगा''। (1 कुरि. 14:14-15)। याकूब ने कहा था, ''यदि तुम में कोई दुखी हो तो वह स्तुति के भजन गाए।'' (याकूब 5:13)। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक कहता है। ''इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान अर्थात उन होटों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाया करें।'' (इब्रानियों 13:15)। तथा और भी अन्य बाइबल के पद हमें यह बताते हैं कि हमसे परमेश्वर किस प्रकार का संगीत आराधना में चाहता है? इन सब पदों का नीचोड़ यही है कि परमेश्वर हमारे गलों की आवाज़ चाहता है।

चौथी बात हम यह देखते हैं कि कोई शायद यह कहे कि बाजे इत्यादि इस्तेमाल करने में क्या बुराई हैं? क्या जिसके पास बाजे इत्यादि बजाने की योग्यता है वह इसे परमेश्वर की महिमा के लिये इस्तेमाल न करें? परन्तु हम यह देखना चाहते हैं कि परमेश्वर का वचन इसके विषय में क्या कहता है? यदि प्रभु कहता है कि हम उसकी आराधना गले से तथा बाजे इत्यादि बजाकर कर सकते हैं तब तो यह ठीक है। परन्तु यदि वह कहता है कि केवल बाजे बजाकर आराधना करो तो फिर हम गले से नहीं गा सकते। परन्तु दूसरे स्थान पर यदि वह कहता है कि केवल गले से आवाज़ निकालकर गाओ तब हमें केवल यही करना चाहिए। अर्थात तब हम किसी बाजे-गाजे का इस्तेमाल नहीं कर

सकते। यहां हमें यह समझना चाहिए कि जो महिमा और स्तुति हम कर रहे हैं वो सब परमेश्वर के लिये है। तथा महान परमेश्वर है जो यह फैसला करता है कि हमें उसकी आराधना कैसे करनी चाहिए? उसने यह बात हम पर नहीं छोड़ दी है। हमें उसकी सुननी चाहिए।

पांचवें स्थान पर हम यह देखेगें कि इससे क्या फरक पड़ता है? हमने इस फ़रक को पहिले ही देख लिया है कि कंठ संगीत परमेश्वर की ओर से है। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे गलों को बनाया है। बाजों को वाद्य यंत्रों को मनुष्य ने बनाया है। गलों से जब आवाजें निकलती हैं तो मनों से निकलती है। बाजों से दिल की आवाज कैसे निकलेगी? बाजों में कोई आत्मा नहीं है। वाद्य यंत्रों से आवाज तब निकलती है जब हम उन्हें बजाते हैं। मेरे मित्रो, परमेश्वर ने हमें बाजों के साथ उसकी आराधना करने का अधिकार नहीं दिया है। परन्तु यदि हमारे पास इसकी योग्यता है तब क्या करना चाहिए? हमारे पास बहुत सी बातों को करने की योग्यताएं होती हैं पर इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उन्हें परमेश्वर की आराधना में इस्तेमाल करें। हमें अपने स्वामी महान प्रभु को प्रसन्न करना है इसलिये हमें उसकी इच्छा को जानना चाहिए कि वह हमसे क्या चाहता है? याद रखिये इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने क्या कहा था? वह कहता है कि परमेश्वर हमारे होंठों के फलों को चाहता है। अर्थात हमारे गलों से निकलने वाली आवाज जब सब लोग मिलकर एक साथ अपने गलों से परमेश्वर के लिये स्तुति करते हैं, इससे अच्छा कुछ और नहीं हो सकता। प्रेरित पौलुस ने कहा था अपने-अपने मनों में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो। पौलुस कहता है कि आवाज़ गले से अर्थात मन से निकालनी है, बाजों से नहीं।

छटवीं बात हम यह देखते हैं कि मसीही लोग जो पहिली शताब्दी में रहते थे उन्होंने किस प्रकार का संगीत इस्तेमाल किया था? इस बात के लिये हम पौलुस द्वारा कहीं गई बातों से निर्देश लेते हैं कि वे लोग बिना बाजों-गाजों के परमेश्वर की स्तुति करते थे। और यदि वे इस्तेमाल करते होते तो बाइबल में अवश्य हमें इसका उदाहरण

मिलता। परन्तु कहीं भी इसके बारे में हम नहीं पढ़ते। बाइबल के इतिहासकार तथा विद्वान बताते हैं कि मसीही लोग आराधना में कभी भी बाजों इत्यादि का इस्तेमाल नहीं करते थे। केवल कंठ संगीत ही इस्तेमाल होता था। इसका अर्थ क्या हुआ? क्या उस समय में यह बजाने वाले यंत्र उपलब्ध नहीं थे या लोग इतने गरीब थे कि वे इन्हें खरीद नहीं सकते थे? नहीं ऐसी बात नहीं है। उन्होंने इन्हें इसलिये इस्तेमाल नहीं किया क्योंकि परमेश्वर की इच्छा नहीं थी कि उसके लोग इन्हें उसकी आराधना करने में इस्तेमाल करें। परमेश्वर ने उन्हें इसका अधिकार नहीं दिया था।

सातवें स्थान पर हम यह देखना चाहेंगे कि बाजों का इस्तेमाल आराधना में कब हुआ? इतिहास से हमें पता चलता है कि कई सौ सालों बाद इसे मसीही आराधना में लाया गया था। जब मसीहियत में धर्मत्याग हुआ अर्थात लोग जब नये नियम की शिक्षा से भटक गये तब सबसे पहिला साम्प्रदाय कैथलिक 600 ई. सन में आया। फिर कैथलिक चर्च में भी बंटवारा हो गया तथा इसका परिणाम हुआ प्रोटैस्टन्ट कलीसियाएं। बाइबल से परे हटकर बहुत सी बातें सिखाई जाने लगी तथा इनमें से एक बात यह थी कि कलीसिया में कौन-सा संगीत इस्तेमाल किया जाए? जो लोग रोमन केथौलिक कलीसिया से जुड़े थे उन्होंने बाजे इत्यादि बजाना अच्छा समझा तथा यह फैसला किया कि हम अपनी आराधना में बाजे इत्यादि बजाएंगे परन्तु ग्रीक ऑरथोंडॉक्स चर्च ने कहा कि हम अपनी आराधना में बाजों इत्यादि का इस्तेमाल नहीं करेंगे तथा हम केवल कंठ संगीत को ही रखेंगे। और आज भी ग्रीक आरथोडॉक्स बिना बाजों के आराधना करते है।। 1500 ई. सन तक और भी बहुत सी प्रोटैस्टन्ट कलीसियाएं आई जो अपनी आराधना में बाजों का इस्तेमाल करती थीं।

आठवीं बात हम यह देखेंगे कि मसीह की कलीसिया का क्या हुआ? जब यह सब कुछ हो रहा था तब सच्चे मसीही लोग जो बहुत थोड़े थे बाइबल की नये नियम की सच्चाई पर बने रहे। तथा आज सारे संसार में मसीह की कलीसियाएं नये नियम की शिक्षा अनुसार

चलती हैं परन्तु यह अपनी आराधना में कौन से संगीत को इस्तेमाल करती हैं? हम देखते हैं कि यह लोग बिना बाजों के परमेश्वर की आराधना करते हैं? यह इस कलीसिया की एक विशेषता है।

नयी बात हम यह देखते हैं कि कई लोग कहते हैं कि पुराने नियम में क्या बाजे इत्यादि इस्तेमाल नहीं होते थे? यह बात सही है परन्तु मेरे मित्र आज हम पुराने नियम में नहीं रह रहे हैं। हम प्रभु यीशु के नये नियम अनुसार चलते हैं। और इसीलिये नये नियम के अधिकार के अनुसार हम केवल कंठ संगीत का ही आराधना में इस्तेमाल करते हैं। दसवीं बात यह है कि अब कोई कहे कि हम अपने घर में यदि बाजे इत्यादि बजाते हैं तो इसमें क्या कोई बुराई है? किसने कहा कि इसमें बुराई है? हमारे घरों में तो बहुत सी वस्तुएं हैं जिन्हें हम आराधना में नहीं लाते।

ग्यारहवीं बात हम यह देखते हैं कि क्या स्वर्ग में बाजे इत्यादि होंगे? कोई भी पृथ्वी की वस्तु वहां नहीं होगी। वहां कोई बाजे इत्यादि नहीं होगे। स्वर्ग में लोग सदा परमेश्वर की आराधना स्तुति करेंगे पृथ्वी पर बहुत सी वस्तुएं हैं जो स्वर्ग में नहीं होंगी।

इस बात का निचोड़ यह है कि इससे फ़रक नहीं पड़ता कि हमें क्या पसंद है। हमें तो बहुत सी चीजें अच्छी लगती है। परन्तु यह देखें कि आराधना में परमेश्वर को क्या पसन्द है? जब हम परमेश्वर की आराधना करते हैं वो इस आधार पर होनी चाहिए कि परमेश्वर क्या चाहता है? उसकी इच्छा क्या है? हमें परमेश्वर को प्रसन्न करना है किसी मनुष्य को नहीं।

इन बातों के विषय में आप यदि और जानने के इच्छुक हैं तो आप हमसे सम्पर्क कीजिये।

पाठ 18 | प्रार्थना

हमेशा की तरह अपने इस पाठ में भी हम बाइबल से संबंधित प्रश्नों–उत्तरों को देखेंगे। हमारा यह पाठ प्रार्थना के विषय में होगा।

सबसे पहिले हम यह देखते हैं कि प्रार्थना करना परमेश्वर से बातचीत करना है, उससे बिनती करना, उसकी आशिषों के लिये धन्यवादी होना है। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमसे बात करता है, जो उसका पवित्र वचन है, परन्तु उसके बच्चे उससे प्रार्थना के द्वारा बातें करते हैं। पौलुस इस प्रकार से कहता है, ''किसी भी बात की चिंता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं।'' (फिलि. 4:6)।

दूसरी बात यह है कि हमें किससे प्रार्थना करनी चाहिए? क्या परमेश्वर से, यीशु से, सन्तों से या मरियम से? जैसे हमने फिलिप्पियों 4:6 में पढ़ा था कि हमारे निवेदन या प्रार्थनाएं परमेश्वर से होने चाहिए। इसी तरह से हम देखते हैं कि सारे पवित्र शास्त्र में यह बताया गया है कि हमारा ध्यान परमेश्वर की ओर लगाया गया है जो हमारा पिता है, और हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है। प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है, पिता नहीं है, इसलिये हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं। जहां तक संतों और मरियम की बात है हमें यह जानना चाहिए कि इनके पास हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने की कोई भी शक्ति नहीं है। वे हमारी तरह ही इंसान थे। उन्हें भी हमारी तरह परमेश्वर की आवश्यकता है।

तीसरे स्थान पर हम देखते हैं कि क्या हम पिता से सीधे प्रार्थना कर सकते हैं? बाइबल हमें बताती है कि यीशु हमारा बिचवई है तथा हमारा सहायक है इसलिये हमें उसके द्वारा प्रार्थना करनी चाहिए। यूहन्ना ने इस प्रकार से लिखा था, ''हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूं कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के

पास हमारा एक सहायक है अर्थात धर्मी यीशु मसीह और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी।''। (1 यूहन्ना 2:1, 2)। प्रेरित पौलुस इसके विषय में लिखता है, ''क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है।'' (1 तिमु. 2:5)। यीशु ने कहा था, ''और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वहीं मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।'' (यूहन्ना 14:13)। और वह फिर आगे कहता है, ''उस दिन तुम मुझसे कुछ न पूछोगे, मैं तुम से सच कहता हूं, यदि पिता से कुछ मांगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।'' (यूहन्ना 16:23)। दूसरे शब्दों में यीशु उनके साथ था, तथा वे उससे व्यक्तिगत रूप से सहायता मांग सकते थे। परन्तु अब वह उनके पास से जा रहा था अर्थात उसने अपने पिता के पास वापस जाना था। इसलिये उसने अपने चेलों से कहा था कि वह स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करे और उसके नाम में पिता से मांगे। यह ऐसे था जैसे यीशु उन्हें जानता था तथा वे यीशु को जानते थे और इसलिये वे पिता से प्रार्थना यीशु के नाम में करते थे।

चौथे स्थान पर हम यह देखते हैं कि प्रार्थना कौन कर सकता है? कोई भी प्रार्थना कर सकता है। परन्तु पिता परमेश्वर ने यह वायदा किया है कि वह अपने बच्चों की सुनता है तथा जो उसके प्रति विश्वास योग्य है वे उनसे प्रसन्न होता है। हम प्रेरितों 2:42 में पढ़ते हैं कि पहिली शताब्दी के मसीही निरंतर प्रार्थना में लगे रहते थे। वो अंधा व्यक्ति जिसे यीशु ने चंगा किया था, कहता है, ''हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उसकी इच्छा पर चलता है तो वह उसकी सुनता है।'' (यूहन्ना 9:31)। बाइबल हमें बताती है पिता से प्रार्थना करने के विषय में परन्तु ऐसा कौन करेगा? केवल वो ही जो उसके बच्चे हैं। प्रश्न यह है कि उनका क्या जो उसके बच्चे नहीं है। यह लोग परमेश्वर को पिता कहकर प्रार्थना नहीं कर सकते। हम संसार में भी ऐसा नहीं देखते। इसलिये आत्मिक बातों में भी ऐसा नहीं है। परमेश्वर के बच्चों को भी अपने आप को पवित्र रखना

चाहिए ताकि पिता परमेश्वर उनकी प्रार्थनाओं को सुने। प्रेरित पतरस इसके विषय में कहता है, ''क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती है और उसके कान उन की बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करने वालों के विमुख रहता है।'' (1 पतरस 3:12)। यह बात निश्चित है कि किसी के लिये भी परमेश्वर से दूर होना संभव है, जैसे कि यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा था, ''सुनो यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं होगया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहिरा हो गया है कि सुन न सके। परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।'' (यशायाह 59:1, 2)।

पांचवी बात हम यह देखना चाहते हैं कि हम प्रार्थना कब कर सकते हैं? जब भी हमारी इच्छा हो हम प्रार्थना कर सकते हैं। मसीही लोग जब प्रभु के दिन अर्थात् सन्डे को एकत्रित होते हैं तब वे पिता से प्रार्थना करते हैं। हम अपने घर में भी प्रार्थना कर सकते हैं, अपने दफ्तर में, या रात में प्रार्थना कर सकते हैं। यीशु के जीवन को देखिये वह हमेशा प्रार्थना करता था। मसीही लोगों के पास तो यह एक बहुत बड़ी आशिष है। एक मसीही यह जानता है कि परमेश्वर हमेशा सुनने के लिये तैयार रहता है। प्रेरित पौलुस कहता है निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो। (1 थिस्स. 5:17)।

छठवीं बात हम देखेंगे कि प्रार्थना के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए? यीशु ने उन लोगों के विषय में कहा था जो लोगों को दिखाने और सुनाने के लिये प्रार्थना करते हैं। मत्ती 6 अध्याय में यीशु ने इसके विषय में कहा था। उसने अनुचित तरह से प्रार्थना करने का विरोध किया था। उसने यह भी कहा कि लम्बी प्रार्थनाएं करने से ऐसा नहीं है कि परमेश्वर उनकी अवश्य सुनेगा। और इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमें पिता परमेश्वर से प्रार्थना करने से पहिले अपने जीवन को क्षमा करने वाला, नम्र तथा आज्ञाकारी बनाना चाहिए।

सातंवी बात यह है कि हमें किसके लिये प्रार्थना करनी चाहिए? हमें अपने लिये, कलीसिया के लिये, अपने परिवार के लिये और अपने

परिजनों के लिये प्रार्थना करनी चाहिए। जो लोग पापों में खोए हुए हैं, जो बीमार हैं, तथा सबके लिये प्रार्थना करनी चाहिए। प्रेरित पौलुस कहता है, ''अब मैं सब से पहिले यह उपदेश देता हूं, कि बिनती और प्रार्थना और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिए किए जाए। राजाओं और सब ऊंचे पदवालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गंभीरता से जीवन बिताएं। यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है। वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भलिभांति पहचान लें।'' (1 तीमुथियुस 2:1-4)।

आठवें स्थान पर हम यह देखते हैं, कि हमें किस चीज़ के लिये प्रार्थना करनी है? परमेश्वर के बच्चे होते हुए वह चाहता है कि हमें उससे जो मांगना हैं वह मांगे। (मत्ती 18:19)। परन्तु इसमें एक शर्त है कि हम जो भी मांगे उसकी इच्छानुसार मांगे। यूहन्ना इसके विषय में कहता है, ''और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है वह यह है, कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं तो वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने उससे मांगा, वह पाया है।'' (1 यूहन्ना 5:14, 15)। परमेश्वर जानता है कि हमारी आवश्यकता क्या है तथा उसी के अनुसार वह हमारी प्रार्थनाओं का जवाब भी देता है। एक शारीरिक पिता भी अपने बच्चों की हर एक आवश्यकता को देखकर पूरा करता है। वह जानता है कि हमारी अच्छाई किसमें है, और यदि हम कोई ऐसी वस्तु मांगते हैं, जिससे हमें नुकसान हो सकता है, तब वह हमारी इच्छा को पूरी नहीं करता। और यही बात स्वर्गीय पिता के विषय में भी है। कई बार हम वो मांगते हैं जो हमारे लिये उचित नहीं है। परमेश्वर हमारी कुछ प्रार्थनाओं का उत्तर हां में तथा कुछ का उत्तर न में देता है। शायद हम परमेश्वर से प्रार्थना में कहे कि हमारे पापों को क्षमा कर, रोगियों को चंगा कर, खाने के लिये भोजन दे तथा जीवन की अन्य आवश्यकताओं के लिये प्रार्थना करें और यह बड़ी ही आशिष की बात है कि स्वर्ग का परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है तथा आवश्यकता के समय हमारी सहायता करता है।

नवीं बात हम देखते हैं कि हमें किस तरह से प्रार्थना करनी चाहिए? कई लोग कहते हैं कि हमें हमेशा घुटने टेक कर प्रार्थना करनी चाहिए। परन्तु बाइबल हमें बहुत से तरीकों के विषय में बताती है कि हम किस प्रकार से प्रार्थना कर सकते है। घुटने टेक कर प्रार्थना करने के अतिरिक्त बाइबल बताती है कि हम खड़े होकर भी प्रार्थना कर सकते हैं। (प्रेरितों 21:5; मरकुस 11:25)। वास्तव में कोई किसी भी तरह से प्रार्थना कर सकता है। घुटने टेककर, बैठकर या फिर खड़े होकर।

प्रार्थना के विषय में हम बहुत कुछ कह सकते हैं। परन्तु जो बातें हमने अभी देखीं इनसे हमें काफ़ी सहायता मिलेगी।

हम चाहते हैं कि आप प्रभु की आज्ञा मानकर उसमें विश्वास करें और अपने पापों से मन फिरायें, यीशु को परमेश्वर का पुत्र अंगीकार करके बपतिस्मा लें। प्रभु आपके पापों से आपका उद्धार करेगा। तब आप उसके परिवार के सदस्य बन जायेंगे। परमेश्वर के बच्चे होते हुए आपके पास प्रार्थना करने का अधिकार होगा। आप पिता परमेश्वर से यीशु के नाम में प्रार्थना कर सकते हैं।

पाठ 19 | प्रभु-भोज

बाइबल के प्रश्नों-उत्तरों को अपनी इस श्रृंखला में हम देख रहे हैं। तथा हमारा यह प्रयास है कि हम बाइबल के प्रश्नों का उत्तर बाइबल ही से दें। हमारा इस पाठ में जो प्रश्न होगा, उसका विषय है प्रभु भोज।

सबसे पहिले हम यह देखना चाहेगें कि प्रभु भोज क्या है? इस पाठ को जब हम आगे बढ़ायेंगे तब बहुत सी बातें साफ होती जायेंगी। प्रभु भोज में जो हम रोटी खाते हैं वो हमें यीशु की देह की याद दिलाती है और जो अंगूर का रस हम पीते हैं वो यीशु के लोहू की याद दिलाता है। प्रेरित पौलुस ने कहा था, ''क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची और मैंने तुम्हें भी पहुंचा दी; कि यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली। और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा; कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और कहा, यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है: जब कभी पियो, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए प्रचार करते हो। (1 कुरि. 11:23-26)। यद्यपि मसीहियों को रोटी और अंगूर के रस में भाग लेने के लिये कहा गया है जो कि भौतिक वस्तुएं हैं, परन्तु हमारे लिये यह एक आत्मिक भोज है। यह भोजन भूख और प्यास मिटाने के लिये नहीं है।

दूसरे स्थान पर हम यह देखेंगे कि प्रभु भोज की स्थापना किसने की थी? हम देखते हैं कि यीशु ने स्वयं इसकी स्थापना की थी। फस़ह का पर्ब जो पुराने नियम अनुसार साल में एक बार आता था, यीशु ने इस समय अपने चेलों को एक स्थान पर एकत्रित किया था और उनके साथ अपनी मृत्यु से पूर्व इस अंतिम भोजन को खाने की इच्छा प्रकट की थी। और यही वो समय था जब उसने प्रभु भोज की स्थापना की

थी और यही वो अवसर भी था जब यीशु ने प्रभु भोज के विषय में अपने चेलों को बताया था, एक ऐसा भोज जो यीशु के पीछे चलने वाले लोग अर्थात् मसीही उसकी मृत्यु को स्मरण करने के लिये लिया करेंगे। इसके द्वारा वे उसकी यातनाओं तथा उसके लोहू बहाये जाने को याद करेंगे। आईये इसके विषय में बाइबल के नये नियम से देखें, "(अखमीरी रोटी के पर्व के पहिले दिन चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे; तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें? उसने कहा, नगर में फुलाने के पास जाकर उससे कहो, कि गुरू कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं चेलों के साथ तेरे यहां पर्व मनाऊंगा। सो चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी, और फ़सह तैयार किया। जब सांझ हुई, तो वह बारहों के साथ भोजन करने के लिये बैठा। जब वे खा रहे थे तो उसने कहा, मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा। इस पर वे बहुत उदास हुए, और हर एक उससे पूछने लगा, हे गुरू क्या वह मैं हूं? उसने उत्तर दिया, कि जिसने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा। मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य के लिये शोक है जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है, यदि उस मनुष्य का जन्म ही न होता तो उसके लिये भला होता। तब उसके पकड़वाने वाले यहुदा ने कहा- हे रब्बी, क्या वह मैं हूं? उसने उससे कहा तू कह चुका: जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली और आशीष मांगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा लो, खाओ; यह मेरी देह है। फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इसमें से पीओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित बहाया जाता है। मैं तुम से सच कहता हूं कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं" (मत्ती 26:17-29)

यह एक ऐसा भोज था जिसमें प्रभु के लोग उसके संसार से चले जाने के पश्चात् भी भाग लेते रहेंगे। उसने उनसे यह वायदा भी किया था कि जब भी वे इक्ट्ठे होंगे उनके बीच में वह उपस्थित होगा। (मत्ती

18:20)।तीसरे स्थान पर हम यह देखेंगे कि प्रभु भोज के लिये रोटी जो तैयार की जाती है वो कैसी होती है? बाइबल हमें बताती है यह अखमीरी रोटी होती है, जिसमें कोई खमीर न मिला हुआ हो। (निर्गमन 12:17, मत्ती 26:17) चौथे स्थान पर हम देखते हैं कि प्याले में अंगूर का जूस था। और जिस स्थान पर यीशु और उसके चेले रहते थे वहां अंगूर बहुत होता था। अंगूर अधिकतर स्थानों पर पाये जाते हैं तथा अंगूर से बनाई जाने वाली किशमिश भी प्रत्येक जगह पाई जाती है।

पांचवी बात हम यह देखना चाहते हैं कि क्या यह रोटी यीशु की वास्तविक देह में बदल जाती है? कई लोग ऐसी अनुचित शिक्षा देते हैं कि जब रोटी में भाग लिया जाता है तब वो यीशु की वास्तविक देह में बदल जाती हैं। वास्तव में यह सत्य नहीं है। यह बात शायद इसलिये कही जाती है क्योंकि यीशु ने कहा था, "लो खाओ यह मेरी देह है।" परन्तु पौलुस ने कहा था कि रोटी यीशु की देह को याद करने के लिये खाई जाती है। (1 कुरि. 11:24)। यीशु अपने चेलों को यह सिखाने का प्रयत्न कर रहा था कि रोटी के द्वारा वे किस प्रकार से उसकी देह को याद कर सकते हैं, एक ऐसी देह जिसको सब प्रकार की यातनाओं का सामना करना पड़ा था ताकि पापी मनुष्य को उद्धार मिल सके।

छटवीं बात हम देखना चाहेंगे कि अंगूर का रस क्या असली लोहू बन जाता है? नहीं, यह भी एक अनुचित शिक्षा है कि अंगूर का रस वास्तविक लोहू बन जाता है। यीशु ने कहा था, कि यह मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है। (मत्ती 26:28) बाइबल किसी भी प्रकार का लोहू पीने के लिये मना करती है। (प्रेरितों 15:29)।

सातवीं बात हम यह देखना चाहते हैं कि प्रभु भोज कहां लिया जाता था और आज कहां लिया जाता है? हम जानते हैं कि यह राज्य अर्थात् कलीसिया में लिया जाता है। (मत्ती 26:29)

आठवीं बात हम यह देखेंगे कि सप्ताह के कौन से दिन प्रभु भोज लिया जाना चाहिए? हम प्रेरितों 20:7 में पढ़ते हैं कि पौलूस और मसीही

भाई सप्ताह के पहिले दिन अर्थात इतवार को अराधना करने के लिये इक्ट्ठे होते थे तथा इसी दिन प्रभु भोज में भी भाग लेते थे। हम पढ़ते हैं, "सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इक्ट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें कीं, और आधी रात तक बातें करता रहा।" रोटी तोड़ने का अर्थ प्रभु भोज से है।

नवीं बात हम देखते हैं कि क्या सप्ताह का कोई और दिन प्रभु भोज लेने के लिये उचित रहेगा? नहीं, क्योंकि प्रभु ने अपने वचन में सप्ताह के पहिले दिन के विषय में कहा है तथा हमें अराधना इसी दिन करनी चाहिए।

दसवें स्थान पर हम यह देखना चाहेंगे कि मसीहीयों को कितनी बार प्रभु भोज में भाग लेना चाहिए? हम जानते हैं कि सप्ताह का पहिला दिन प्रत्येक सप्ताह आता है, इसलिये मसीही लोगों को हर सप्ताह इसमें भाग लेना चाहिए। (प्रेरितों 2:42; 1 कुरि. 16:2)।

ग्याहरवीं बात जो हम देखना चाहेंगे वो यह है कि प्रभु भोज में किस प्रकार से भाग लेना चाहिए? प्रेरित पौलूस ने बताया कि किस प्रकार प्रभु ने इसकी स्थापना की थी और फिर वह कहता है, "क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो। इसलिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए या उसके कटोरे में से पीए वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा। इसलिये मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए और इस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। (1 कुरि. 11: 26-29)।

बारहवीं बात हम यह देखना चाहेंगे कि प्रभु भोज लेने का क्या अर्थ है? या इसे लेने का क्या उद्देश्य है? प्रभु भोज एक यादगारी है यानि इसे लेने का उद्देश्य है यीशु की मृत्यु को याद करना ताकि मनुष्य क्रूस पर तोड़ी गई देह को तथा क्रूस पर बहे हुए लोहू को याद कर सके।

तेरहवें स्थान पर हम यह देखते हैं कि प्रभु भोज में कौन भाग लेते हैं? इसमें मसीही लोग भाग लेते हैं अर्थात् सच्चे विश्वास योग्य मसीही।

अन्तिम बात हम यह देखेगें कि प्रभु भोज के द्वारा किसे आदर मिलता है, हम देखते हैं कि इसके द्वारा प्रभु यीशु को आदर मिलता है। जो भी मसीही इसमें भाग लेते हैं उन्हें इससे ताकत मिलती है। यह हमें याद दिलाता है कि हमारे उद्धार के लिये जो दाम दिया गया था उसे भूलें न। इसमें भाग लेते समय हम यीशु के क्रूस की ओर देखते हैं, उसके वापस आने की बाट जोहते हैं, तथा संसार को प्रचार करते हैं कि यीशु मसीह उनको उद्धार देगा, यदि वे उसकी आज्ञा मानकर उसके पास आयेंगे।

पाठ 20 | चन्दा देना

इस पाठ में हम चन्दा देने के विषय में कुछ प्रश्नों और उनके उत्तरों को देखेंगे। हम यह देखना चाहेंगे कि बाइबल चन्दे के विषय में क्या कहती है?

सबसे पहिले हम यह देखना चाहते हैं कि चन्दा देने का क्या अर्थ है? हमें चन्दा क्यों देना चाहिए? बाइबल क्या हमें यह नहीं सिखाती कि सब चीज़ों का देने वाला परमेश्वर है? हम नहीं जानते कि लोग इसके विषय में क्या सोचते हैं परन्तु परमेश्वर का वचन हमें चन्दा देने की आवश्यकता के विषय में बताता है। यह बात भी सत्य है कि परमेश्वर ने सारी मनुष्य जाति के लिये एक बहुत बड़ा उपहार अपने पुत्र यीशु के रूप में दिया है। (यूहन्ना 3:16,17)। यह बिल्कुल सच है कि हम इसका बदला नहीं चुका सकते परन्तु फिर भी वह चाहता है कि हम अपनी आमदनी में से कुछ हिस्सा उसके कार्य के लिये दें। बाइबल में हम पढ़ते हैं, "मैंने तुम्हें सब कुछ करके दिखाया इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को संभालना, और प्रभु यीशु की बातें स्मरण रखना अवश्य है कि उस ने आप ही कहा है; कि लेने से देना धन्य है।" (प्रेरितों 20:35)।

दूसरी बात यह है, कि यह किन लोगों को देखना है? परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उसके कार्य के लिये चन्दा दें। जो लोग प्रभु से संबंध रखते हैं उन्हें कलीसिया के कार्य के लिये चन्दा देना चाहिए। 1 कुरि. 16:1-2 में पौलूस गलतियां तथा कौरिन्थ की कलीसिया को कहता कि देना उनकी जिम्मेवारी है।

तीसरे स्थान पर हमें यह देखना चाहिए कि देने के कौन-से और क्या नियम हैं? पौलुस इसके विषय में कई बातें बताता है, आईये देखें कि वह इसके बारे में क्या कहता है, "अब उस चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है, जैसी आज्ञा मैंने गलतिया की

कलीसियाओं को दी, वैसा ही तुम भी करो। सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करें, कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े।'' (1 कुरि. 16:1-2)। इसी बात को जारी रखते हुए वह देने के विषय में कहता है, ''परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसे ही दान करें न कुढ़-कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है। और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिससे हर बात में और हर समय सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।'' (2 कुरि. 9:6-8)। अब इन आयतों से कुछ विशेष बातों को हम देखना चाहेंगे।

1. चन्दा सप्ताह के पहिले दिन दिया जाना चाहिए। इस दिन परमेश्वर के लोग एक साथ मिलकर आराधना करने के लिये इकट्ठे होते हैं। चन्दा देना आराधना का एक हिस्सा है। अर्थात् जब कलीसिया सन्डे को एकत्रित होती है तब चन्दा इक्ट्ठा किया जाता है। और यह इसलिये दिया जाता है ताकि प्रभु के कार्य को आगे बढ़ाया जा सके।
2. यदि एक मसीही ने कमाई की है तब उसका कर्त्तव्य हो जाता है कि वह प्रभु के कार्य के लिये कुछ दे।
3. प्रत्येक अपनी आमदनी अनुसार प्रभु के कार्य के लिये कुछ रख छोड़ा करे। कुछ स्थानों पर जैसे गांव देहातों में लोग कई बार पैसे के स्थान पर आटा, चावल, अण्डे, सब्जी इत्यादि देते हैं।
4. प्रत्येक को प्रभु ने जैसे आशिषित किया है उसे वैसे ही देना चाहिए। यदि किसी की कोई आमदनी नहीं हुई है और वह देने में असमर्थ है तो देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उसके पास कुछ है ही नहीं। पुराने नियम में लोग अपनी

आमदनी का दसवां अंश देते थे। आज हम मसीह के नये नियम में रहते हैं, जो कि पुराने से एक बहुत अच्छा नियम है। नया नियम यद्यपि हमे दसवां अंश देने के लिये नहीं कहता परन्तु हमें यह सिखाया गया है कि हम अपनी आमदनी के अनुसार दें। यानि हमें दसवें अंश से भी अधिक देना है। हम अपनी कमाई के विषय में जानते है तथा यह हमें फैसला करना है कि हम कितना देंगे?

5. जैसी हमें आशीष मिली है वैसे ही हमें देना है। कई बार लोग चन्दे की टोकरी आने पर जल्दबाज़ी में पाकेट में हाथ डालते हैं तथा हाथ में कुछ सिक्के या दस का नोट आ जाता है वे डाल देते हैं। यानि उन्होंने पहिले से मन में ठानकर नहीं दिया था परन्तु याद रखिये हमें अपनी आमदनी अनुसार देना चाहिए। हमने शायद पहिले से देने की योजना नहीं बनाई थी। अपने मन में ठान लें कि मैं आज कितना चन्दा दूंगा।

6. बाइबल हमें यह भी सिखाती है कि हमें कुढ-कुढ़ के और दबाव के साथ नहीं देना चाहिए। अर्थात् ऐसी भावना दिल में न आये कि हमें देना ही पड़ रहा है। हमारे उपर कोई दबाव नहीं डाल रहा है कि हमें देना है। परमेश्वर भी हम पर कोई दबाव नहीं डालता। परमेश्वर चाहता है कि हम अपनी इच्छा से उसके कार्य के लिये चन्दा दें। कुढ़-कुढ़ा के देने से परमेश्वर प्रसन्न नहीं होगा।

7. परमेश्वर प्रसन्नता से देने वाले से प्रसन्न होता है। 2 कुरि. 9:6 में देने के विषय में अच्छा सिद्धान्त दिया गया है। वह कहता है जो थोड़ा बोयेगा वह थोड़ा काटेगा भी। यदि अधिक बोएगा तो अधिक काटेगा भी। हमें इस दृष्टिकोण से नहीं देना चाहिए कि अधिक देने से हमें और अधिक मिलेगा। अगर किसी का यह उद्देश्य है कि मुझे अधिक देने से अधिक मिलेगा तो यह विचार अनुचित है।

चौथी बात हम यह देखते हैं, कि बाइबल दसवें अंश के विषय में क्या कहती है? मूसा की व्यवस्था यानि पुराने नियम में दसवां अंश दिया जाता था। जब मसीह की मृत्यु के द्वारा पुराना नियम हटा दिया गया तब दसवें अंश वाला नियम भी समाप्त हो गया। नये नियम अनुसार हमें दिल खोलकर प्रसन्नता के साथ अपना चन्दा देना चाहिए।

पांचवी बात यह है कि बाइबल कुरिन्थियों में मसीहीयों के विषय में क्या कहती है? पौलूस ने मकिदूनिया के ग़रीब मसीहीयों के विषय में बताया था कि वे यद्यपि भारी कंगालपन में थे, परन्तु देने में सबसे आगे थे और प्रेरित पौलूस कहता है कि, ''उन्होंने अपनी सामर्थ भर बरन सामर्थ से भी बाहर मन से दिया।'' (2 कुरि. 8:1-5)।

छठवीं बात हम यह देखना चाहते हैं कि पहिली शताब्दी के मसीहीयों का चन्दा देने के विषय में क्या दृष्टिकोण था? हम देखते हैं कि सबसे पहिले जिन लोगों ने पिन्तेकुस्त के दिन प्रभु का वचन सुनकर आज्ञा को माना था, उनके विषय में लिखा है, ''और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलिन रहे।'' (प्रेरितों 2:42)। जब हम सन्डे को एकत्रित होते हैं तब सहभागिता करते है। तथा प्रभु के कार्य के लिये देते हैं।

सातवें स्थान पर हम यह देखते हैं कि देने के और क्या-क्या तरीके हैं? प्रेरित लोग बताते हैं कि उन्होंने अपनी ज़मीन जयदाद, तथा सब कुछ छोड़कर प्रभु को अपना लिया था। हम पढ़ते हैं, पतरस कहता है, ''कि देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिये हैं: तो हमें क्या मिलेगा? यीशु ने उनसे कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि उत्पत्ति से जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे। और जिस किसी ने घरों या भाईयों या बहिनों या पिता या लड़के वालों या खेतों को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है, उसको सौ गुना मिलेगा और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा। परन्तु बहुतेरे जो पहिले हैं, पिछले होंगे और जो पिछले हैं पहिले होंगे। (मत्ती 19:27-30)।

अब हम यह देखना चाहेंगे कि इन सब बातों से हमने क्या सीखा?

1. परमेश्वर ने मनुष्य को इतना दिया है कि वह उसका बदला नहीं चुका सकता। उसने अपने पुत्र प्रभु यीशु को सारी मनुष्य जाति के लिये दे दिया। तमाम उन लोगों को जो उसमें विश्वास करके उसकी आज्ञाओं को मानेंगे उन्हें अनन्त जीवन देने का उसने वायदा किया है।
2. फिर भी पिता परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग अपनी आमदनी से उसके कार्य के लिये दें। कलीसिया को इस चन्दे से सुसमाचार को तमाम लोगों के पास ले जाना हैं। तथा आवश्यकताओं से पीड़ित मसीहीयों की तथा दूसरे लोगों की सहायता भी करनी है।
3. अपने चन्दे को हमें सप्ताह के पहिले दिन देना चाहिए अर्थात् रविवार को जब कलीसिया आराधना के लिये इक्ट्ठी होती है।
4. परमेश्वर के लोगों को अपने चन्दे को हर्ष के साथ देना चाहिए। जैसा हमने दिल में ठाना है, प्रसन्नता के साथ दें।
5. जो उसकी इच्छानुसार देते हैं प्रभु उन्हें आशीषित करेगा।

मित्रो, एक मसीही होना बड़ी आशीष की बात है। परमेश्वर के प्रति तथा उसका कार्य करने के लिये उसके लोगों के ऊपर एक बड़ी जिम्मेवारी है।

यदि आप एक मसीही नहीं हैं तो हम चाहंगे कि आप मसीहियत के विषय में जानिये। परमेश्वर को जानिये तथा उसके पुत्र के विषय में जानें और उसमें विश्वास करें। अपने पापों से मन फिरायें, यीशु का अंगीकार करें कि वह परमेश्वर का पुत्र हैं। तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें। तब प्रभु आपको अपनी कलीसिया में मिलायेगा। (प्रेरितों 2:41-47)।

पाठ 21 | मसीही जीवन

बाइबल के पाठों की इस श्रृंखला में हम प्रश्नों तथा उनके उत्तरों को बाइबल से देख रहे हैं। अपने इस पाठ में हम मसीही जीवन के विषय में देखेंगे।

जब भी हम मसीही जीवन के विषय में बात करने जा रहे हैं तो सबसे पहिले हम यह देखना चाहेंगे कि इसका अर्थ क्या है? हम उनके विषय में बात कर रहे हैं जिन्होंने यीशु में विश्वास करके, अपने पापों से मन फिराया है, यीशु का यह अंगीकार किया है कि वह परमेश्वर का पुत्र है तथा बपतिस्मा लेकर सुसमाचार को माना है और प्रभु के द्वारा वे कलीसिया में मिलाये गये हैं। अब वे मसीही नाम से जाने जाते हैं तथा एक मसीही जीवन व्यतित कर रहे हैं और इसी मसीही जीवन के बारे में हम अपने इस पाठ में बात करेंगे।

दूसरी बात हम यह देखना चाहते हैं कि मसीही जीवन से यीशु क्या अपेक्षा करता है? मसीही बनने पर हमारा दोबारा जन्म होता है। (यूहन्ना 3:3-5)। तथा बाइबल हमें बताती है कि इस जनम के द्वारा मनुष्य एक नई सृष्टि बन जाता है। प्रेरित पौलूस कहता है, ''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई।'' (2 कुरि. 5:17)।

एक मसीही होने का अर्थ है यीशु का अनुयायी होना। यीशु ने कहा था, ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपे से इंकार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।'' (लूका 9:23)। यहां यीशु यह कह रहा है यदि हम उसके पीछे चलना चाहते हैं तब हमें बुराई से मन फिराना चाहिए, तथा अपने पर भरोसा न रखकर प्रभु पर भरोसा रखें। प्रत्येक उस वस्तु से दूर रहें जो हमारे और प्रभु के बीच रूकावट पैदा करती है तथा उसके लिये प्रतिदिन अपने जीवन को जिएं।

एक मसीही होते हुए हमें प्रभु के नाम को अपने ऊपर रखना चाहिए। हमें बताया गया है कि चेले सबसे पहिले अन्ताकिया में मसीही कहलाये। (प्रेरितों 11:26)। पौलुस ने जब अग्रिपा राजा को प्रचार किया तब उसने कहा, ''तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है।'' (प्रेरितों 26:28)। पतरस ने मसीही नाम के विषय में कहा था, ''पर यदि कोई मसीही होने के कारण दुःख पाए तो लज्जित न हो पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।'' (1 पतरस 4:16) हमें वचन बताता है कि उद्धार केवल यीशु के नाम में है।'' (प्रेरितों 4:12)। पौलूस ने कहा था, ''और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो। (कुलु. 3:17)। हम किस प्रकार से यह दावा कर सकते हैं कि हम मसीही है जबकि हम उसका नाम भी अपने ऊपर नहीं रखते? और किस प्रकार से उसका आदर कर सकते हैं जबकि हम आदर किसी और नाम को देते हैं? ऐसा होना असंभव है।

मसीही जीवन व्यतित करने के लिये हमें साफ़ और पवित्र जीवन जीने की आवश्यकता है। प्रेरित पौलूस तीतूस को लिखते हुए कहता है, ''क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रकट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है। और हमें चिताता है, कि हम अभक्ति और संसारिक अभिलषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं। और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। जिसने अपने आप को हमारे लिये दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हो। (तीतुस 2:11-15)। तीमुथियुस को लिखते हुए पौलूस कहता है, ''अपने आप को पवित्र बनाए रखना'' (1तीमु. 5:22)।

पतरस मसीहीयों को लिखता है, ''इस कारण अपनी-अपनी बुद्धि की कमर बान्धकर और सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो,

जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलने वाला है। और आज्ञाकारी बालकों की नाई अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश्य न बनो। पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो क्योंकि मैं पवित्र हूं। और जबकि तुम हे पिता, कहकर उससे प्रार्थना करते हो, जो बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ। क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप-दादों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चान्दी-सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ है। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ.....सो जबकि तुमने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन-मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। क्योंकि तुमने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।'' (1 पतरस 1:13-23)।

मसीही जीवन जीने के लिये हमें प्रभु में बढ़ना चाहिए तथा उसकी सामर्थ से अपने को मजबूत बनाना चाहिए। जबकि यीशु में हमने नया जन्म प्राप्त किया है तब हमें नये जन्में हुए बच्चे की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करनी चाहिए। प्रेरित पतरस हमें याद दिलाता है, ''नये जन्मे हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।'' (1 पतरस 2:2) जब हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं, तब हम अपने मसीही जीवन में आगे बढ़ने लगते हैं। पतरस फिर मसीहीयों को लिखते हुए कहता है, ''और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर समझ, और समझ पर संयम और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति। और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति, और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ। क्योंकि यदि यह बातें तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएं, तो तुम्हें

हमारे प्रभु यीशु मसीह के पहचानने में निकम्मे और निष्फल न होने देगी। और जिसमें यह बातें नहीं, वह अंधा है, और धुंधला देखता है, और अपने पूर्वकाली पापों से धुलकर शुद्ध होने को भूल बैठा है। इस कारण हे भाईयो, अपने बुलाए जाने, और चुन लिये जाने को सिद्ध करने का भली-भांति यत्न करते जाओ, क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे। वरन् इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में आदर के साथ प्रवेश करोगे। (2 पतरस 1:5-11)।

अच्छा मसीही जीवन जीते हुए हमें प्रभु के लिये कार्य करना है तथा प्रभु के लिये फल लाना है। पौलुस मसीहीयों को लिखता है, ''सो हे मेरे प्रिय भाईयो, दृण और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।'' (1 कुरि. 15:58)।

जब यीशु ने कलीसिया या मसीहीयों की तुलना दाख़लता और डालियों से की थी तब उसने इस बात की आवश्यकता को बताया था कि डालियां दाखलता से जुड़ी रहें तथा फल लायें। यहां देखें कि यीशु क्या कहता है, ''सच्ची दाखलता मैं हूं, और मेरा पिता किसान है। जो डाली मुझमें है, और नहीं फलती उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले। तुम तो उस वचन के कारण जो मैंने तुम से कहा है, शुद्ध हो। तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में, जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहें, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में वह बहुत फल लाता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता है, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, ओर वे जल जाती है। यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम

बहुत-सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। (यूहन्ना 15:1-8)।

यीशु ने कहा था कि उसके लोग पृथ्वी के नमक तथा जगत की ज्योति हैं। (मत्ती 5:13-15)। उसने कहा था, "उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बढ़ाई करें।" (मत्ती 5:16)।

अनन्त जीवन पाने के लिये एक मसीही को सदा प्रभु के प्रति, मृत्यु तक विश्वास योग्य बना रहना है। यीशु कहता, "प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।" (प्रकाशित 2:10)। "धन्य हैं वे, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे। (प्रकाशित 22:14)।

तीसरी बात, अन्त में हम यह देखना चाहते हैं कि क्या मसीही जीवन बिताना बहुत कठिन है? क्या यह एक बोरिंग जीवन हैं जिसमें कोई मौज-मस्ती नहीं हैं? नहीं ऐसा नहीं है। परमेश्वर हम मसीहीयों से कुछ अधिक नहीं मांग रहा है। हम आशिषित हैं, क्योंकि हम बहुत-सी ऐसी बुराईयों से बचे हुए हैं जो हमें नाश कर सकती हैं। प्रभु यीशु में हमें अनन्त जीवन प्राप्त होता है। (रोमियों 6:23)।

मसीहीयों को लिखते हुए पौलूस कहता है, "प्रभु में सदा आनन्दित रहो।" (फिलिप्पियों 4:4)।

मित्रो! मसीही जीवन के बारे में सोचिये कि यह कितना सुन्दर जीवन है। इसमें कितनी आशीषें भरी हुई हैं। यदि आप एक मसीही बनेंगे तो आप के लिये यह एक बड़ी आशिष की बात होगी।

पाठ 22 | विवाह

अपने इस पाठ में हम विवाह के विषय में कुछ देखना चाहेंगे। सबसे पहिले तो हम यह देखना चाहते हैं कि विवाह की परिभाषा क्या है? विवाह में कुछ रीति-रिवाज़ों के द्वारा एक स्त्री और पुरूष एक बंधन में बंध जाते हैं तथा वे दोनों पति-पत्नी कहलाये जाते हैं। यह सब कानूनी तरह से तथा रस्मों-रिवाज़ों के द्वारा किया जाता है। सब देशों में विवाह के अपने-अपने कानून तथा रिवाज़ होते हैं। कई लोग यह सोचते हैं कि जब तक दोनों आपस में संबंध नहीं बना लेते तब तक विवाह पूर्ण नहीं होता। हम देखते हैं कि परमेश्वर चाहता है लोग विवाह करें चाहे वे यीशु में विश्वास रखते हों या नहीं तथा यह सब अपने देश के कानून अनुसार होना चाहिए।

कई देशों में विवाह का एक जैसा नियम होता है। इस नियम के अनुसार एक लड़का तथा लड़की एक साथ रहना आरम्भ कर देते हैं, तथा कुछ समय पश्चात उनका कानून यह कहता है कि अब वे कानून के अनुसार शादी-शुदा हो गये हैं। तथा कई लोगों को यह बड़ा सरल तथा अच्छा लगता है।

दूसरी बात हम यह देखते हैं कि बाइबल के अनुसार पहिला विवाह आदम और हव्वा का हुआ था जो पहिले स्त्री-पुरूष थे। परमेश्वर ने आदम को पहिले बनाया था और उसके पश्चात उसने आदम की एक पसुली निकालकर उसकी सन्ती मांस भर दिया और परमेश्वर ने उस पसुली को जो उसने आदम मे से निकाली थी, स्त्री को बनाया (उत्पत्ति 2:21-24)। इसलिये हम कह सकते हैं कि विवाह एक बहुत पुराना सम्बंध है जिसे परमेश्वर ने आदि में बनाया था।

तीसरे स्थान पर हम यह देखते हैं कि मूसा के नियम में विवाह का क्या अर्थ था? मत्ती के 19 अध्याय में हम देखते हैं कि यीशु विवाह के विषय में बात करते हुए कुछ कहता है। यहां इस प्रकार से लिखा

हुआ है, ''जब यीशु यह बातें कह चुका, तो गलील से चला गया; और यहुदियां के देश में यरदन के पार आया। और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और उसने उन्हें वहां चंगा किया। तब फरीसी उसकी परीक्षा करने के लिये पास आकर कहने लगे, क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है? उसने उत्तर दिया, क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि जिसने उन्हें बनाया, उस ने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा कि इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे? सो वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं; इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे। उन्होंने उस से कहा, फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया, कि त्यागपपत्र देकर उसे छोड़ दें? उस ने उनसे कहा, मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी-अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी थी, परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था।'' (मत्ती 19:1-8)। अब प्रभु यहां क्या कह रहा है? वह यहां यह दिखाता है कि मूसा के नियम अनुसार लोगों से कहा गया था कि तलाक के लिये वे लिख कर दे सकते हैं और यह इसलिये कहा गया था क्योंकि उनके मन बड़े कठोर थे परन्तु आदि से ऐसा नहीं था। यानि कहने का अर्थ यह है कि आरम्भ से परमेश्वर यह चाहता था कि एक पति की केवल एक ही पत्नी हो तथा उन्हें पति-पत्नी की तरह रहना चाहिए जब तक उनमें से एक की मृत्यु न हो जाए।

चौथी बात हम यह देखते हैं कि यीशु ने तलाक तथा दोबारा विवाह करने के विषय में क्या कहा था? अब जबकि हम मत्ती के 19 अध्याय को देखते हैं वहां यीशु ने कहा था कि ''जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से, अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से ब्याह करे वह व्यभिचार करता है: और जो छोड़ी हुई से ब्याह करे वह भी व्यभिचार करता है।'' (मत्ती 19:9)। अब ध्यान दीजिये कि यीशु ने यह बात तब कही थी जब मूसा ने अपने लोगों से कहा था कि त्याग पत्र देकर उसे छोड़ दे और यह उसने उनकी मन की कठोरता के कारण कहा था। परन्तु अब वह कहता है, कि अब से यदि दो जनो ने विवाह

किया है और तलाक का कोई कारण नहीं है अर्थात् कोई भी एक दूसरे के साथ विश्वासघात नहीं कर रहा है तथा किसी प्रकार का कोई व्यभिचार नहीं हुआ है और तब भी यदि वे तलाक ले रहे हैं और तलाक के पश्चात वे विवाह करते हैं तो यह व्यभिचार हैं तथा जो उनसे विवाह करता है वो भी व्यभिचार करता है। या उनमें से कोई भी फिर से विवाह करता है तो वह व्यभिचार करता है। यदि किसी का तलाक बिना किसी वचन पर आधारित कारण से हुआ है तब वह भी विवाह नहीं कर सकता।

इस बात को जारी रखते हुए यीशु ने तलाक तथा फिर से विवाह करने का कारण दिया था और वो है यदि दूसरा व्यक्ति व्यभिचार करता है। जिसने व्यभिचार किया है उसने गलती की है और उसका साथी जिसने गलती नहीं की है वह फिर से विवाह कर सकता है। जिसने गलती की है अर्थात् व्यभिचार किया है वह फिर से विवाह नहीं कर सकता यह बाइबल की शिक्षा है। जो व्यभिचार करने वाले से विवाह करता है वह भी गलती करता है तथा वे दोनों व्यभिचार की स्थिति में रहेंगे।

पांचवी बात हम यह देखेंगे कि तलाक क्या है? यह कानूनी तरह से विवाह को समाप्त करना होता है। अर्थात् पति-पत्नी का एक-दूसरे से कानूनी रूप में अलग हो जाना। अब यह बात भी जानना आवश्यक है शायद मनुष्य की नज़र में इसे मान्यता दे दी गई है परन्तु परमेश्वर इसे मान्यता नहीं देता अर्थात परमेश्वर की नज़र में वे एक दूसरे से तभी अलग हो सकते हैं यदि उनमें कोई या दोनों विश्वासघाती हो गये है या आपस में व्यभिचार के कारण गलती कर रहे हैं।

छठवीं बात यह देखना चाहेंगे कि व्यभिचार क्या है? इस बात का अर्थ है जब एक स्त्री और पुरुष एक ऐसी स्थिति में साथ रहते हैं जिसकी परमेश्वर का वचन आज्ञा नहीं देता।

सातवीं बात हम यह देखेंगे कि यह व्यभिचारी क्या कर सकते हैं? वे व्यभिचार की स्थिति को छोड़ कर अपना मन फिरा सकते हैं। जब कोई व्यभिचार करता है तथा वह व्यभिचार की स्थिति को छोड़ भी

दे तब भी वह बाइबल अनुसार विवाह नहीं कर सकता। परन्तु क्या यह बहुत कठिन नहीं हैं? हां, परन्तु यह परमेश्वर के वचन अनुसार है। क्योंकि उसका वचन ऐसा कहता है। अधिकतर लोग इस बात को नहीं मानना चाहते। परन्तु जब कोई पाप करता है तब कई बार उसे बहुत भारी दाम चुकाना पड़ता है।

आठवें स्थान पर हम देखते हैं कि उन व्यभिचारियों का क्या होगा जिन्होंने अपना मन नहीं फिराया है? वे हमेशा के लिये अपने पाप में खो जाएंगे। व्यभिचार ऐसा पाप है जो कोई अकेला नहीं कर सकता। इसके परिणाम ऐसे होते हैं जो दूसरों को भी भुगतने पड़ते हैं। गलतियों 5:19-21 में प्रेरित पौलुस व्यभिचार को शरीर का काम कहता है और जो ऐसा करते हैं वे परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे। मसीही बनने के पश्चात् यदि कोई व्यभिचार करता है और यदि वह उस बात को छोड़ता नहीं या अपना मन नहीं फिराता तो वह स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता।

नवीं बात यह है कि यदि किसी के जीवन साथी की मृत्यु हो जाती है तब क्या होगा? तब वह व्यक्ति विवाह कर सकता है लेकिन वह ऐसे व्यक्ति से विवाह करे जो बाइबल अनुसार विवाह के योग्य है। प्रेरित पौलुस लिखता है, "जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तब तक उस पर व्यवस्था कि प्रभुता रहती है? क्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उससे बंधी है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्था से छूट गई, यहां तक कि यदि किसी दूसरे पुरुष की हो जाऐ तौ भी व्यभिचारिणी न ठहरेगी।" (रोमियों 7:2-3)। और यही बात प्रेरित पौलूस आत्मिकता के विषय में भी कहता है। वह कहता है जबकि व्यवस्था समाप्त हो गई है, तब प्रभु के लोग अर्थात उसकी कलीसिया यीशु के साथ विवाह के बंधन में बंध गये हैं। तमाम मसीही लोग आज आत्मिक रूप से यीशु से विवाहित हैं। कलीसिया अर्थात उसके लोग उसकी आत्मिक दुल्हन है। (रोमियों 7:4; इफिसियों 5:23-33)। यदि हम प्रभु की कलीसिया को छोड़कर किसी साम्प्रदायिक कलीसिया से जुड़ जाते है तब हम आत्मिक रूप में व्यभिचार करते हैं।

दसवीं बात हम यह देखना चाहते हैं कि परमेश्वर हमसे क्या चाहता है? परमेश्वर चाहता है कि हम बाइबल की आज्ञानुसार विवाह करें। एक पत्नी का एक ही पति हो तथा एक पति की एक ही पत्नी हो। तथा उन दोनों को एक दूसरे के प्रति विश्वास योग्य होना चाहिए। मृत्यु तक ईमानदार रहना चाहिए। जब तक मृत्यु उन्हें अलग न कर दे। प्रभु चाहता है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें तथा उसकी बनाई हुई कलीसिया के एक अंग बनें। और मृत्यु तक विश्वास योग्य बने रहें।

इसलिये विवाह एक बहुत सुन्दर बंधन है यानि शारीरिक रूप से भी तथा आत्मिक रूप से भी। क्या आपका विवाह हुआ है? क्या आपका विवाह यीशु से हुआ है? यदि नहीं, तो आज ही इसके विषय में विचार कीजिये।

पाठ 23 | विश्वास से गिर जाना

इस पाठ में हम परमेश्वर की उस सन्तान के विषय में देखेंगे जो अपने विश्वास से गिर गई है। अर्थात हम उनके विषय में कुछ प्रश्नों को देखेंगे जो अनुग्रह से गिर गये हैं तथा संसार में वापस चले गए हैं। हम केवल इससे सम्बन्धित प्रश्नों को ही नहीं बल्कि इनके उत्तरों को भी देखेंगे और इसके लिये परमेश्वर के वचन की ओर जाएंगे।

सबसे प्रथम यह देखेंगे कि क्या बाइबल यह सिखाती है कि जिन लोगों का नया जन्म हुआ है या जिनका उद्धार हुआ है वे पाप करके गिर सकते हैं या अपने विश्वास को छोड़ सकते हैं? आरम्भ करते हुए हम यह देखते हैं कि जब कोई व्यक्ति प्रभु यीशु में आ जाता है वह मसीह में बना रहना चाहता है अर्थात् जब वह कलीसिया का सदस्य बन जाता है तब वह मसीह के परिवार का एक अंग बन जाता है और वह ऐसे ही बन कर रहेगा। परन्तु दो ऐसे मार्ग हैं कि कोई मसीह में होकर रहे तथा प्रभु की सन्तान बनकर कलीसिया के साथ बना रहे। अब वह एक विश्वास योग्य मसीही बनकर भी रह सकता है तथा अपने विश्वास से गिर भी सकता है। यह इस उदाहरण से भी देखा जा सकता है जैसे जब कोई किसी परिवार में जन्म लेता है तब वह हमेशा उस परिवार से जुड़ जाता है। उसके माता-पिता शायद उसकी बुरी आदतों के कारण उसे छोड़ दें, परन्तु अभी भी वह उस परिवार का एक सदस्य है। इसी तरह से जब कोई प्रभु के आत्मिक परिवार में जन्म लेता है तब वह उसी परिवार का सदस्य होता है। चाहे हम कलीसिया से दूर चले जाएं परन्तु फिर भी हम उस परिवार के सदस्य है। यदि हम प्रभु के प्रति विश्वास योग्य नहीं है तब हमारा उद्धार नहीं होगा।

दूसरी बात हम यह देखना चाहेंगे कि बाइबल यह बात कहां सिखाती है? आईये बाइबल के कुछ उदाहरणों को देखें। जैसे कि हम

हनन्याह तथा सफीरा के विषय में देखते हैं कि वे दोनों कलीसिया तथा प्रभु के परिवार के सदस्य थे परन्तु उन्होंने पैसे के बारे में झूठ बोला था कि उन्होंने अपनी भूमि कितने में बेची है तथा दोनों को मृत्यु दण्ड मिला। (प्रेरितों 5:1-11)। अब आप क्या सोचते हैं कि अपने इस पाप के बाद भी क्या उनका उद्धार होगा? फिर हम एक और व्यक्ति के विषय में प्रेरितों 8:9-25 में पढ़ते हैं जिसका नाम था शमौन जिसने सुसमाचार का पालन किया था तथा और भी बहुत सारे लोगों के साथ बपतिस्मा लिया था। जब पतरस और यूहन्ना कुछ लोगों के उपर हाथ रखकर उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ देने आये ताकि वे भी आश्चर्य कर्म कर सके, परन्तु शमौन ने जब यह देखा तो उसने पैसे देकर इस सामर्थ को खरीदना चाहा और हम पढ़ते हैं "पतरस ने उससे कहा, तेरे रुपये तेरे साथ नाश हो, क्योंकि तूने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का विचार किया। इस बात में न तेरा हिस्सा है, न बांटा; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं। इसलिये अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए। क्योंकि मैं देखता हूं, कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बंधन में पड़ा है। शमौन ने उत्तर दिया, कि तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुमने कहीं, उनमें से कोई मुझ पर न आ पड़े।" (प्रेरितों 8:21-24)। अब यह देखें कि शमौन कौन था? वह परमेश्वर का बच्चा था। उसने क्या अपराध किया था? वह परमेश्वर के दान (सामर्थ) को पैसे से खरीदना चाहता था। पतरस ने इसके विषय में क्या कहा? उसने शमौन से कहा कि उसे बुराई से मन फिराना चाहिए। और यह इस बात को दिखाता है कि वह एक मसीही था अर्थात् कलीसिया का एक सदस्य।

पतरस ने उससे यह नहीं कहा था कि विश्वास और बपतिस्मा ले। परन्तु उसने उससे यह कहा कि वह मन फिराकर परमेश्वर से अपना सम्बंध ठीक करे। उसने कहा कि मेरे लिये प्रार्थना करो। उसने मन फिराया तथा अपने को ठीक किया। परन्तु यदि उसने मन न फिराया होता तो क्या वह उद्धार पा सकता था? नहीं।

प्रेरित पौलुस ने भी कहा था कि देमास ने भी मुझे छोड़ दिया है क्योंकि उसे इस संसार से अधिक प्रेम हो गया है। (2 तीमु. 4:10)। एक बार तीमोथी से भी पौलुस ने कहा था, ''हे पुत्र तीमुथियुस उन भविष्यवाणियों के अनुसार जो पहिले तेरे विषय में की गई थी, मैं यह आज्ञा सौंपता हूं, कि तू उन के अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रह और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रह, जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया। उन्हीं में से हमिनयुस और सिकन्दर हैं जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया, कि वे निन्दा करना न सीखें।'' (1 तीमु. 1:18-20)। अब क्या पौलुस जानता था कि वह क्या बात कर रहा है? वह कहता है कि इन भाईयों ने अपने विश्वास रूपी जहाज को डुबो दिया है और मैं उन्हें शैतान को सौंप रहा हूं। परन्तु शायद आप कहें कि वे अच्छे या सच्चे मसीही नहीं थे। परन्तु पौलुस को उनके विषय में मालूम था। क्योंकि वह पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित था तथा उसकी अगुवाई द्वारा उसे पता था कि वे विश्वास से गिर गये हैं। और हम देखते हैं कि वे अपनी गलत चाल छोड़कर वापस नहीं आये। वे खोए हुए थे।

तीसरी बात हम यह देखना चाहते हैं कि परमेश्वर का बच्चा क्यों वापस पाप भरे जीवन में जाएगा? अब इस बात के कई कारण हो सकते हैं। उसे शायद अपनी अभिलाषा के कारण संसार में वापस जाना पड़े। शायद वह झूठे प्रचारकों की बातों में आ जाए। हो सकता है उसे मनुष्यों की बड़ाई अच्छी लगती है। बहुत से कारण हो सकते हैं, परन्तु वास्तविकता तो यह है कि वह अनुग्रह से गिरकर उद्धार से वंचित हो सकता है। पतरस कहता है, ''और जब वे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले, और फिर उसमें फंसकर हार गए, तो उनकी पिछली दशा पहिली से भी बुरी हो गई है। क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिये इससे भला होता, कि उसे जानकर उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते, जो उन्हें सौंपी गई थी। उन पर यह कहावत ठीक बैठती है, कि ''कुत्ता अपनी छांट की ओर और धोई हुई सुअरनी

कीचड़ में लोटने के लिये फिर चली जाती है।'' (2 पतरस 2:20-22)।

चौथी बात यह देखना चाहेंगे कि जो विश्वास से गिर गये हैं उनके साथ क्या होगा? मैं सोचता हूं कि हमने यह बात बिल्कुल साफ कर दी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर की सन्तान संसार में जब वापस चली जाती है, तथा अपना मन नहीं फिराती तो वह हमेशा के लिये खो जाती है तथा मरने के पश्चात् वह आत्मा अनन्तकाल तक खो जायेगी अर्थात् उसे अनन्त उद्धार या जीवन नहीं मिलेगा। प्रभु यीशु जब वापस आयेगा, हम इसके विषय में पढ़ते हैं, ''मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्ग दूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करने वालों को इक्ट्ठा करेंगे। और उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे, वहां रोना और दांत पीसना होगा। उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य की नाई चमकेंगे, जिसके कान हो वह सुन ले।'' (मत्ती 13:41-43)। अब यह क्या ऐसा नहीं लगता कि यह लोग स्वर्ग में जा रहे हैं? वे कहां थे? वे यीशु के राज्य यानि कलीसिया में थे। परन्तु फिर भी वे खोये हुए थे, और इसलिये प्रभु ने अपने स्वर्गदूतों को उन्हें इक्ट्ठा करने के लिये भेजा था ताकि उन्हें आग में डाला जाये। जो राज्य में धर्मी लोग है उनका क्या होगा? वे प्रभु के साथ हमेशा स्वर्ग में रहेंगे।

पांचवी बात हम देखते हैं, कि किस प्रकार से कोई परमेश्वर की सन्तान को प्रभु के हाथ से छीन सकता है? ऐसा कोई नहीं कर सकता। यीशु ने कहा था, ''मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती है, और मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरे पीछे चलती है। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। मेरा पिता जिसने उन्हें मुझ को दिया है, सबसे बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।'' (यूहन्ना 10:27-29) फिर से हम देखते हैं कि परमेश्वर के बच्चों को उसके हाथ से कोई नहीं छीन सकता, परन्तु यदि वे अपनी इच्छा से जाना चाहें तब क्या होगा? यदि वे नहीं रहना चाहते तो यह उनकी इच्छा है। वह उन पर उद्धार के लिये दबाव नहीं डालेगा।

प्रेरित पौलुस ने कहा था, ''क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में हैं, अलग कर सकेगी।'' (रोमियों 8:38-39)। हां, यह सच्च है जो दूसरे नहीं कर सकते वह हम कर सकते हैं। कई लोग मसीही जीवन को छोड़कर वापस संसार में चले जाते हैं।

छठवीं बात, मैं आप से एक प्रश्न पूछना चाहता हूं: बाइबल में जो बहुत सी शर्तें दी गई हैं उनके विषय में हम क्या सोचते हैं? शायद कोई कहे कि हम गिर नहीं सकते, परन्तु पौलुस कहता है कि, ''इसलिये जो समझता है कि मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े।'' (1 कुरि. 10:12)। यीशु ने कहा था कि हमें मृत्यु तक विश्वास योग्य बने रहना है। (प्रकाशित 2:10)। बाइबल में और भी बहुत सी शर्तें दी गई हैं।

मित्रो! परमेश्वर ने अपना कार्य कर दिया है तथा हमारे लिये उद्धार का मार्ग संभव कर दिया है। और जब तक हम प्रभु की इच्छा को पूरा करते रहेंगे, तथा उसके प्रति विश्वास योग्य बनें रहेंगे तब हमारे लिये वापस जाने का कोई कारण नहीं होगा। परमेश्वर से हमें कोई छीन नहीं सकता। परन्तु फिर भी हम स्वतंत्र हैं। हम परमेश्वर की आज्ञा भी मान सकते हैं तथा उसका इंकार भी कर सकते हैं। और यदि हम परमेश्वर की सन्तान हैं तब हम यह चुनाव कर सकते हैं कि हम उसके प्रति हमेशा विश्वास योग्य बने रहेंगे। तब परमेश्वर हमारा उद्धार करेगा।

क्या आप एक मसीही है? क्या आप प्रभु के प्रति ईमानदार हैं? यदि आप मसीही नहीं है तो प्रभु में विश्वास कीजिये, अपने पापों से मन फिराये, यीशु के नाम का अंगीकार करें कि वह परमेश्वर का पुत्र है तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लीजिये। (प्रेरितों 2:37-47)।

पाठ 24 | झूठी शिक्षा

अपने बाइबल अध्ययन की इस शृंखला को जारी रखते हुए हम प्रश्नों–उत्तरों को देखेंगे और हमारा विषय होगा झूठी शिक्षा।

सबसे पहले हम यह देखेंगे कि झूठी शिक्षा क्या है? मेरा कहने का अर्थ है कोई भी ऐसी शिक्षा जो परमेश्वर के वचन के विरूद्ध है। ऐसी शिक्षा जिसे यीशु ने नहीं सिखाया है। हम यह भी कह सकते हैं कि हर एक झूठी शिक्षा के पीछे एक झूठा शिक्षक होता है। अर्थात् वे ऐसी शिक्षा देते हैं जो सत्य नहीं है। यीशु ने इसके विषय में कहा था, ''झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़ने वाले भेड़िए हैं।'' (मत्ती 7:15)

दूसरी बात यह है कि कोई क्यों झूठी शिक्षा का प्रचार करेगा? अधिकतर लोग जान बूझकर ऐसा नहीं करतें। बात यह है कि वे स्वयं धोखे में हैं तथा वहीं बातें तथा शिक्षाएं वे दूसरों को देते हैं। यीशु ने कहा था, ''सो उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। जो मुझ से, हे प्रभु हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।'' (मत्ती 7:20–22)। अब यह कौन लोग हैं? यह सब धार्मिक लोग थे। परन्तु अपनी ईमानदारी में वे गलती पर थे क्योंकि उनकी शिक्षा झूठी थी। प्रभु कहता है कि न्याय के दिन मैं उनसे कह दूंगा कि मैं तुम्हें जानता भी नहीं, मेरे पास से चले जाओ। (मत्ती 7:23)।

अब ज़रा सोचिये कि तब से लेकर अब तक कितने लोग झूठे शिक्षकों के धोखे में आ गये हैं।

तीसरी बात यह है कि आज हमारे समय में कौनसी झूठी शिक्षाएं प्रचलित हैं? वैसे शिक्षाएं तो बहुत सारी हैं जो झूठे शिक्षक फैला रहे हैं परन्तु हम कुछ ऐसी झूठी शिक्षाओं के विषय में देखेंगे जो आजकल बहुत प्रसिद्ध हैं। जैसे कि बहुत से ऐसा कहते हैं कि उद्धार बिना

बपतिस्में के सम्भव है। यह सत्य है कि केवल बपतिस्मा उद्धार नहीं करता परन्तु बाइबल कहती है कि उद्धार लेने के लिये बपतिस्मा लेना आवश्यक है। यीशु ने कहा था, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।'' (मरकुस 16:16)। यरूशलेम में एक बहुत बड़े जन समूह को सम्बोधित करते हुए पतरस ने कहा था कि, ''उन्हें उद्धार पाने के लिये मन फिराना है तथा बपतिस्मा लेना है।'' (प्रेरितों 2:38)। आगे हम देखतें हैं कि हमें यीशु में होने के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए (गलतियों 3:26–27; कुरि. 12:13)। अब बाइबल के इन पदों को देखने के पश्चात् भी क्या आपको अभी भी यह लगता है कि बपतिस्में के बिना किसी का उद्धार हो सकता है? परन्तु एक और झूठी शिक्षा जो आजकल बहुत प्रचालित है कि कलीसिया का कोई महत्व नहीं है तथा किसी भी कलीसिया से जुड़ जाओ सब ठीक है। यह बात साम्प्रदायिक कलीसियाओं के उपर तो ठीक बैठती है, परन्तु बाइबल हमें सिखाती है कि यीशु मसीह अपनी देह अर्थात् अपनी कलीसिया का उद्धारकर्त्ता है। (इफिसियों 5:25) और उसने अपनी इस कलीसिया के लिये अपना लहु बहाया ताकि अपने लोहू से इसे खरीद ले। (प्रेरितों 20:28)। अब क्या कलीसिया के विषय में यह सब सच्च होता यदि कलीसिया महत्वपूर्ण न होती? एक और शिक्षा बहुत प्रसिद्ध है और वो यह है कि स्वर्ग में जाने के बहुत से मार्ग है। वे कहते हैं कि हम अलग–अलग मार्गों पर चल रहे हैं परन्तु हम सब एक ही स्थान अर्थात स्वर्ग में जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। परन्तु बाइबल में हम पढ़ते हैं कि स्वर्ग में जाने का एकमात्र मार्ग है प्रभु यीशु (यूहन्ना 14:6)। लेकिन यह मार्ग सकरा है। (मत्ती 7:13, 14), और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। (यूहन्ना 10:1; प्रेरितों 4:12)। एक और झूठी शिक्षा जो अक्सर दी जाती है कि यीशु मसीह दोबारा पृथ्वी पर आयेगा और यरूशलेम शहर में अपना राज्य स्थापित करके एक हजार वर्षों तक राज्य करेगा। यह बात सत्य नहीं है। बाइबल की कोई भी आयत यह नहीं बताती है कि यीशु इस पृथ्वी पर वापस आयेगा। ज़रा सोचिये वह इस पृथ्वी पर क्यों

वापस आयेगा क्योंकि यहा तो लोगों ने उसका तिरस्कार कर दिया था और उसे क्रूस पर चढ़ाकर मृत्युदण्ड दे दिया था? जब यीशु वापस आयेगा वह बिना बताये अचानक आयेगा, जिस प्रकार से चोर रात में आता है, यह एक ऐसा समय होगा जब अधिकतर लोग सोच भी नहीं सकते। हम पढ़ते हैं कि वह बादलों में आयेगा, और धार्मिक लोग उससे यानि प्रभु से हवा में मिलेंगे, पृथ्वी तथा इसके सब कार्य जल कर खाक हो जाएंगे। तब न्याय का दिन होगा, दुष्ट लोगों को और जिन्होंने सुसमाचार को नहीं माना उन्हें आग के कुण्ड में डाला जायेगा और यह उनके लिये अनन्त दण्ड होगा। परन्तु धर्मी लोग प्रभु के साथ हमेशा रहेंगे। इस सबके विषय में आप बाइबल के इन पदों को पढ़ सकते हैं। (यूहन्ना 14:1-3; 1 थिस्स. 4:13-18, 2 पतरस 3:9-13; मत्ती 25:46)।

चौथी बात हम देखेंगे कि झूठे प्रचारकों को बाइबल में क्या-क्या चेतावनी दी गई हैं? प्रेरित पौलुस ने कहा था, "हे भाईयों, मैं तुमसे हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।" (1 कुरि. 1:10)। फिर रोम में मसीही लोगों को वह लिखता है कि, "अब हे भाईयो, मैं तुमसे बिनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरित जो तुम ने पाई है फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।" (रोमियों 16:17-18)।

पांचवी बात हम यह देखना चाहेंगे कि किस तरह से हम जान पाएंगे कि कोई सत्य का प्रचार कर रहा है या नहीं? यूहन्ना ने इसके लिये एक अच्छी सलाह दी थी और इस बात पर जोर देते हुए वह कहता है, "हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: बरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से है कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे, भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।" (1 यूहन्ना

4:1)। अब यूहन्ना यहां यह कह रहा है कि जब कोई प्रचारक बाइबल के विपरीत कुछ बोलता है तो हमें इसकी जांच करनी चाहिए। इसे हम कैसे कर सकते हैं? उनकी शिक्षा की जांच हम परमेश्वर के वचन से कर सकते हैं। यदि उनकी बात हमें बाइबल के विपरीत लगती हैं तब इसका अर्थ यह हुआ कि वे गलती पर है तथा गलत शिक्षा दे रहे हैं। प्रेरित पौलुस कहता है कि उसने सत्य सुसमाचार का प्रचार गलतिया के लोगों को किया था, और उसने उनसे यह भी कहा था कि तुम किसी और प्रकार के सुसमाचार की ओर अब झुक रहे हो। वह कहता है परन्तु दूसरा सुसमाचार है ही नहीं, और यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है, कोई और प्रकार का सुसमाचार सुनाता है तो स्त्रापित हो। (गलतियों 1:6-9)। मित्रो, आज संसार में बहुत सारे प्रचारक विभिन्न प्रकार के सुसमाचारों का प्रचार कर रहे हैं जो कि पौलुस द्वारा दिये गये सुसमाचार के बिलकुल विपरीत है। हम किसकी सुनेंगे? मनुष्य की या परमेश्वर की? लेकिन इस बात से क्या फरक पड़ता है? इससे हमारे उद्धार पर बहुत फ़र्क पड़ता है। झूठे प्रचारको के सुसमाचार से हमें उद्धार नहीं मिलेगा। आप मनुष्यों की शिक्षाओं को मानकर स्वर्ग में जाने की आशा नहीं कर सकते।

इसी बात को जारी रखते हुए यूहन्ना लिखता है, "जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी। यदि कोई तुम्हारे पास आएं, और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो।" (2 यूहन्ना 9-10)। प्रकाशितवाक्य 22:18-19 में हम पढ़ते हैं, "मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं, कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी है, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल दे, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिसकी चर्चा इस पुस्तक

में है, उसका भाग निकाल देगा।" (प्रकाशित 22:18-19)। सो यदि कोई व्यक्ति आपके पास आकर ऐसी बातें सिखाता है जो मसीह की शिक्षा के विपरीत हैं, या इस वचन में कुछ बढ़ाता है और इसमें से कुछ घटाता है तो वह एक झूठा प्रचारक है और वह ऐसी शिक्षाओं का प्रचार कर रहा है जो मनुष्य की आत्मा को अनन्त विनाश में ले जाएंगी।

यदि आप धार्मिक रूप से धोखा नहीं खाना चाहते, तो आप अपने नये नियम को लेकर उसका अध्ययन कीजिये। अब जबकि आपने देखा कि प्रभु आपसे क्या चाहता है, और यदि कोई आपको दूसरी प्रकार की शिक्षा देता है तो आप समझ जाएंगे कि सही क्या है। और इसलिये आप उस शिक्षा को मानने से इंकार कर सकते हैं।

याद रखिये परमेश्वर का वचन सत्य है (यूहन्ना 17:17), यही आपको बचा सकता है तथा आपको स्वर्ग में ले जा सकता है। (यूहन्ना 8:32; 14:6)।

क्या आप एक मसीही है? क्या आप उस कलीसिया के सदस्य है जिसके विषय में हम बाइबल में पढ़ते हैं? मनुष्यों द्वारा बनाई हुई कलीसियाओं में उद्धार नहीं है। केवल सत्य जानने और मानने से आपका उद्धार हो सकता है। प्रभु आपका उद्धार करेगा तथा आपको अपनी कलीसिया में मिलायेगा।

पाठ 25 | संसारिकता

अपने इस पाठ में हम संसारिकता के विषय में देखेंगे।

सबसे पहले हम यह देखना चाहेंगे कि संसारिकता क्या है? इसका अर्थ है संसार की वस्तुएं यानि सही अर्थ में कहना चाहिए संसार की बुरी वस्तुएं। कोई व्यक्ति दुनियावी तब बन जाता है जब वह संसार की बुरी वस्तुओं से जुड़ जाता है।

दूसरे स्थान पर हम यह देखते हैं कि यीशु जब इस संसार में आया तो वह क्या संसारिक था? यीशु ने इस संसार में जन्म लिया, संसार में वह रहा परन्तु कुछ समय के लिये रहा, वह इस संसार का नहीं था और न ही दुनिया में रहकर उसने कोई गलत कार्य किया। अपने समय के लोगों से यीशु ने कहा था, ''तुम नीचे के हो, मैं उपर का हूं; तुम संसार के हो मैं ऊपर का हूं; तुम संसार के हो, मैं संसार का नहीं।'' (यूहन्ना 8:23) यीशु फिर कहता है, ''मैंने तेरा वचन उन्हें पहुंचा दिया है, और संसार ने उनसे बैर किया क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं।'' (यूहन्ना 17:14)। जब यीशु को उसके शत्रुओं ने पकड़ लिया तथा उस पर झूठा मुकद्मा चलाया गया तो उसने अपने पकड़ने वालों से कहा, ''मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहुदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं है।'' (यूहन्ना 18:36)

तीसरे स्थान पर हम यह देखना चाहते हैं कि क्या यीशु के चेले संसार के थे? अपने चेलों के विषय में यीशु ने कहा था, ''यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं, वरन मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है, इसी लिये संसार तुम से बैर रखता है।'' (यूहन्ना 15:19)। अपने पिता से बात करते हुए यीशु ने अपने चेलों के लिये कहा था, ''मैंने तेरा वचन उन्हें

पहुंचा दिया है, और संसार ने उनसे बैर किया, क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं।" (यूहन्ना 17:14)।

चौथी बात यह है कि मसीहीयों के विषय में क्या कहा जा सकता है? अब जो बात चेलों के विषय में सही है वही बात मसीहीयों के विषय में भी सही है। हम इस संसार में हैं, अर्थात इस पृथ्वी पर हम संसार के लोगों के साथ रहते हैं, परन्तु हम इस संसार के लोगों के बुरे कामों में भाग नहीं लेते, हमारा पूरा प्रयत्न रहता है कि हम प्रत्येक प्रकार की बुरी बातों से दूर रहें। हम जब संसार में रहते हैं तो खाना खाते हैं, पानी पीते हैं, आराम करते हैं, सोते हैं, नौकरी पर जाते हैं, और जैसे सब लोग जीवन निर्वाह करते हैं हम भी वैसा ही करते हैं, परन्तु हम शरीर के पाप पूर्ण कार्यों से दूर रहते हैं। मसीही लोग बुराई से दूर रहने का हमेशा प्रयत्न करते है क्योंकि बाइबल की यह शिक्षा है कि सब प्रकार की बुराईयों से बचे रहो। उदाहरण के लिये मसीही लोग हत्या नहीं करते, चोरी नहीं करते, लोगों को श्राप नहीं देते, शराब या नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करते, जुआ नहीं खेलते इत्यादि। अब आप शायद कहें कि हमने तो यह देखा है कि जो अपने को मसीही कहते हैं वे तो ऐसे काम करते हैं, उनके विषय में आप क्या सोचते हैं? हां, हम उनके विषय में कह सकते हैं कि उन्होंने सही तरह से बाइबल की शिक्षाओं को ग्रहण नहीं किया है। वे अपने को संसार से दूर रखने में असफल रहे हैं। वे ऐसा करके अपने जीवन को नष्ट करते हैं। वे अपने पर तो शर्म लाते ही हैं लेकिन कलीसिया तथा प्रभु पर भी शर्म लाते हैं। ऐसे लोगों को अपने बुरे कामों से मन फिराना चाहिए तथा परमेश्वर से क्षमा मांगनी चाहिए। यीशु ने एक बार कहा था, "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है, क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह

सर्वदा बना रहेगा।'' (1 यूहन्ना 2:15-17)। यूहन्ना यहां संसार के पापपूर्ण कार्यों के विषय में बात कर रहा है जिससे कि मनुष्य का पूरा जीवन पाप से भर जाता है। वह कहता है कि यह बातें और अभिलाषाएं एक दिन मिट जाएंगे परन्तु परमेश्वर की इच्छा सर्वदा बनी रहेगी। अब जबकि यह संसार एक दिन समाप्त हो जाएगा तब अन्त में आप किसके साथ खड़े होंगे, संसार के साथ या पिता परमेश्वर के साथ?

पांचवी बात, अब प्रश्न यह है कि संसारिक बातों से हम कैसे अपने आप को अलग कर सकते हैं? इसमें कोई सन्देह नहीं और यह सच्च है कि हम पाप भरे संसार में रहते हैं और बुराई करने वाले भी हमारे आस-पास रहते है। अब इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रेरित पौलुस कहता है, ''मैंने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है कि व्यभिचारियों की संगति न करना। यह नहीं कि तुम बिल्कुल इस जगत के व्यभिचारियों, लोभियों, या अन्धेर करने वालों, या मूतिपूजकों की संगति न करो; क्योंकि इस दशा में तो तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता। मेरा कहना यह है कि यदि कोई भाई कहलाकर (मसीही कहलाकर), व्यभिचारी या लोभी, या मूर्ति पूजक या गाली देने वाला, या पियक्कड़, या अन्धेर करने वाला हो, तो उसकी संगति मत करना; वरन ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना।'' (1 कुरि. 5:9-11)। पौलुस यहां कह रहा है कि हम एक ऐसे संसार में हैं जहां व्यभिचारी, लोभी, पियक्कड़ तथा हर प्रकार के दुष्ट लोग रहते हैं, और इनसे बचने के लिये हमें इस संसार को छोड़ना पड़ेगा जिसमें हम रहते हैं परन्तु जब किसी मसीही भाई की बात होती है जो, इस प्रकार के पापों में फंसा हुआ है तब हमें उसके साथ संगति नहीं रखनी चाहिए। यानि वह यह कहने की कोशिश कर रहा है कि खाना खाते समय या उसके साथ रहते हुए हम उसकी संगति में न पायें जाएं। जब हम उससे दूर रहेंगे तब हो सकता है कि शर्म से अपना मन फिराकर वह वापस आ जाए।

छटवीं बात यह है कि इस दुनिया की बातों पर हम कैसे विजय पा सकते हैं? पौलुस ने गलतियों में मसीहीयों को लिखकर कहा था,

''परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शानित मिलती रहे। उसी ने अपने आपको हमारे पापों के लिये दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए।'' (गलतियों 1:3-4)। हम अपने आप से इस संसार पर विजय नहीं पा सकते, हमें प्रभु की सहायता की आवश्यकता है। वो प्रभु जो हमारे पापों के लिये क्रूस पर बलिदान हुआ और उसकी इच्छा को मानकर हम संसार पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। प्रेरित पौलुस इसके विषय में कहता है, ''पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।'' (गलतियों 6:14) यहां पौलुस कह रहा है कि उद्धार मुझे मेरे कारण नहीं मिला है बल्कि यह सब प्रभु यीशु के कारण हुआ है और इसलिये मैं अपने आप को संसार से अलग करने के योग्य हो सका।

सातवें स्थान पर हम यह देखते हैं कि क्या हम अच्छी तरह से यह जान सकते हैं कि यीशु मसीह का एक अनुयायी अथवा मसीही बनने के लिये एक व्यक्ति को क्या करने की आवश्यकता होती है? यह बात बिल्कुल सच है कि यीशु क्रूस पर सबके लिये बलिदान हुआ ताकि लोगों को उनके पापों से उद्धार दे सके। यदि कोई भी इस उद्धार को पाना चाहता तो उसे प्रभु में विश्वास करना चाहिए, अपने पापों से मन फिराना चाहिए, यानि बुराई को छोड़कर सही मार्ग पर आना चाहिए, और फिर प्रभु का अंगीकार करना चाहिए कि वह परमेश्वर का पुत्र है तथा फिर पानी में बपतिस्मा लेकर अपने पापों को धो देना चाहिए। (प्रेरितों 22:16)। बाइबल में इस बात को मरकुस 16:16 तथा प्रेरितों 2:38 में तथा और भी अन्य पदों में सिखाया गया है। यह करने के पश्चात प्रभु आपको अपनी एक कलीसिया में मिला देता है और आप उसकी कलीसिया या मण्डली के एक अंग बन जाते है। (प्रेरितों 2:47) तथा प्रभु में आप एक नई सृष्टि बन जाते हैं। (1 कुरि. 5:17)।

पौलुस कुलुस्से नामक स्थान पर मसीहीयों को मसीह में नये जीवन के विषय में लिखता है। वह इस प्रकार से कहता है, "सो जब तुम मसीह के साथ जिलाएं गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा साथ प्रगट किये जाओगे।" इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्तिपूजा के बराबर है। इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न मानने वालों पर पड़ता है। और तुम भी जब इन बुराईयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे। पर तुम भी इन सब को अर्थात क्रोध, बैर-भाव, निन्दा और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नये मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने लिये नया बनता जाता है।" (कुलुस्सियों 3:1-10)। हम और भी बहुत कुछ इसके विषय में कह सकते हैं परन्तु मैं सोचता हूं कि मैंने इसके बारे में बहुत कुछ कह दिया है कि संसारिकता के जीवन तथा अच्छे मसीही जीवन में क्या अन्तर है? याकूब कहता है, "हे व्यभिचारियों क्या तुम नहीं जानते, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।" (याकूब 4:4)।

मेरे मित्रो, आप एक ही समय में संसार के और परमेश्वर के मित्र बनकर नही रह सकते। एक ही समय में दोनों बातें नहीं हो सकती। दोनों प्रकार के जीवन एक साथ जीकर हम स्वर्ग में नहीं जा सकते। हमें संसार और इसके बुरे कार्यों से अपना मार्ग बदलना होगा तथा पूरे मन से परमेश्वर के साथ चलना होगा।

पाठ 26 | इसके बाद

एक और बाइबल अध्ययन हम इस श्रृंखला में करना चाहेंगे। बाइबल के कुछ प्रश्नों और उत्तरों का हमने अपने पिछले पाठों में अध्ययन किया है तथा हमारे इस अध्ययन का यह अन्तिम पाठ है। इस पाठ में हम यह देखना चाहेंगे कि अन्त में हमारा क्या होगा तथा भविष्य में हमारे साथ क्या होगा? इस पाठ में हम मृत्यु, यीशु के दोबारा आने, न्याय तथा स्वर्ग और नर्क के विषय में देखेंगे।

सबसे पहिले हम यह देखते हैं कि भविष्य में बाइबल अनुसार हमारे साथ क्या होगा? हम देखते हैं कि सबसे बड़ी और प्रथम बात यह है कि हम सबकी मृत्यु होगी और प्रभु के आने तक यदि हम जीवित होंगे तो हम बदल जाएंगे। इब्रानियों का लेखक कहता है, ‘‘मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।’’ (इब्रानियों 9:27)। मनुष्य के दो रूप हैं। उसका शरीर है परन्तु वह आत्मिक भी है। मनुष्य के भीतर एक प्राण या आत्मा है। परमेश्वर ने शारीरिक रूप से तो मनुष्य को बनाया ही है परन्तु उसके भीतर एक आत्मा भी दी है। (उत्पत्ति 2:7, 1:26, 27)। क्योंकि मनुष्य के पास आत्मा है और इसलिये वह सब जीवित प्राणियों से उपर है। और इसके आगे हम यह देखते हैं कि हमारे भीतर जो आत्मा है वह बहुत महत्वपूर्ण है और बाइबल कहती है कि संसार की सब वस्तुओं से महत्वपूर्ण हमारी आत्मा है। (मत्ती 16:26)। परन्तु हमारी शारीरिक देह एक दिन आत्मा से अलग हो जायेगी क्योंकि शरीर मृत्यु के लिये है, और इसका अर्थ यह हुआ है कि एक दिन समय आयेगा जब हमें इस शरीर को छोड़कर संसार से जाना पड़ेगा। परन्तु तब हमारी आत्मा का क्या होगा? बाइबल बताती है कि यह एक ऐसे स्थान में चली जाएगी जहां सारी आत्माएं न्याय के दिन का इन्तजार कर रही है। और इसी बात को इब्रानियों के लेखक ने 9:27 में कहा

है कि मृत्यु आयेगी और एक दिन अवश्य आयेगी और इसके पश्चात् न्याय होगा। याकूब ने लिखा था कि ''जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।'' (याकूब 2:26)। क्या हम मृत्यु से बच सकते हैं? नहीं। यह एक वास्तविकता है कि मृत्यु के पश्चात् आत्मा शरीर को छोड़कर चली जाती है।

दूसरे स्थान पर हम यह देखते हैं कि क्या हम जानते हैं या जान सकते हैं कि हमारी मृत्यु कब होगी? नहीं। हां, कुछ लोग इतने मूर्ख होते हैं कि वे अपनी जान खुद ले लेते हैं जिसे हम आत्म हत्या कहते हैं, परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि हमें किसी की हत्या नहीं करनी है। और न ही अपने आप को हानि पहुंचा कर अपने जीवन को समाप्त करना है। परमेश्वर ने यह जीवन हमें दिया है और हमें मूर्खता से इसे समाप्त नहीं करना है। यदि हम जानबूझकर ऐसा करते हैं तब हमें इसका उत्तर परमेश्वर को देना होगा। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो किसी जान लेवा बीमारी से ग्रस्त होते हैं तथा शायद वे इस वास्तविकता को भी जानते हैं कि कुछ समय में उनकी मृत्यु हो जाएगी। परन्तु विशेष बात जो हम यहां कहना चाहते हैं वह यह है कि अधिकतर लोग अपने विषय में यह नहीं जानते कि उनकी मृत्यु कब होगी? शायद कोई बुढ़ापे में आकर मरे या फिर किसी कारण से उसकी जवानी में ही मृत्यु हो जाये। विशेष बात हमें यह जानने की आवश्यकता है और जैसा कि परमेश्वर का वचन भी बताता है कि हमें परमेश्वर से मिलने के लिये अपने को तैयार करना है। अपने लोगों के लिये उसने जगह तैयार की है। यीशु ने अपने चेलों से कहा था, ''तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।'' (यूहन्ना 14:1-3)। हमारी तैयारी के विषय में प्रेरित पौलुस कहता है, ''कि अपनी प्रसन्नता के समय मैंने तेरी सुन ली और उद्धार

के दिन मैंने तेरी सहायता की, देखो अभी वह प्रसन्नता का समय है, देखो अभी वह उद्धार का दिन है।'' (2 कुरि. 6:2)

तीसरी बात हम यह देखना चाहेंगे कि बाइबल यीशु के दोबारा आने के विषय में क्या कहती है? जैसा कि हमने यूहन्ना 14:1-3 में देखा था कि यीशु ने स्वयं यह प्रतिज्ञा की थी कि वह वापस आयेगा और पौलुस ने इसके विषय में कहा था, ''और तुम्हें जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे, उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज़ से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने और सब विश्वास करने वालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा, क्योंकि तुम ने हमारी गवाही की प्रतिती की है।'' (2थिस्स. 1:7-10)। इस विषय पर आगे वह कहता है, ''हे भाईयो! हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो, ऐसा न हो, कि तुम औरों की नाई शोक करो, जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी और जो मसीह मे मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे इन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। सो इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो। (1थिस्स 4:13-18)। प्रभु के आने के दिन के विषय में प्रेरित पतरस ने कहा था, ''परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हडाहट के शब्द से जाता रहेगा,

और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के सब काम जल जाएंगे।'' (2 पतरस 3:10)। अब इस सबका क्या अर्थ है? इस सबसे यही अर्थ निकलता है कि यीशु ने कहा था वह वापस आयेगा और वह ऐसा ही करेगा। हमें यह भी बताया गया है कि वह चोर की नाई आयेगा और वास्तव में वह अचानक बिना बताये आयेगा। और ऐसे समय पर आयेगा जब हम सोच भी नहीं सकते। इसलिये बाइबल कहती है कि हमें हमेशा तैयार रहना चाहिए। हम यह भी पढ़ते हैं कि जब वह आयेगा तो बादलों में आयेगा, प्रत्येक आंख उसे देखेगी तथा धर्मी लोग हवा में उससे मिलेगे।

चौथी बात हम यह देखते हैं कि कुछ लोग यह शिक्षा देते हैं कि यीशु यरूशलेम में वापस आयेगा और वहां एक हजार वर्षो तक राज करेगा। तथा उसके लोग शान्ति से उसके साथ रहेंगे। बाइबल कहीं भी ऐसी शिक्षा नहीं देती। बल्कि बाइबल हमें बताती है कि उसके लोग बादलों में उससे मिलेंगे। पृथ्वी और इसके सब काम जल जाएंगे। तथा यह न्याय का दिन होगा।

पांचवीं बात हम यह देखना चाहते हैं कि न्याय के दिन के बारे में बाइबल क्या कहती है? जैसा कि हमने इब्रानियों 9:27 में देखा था कि एक दिन सबको मृत्यु का सामना करना पड़ेगा और उसके पश्चात् न्याय होगा। पौलुस कहता है, ''क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।'' (प्रेरितों 17:31)। यहां पौलुस बता रहा है कि परमेश्वर ने यीशु को न्यायी ठहराया है जो सब लोगों का न्याय करेगा। मसीहीयों को लिखते हुए पौलुस कहता है, ''क्योंकि अवश्य है, कि हम सबका हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किये हो पाए।'' (2 कुरि. 5:10)। फिर यीशु कहता है, ''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात् जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले

दिन में उसे दोषी ठहराएगा।'' (यूहन्ना 12:48)। इसलिये हम सबका न्याय तो अवश्य होगा और यह प्रभु यीशु के दोबारा आने पर होगा। हमारा न्याय परमेश्वर के वचन पर अधारित होगा। हमने जैसे भी कार्य किये हों चाहे अच्छे हों या बुरे हमारा न्याय अवश्य होगा।

छठवीं बात हम यह देखना चाहते हैं कि न्याय के पश्चात क्या होगा? न्याय के विषय में बात करते हुए प्रभु ने कहा था कि दुष्ट लोग अनन्त काल का दण्ड भोगेंगे तथा धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती 25:46)।

सातवीं बात यह है कि नर्क कैसा होगा? यह दुष्ट लोगों का रहने का स्थान होगा। इसे आग की झील भी कहा गया है तथा यह पीड़ा जनक स्थान है। हम यह भी जानते हैं कि शैतान भी वहां होगा (प्रकाशित 20:10)। और अन्त की बात यह है कि यह सब अनन्तकाल तक के लिये होगा। (2 थिस्स 1:9)।

आठवीं बात हमें यह समझनी चाहिए कि स्वर्ग कैसा होगा? यह परमेश्वर के लोगों के लिये एक तैयार किया हुआ स्थान होगा। जो लोग प्रभु के प्रति विश्वास योग्य बनकर रहे हैं। यीशु ने कहा था, ''धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे। (प्रकाशित 22:14)। फिर वह कहता है कि, ''प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।'' (प्रकाशित 2:10)।

अन्त में हम इस पाठ से यही सीखते हैं कि मृत्यु एक दिन अवश्य आयेगी, प्रभु वापस आयेगा, सब अपनी कब्रों से बाहर आयेंगे तथा न्याय होगा और दुष्टों को आग की झील में डाला जायेगा तथा धर्मी लोग स्वर्ग में प्रवेश करेंगे।